16761

रागप्रकाश ॥

अर्थात्

श्यामसखे की पदावली

जिसको

गोस्वामि श्री १०८ श्यामसखे
जी ने निर्माण किया

यह पुस्तक श्रीलक्ष्मीशरण रामसनेही
कनक भवन अयोध्यांजी से प्राप्त
करके सर्वगुण ग्राहकों के हितार्थ

सेठ छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द
बम्बई
बुकसेलर अयोध्याजी ने छपवाकर प्रकाशित किया
नवम्बर सन् १८९८ ई० ।
Printed at the Lucknow Printing Press.

* रागप्रकाश *

अर्थात्

श्यामसखे की पदावली ॥

देश धीमज तीताल ॥

सगुना सुवन अवध नरेश। बेगिसु
नायो पियहि संदेश॥ मति करि प्रीति

कमल सनेह । पाती ध्यान पग दुति गे-
ह ॥ लिखी सिय कमल कर सुक दीन्ह ।
सुक मन मुदित मृदु मुख लीन्ह ॥ मुख
निज कहब विनय बनाय । भूपति भूप
न्यौंति मँगाय ॥ कुमुदिनी सखिन वदन
देखाय । पूरन चन्द्र अमिय पियाय ॥
रसिक सिरोमने रसपाल । विनु रस
रास भई है बिहाल ॥ धरि जैमाल शिव
धनु टाल । चलि सखि श्याम करहु
निहाल ॥ १ ॥

चंचरीक छंद ॥

सीतापति रामचन्द्र अवध के बसै-

या। राजत निज सभा गार अगम निगम जहँ बिचार सुख मै गंभीर बचन मंद से हँसैया॥ यही दशरथ के लाल हर उर मानस मराल यही सब संतन के तात मात भैया। यही अव्यक्त रूप यही उपमा अनूप यही सब जगत जनक जनक के जमैया॥ यही सब काम देत भुक्ति मुक्ति अभिमत हेत सरण परे श्यामसखे होहु किन सहैया॥ २॥

ठुमरी जलद ताल॥

आजु दोउ सिंह खड़े हो कटि पट पीत कसीले। मिथिलापुर की सकल

बिरहिनी लखि जनु चित्र लिखे निर
खि अलकनि फटकी ले ॥ तोरि पिना-
क खड़े दोउ भैया करि करि निकर
हरे गरे जयमाल लसी ले । श्याम सखे
सिय राज कुँवर पर वारत काम घने
भूपन मद मन करि ढीले ॥३॥

भैरवी जतीताल ॥

सिय पिय आजु सरस रस भीना ।
सुफल मनोरथ भयो हमारो जोग जा-
नकी ये बर दीन्हा ॥ दरसन हित लाल-
च उरबाढ़ी भई है बिकल लखि रूप
नगीना । श्यामसखे बिरहिनि मन

मोहन बसहिं हृदय सियराम नवीना ४॥

धुनि कलंगड़ा ताल जलद ॥

दे कँगना कर बांधु तेहारो मेरे हरियाले बनरा। गूँधि लारे मालिनि फूलों दी गजरा दोंगी पेन्हावन रे हरियाले बनरा॥ श्यामसखे मोतियोंदी गजरा दृग अंजन से लगादूं कजरा हरियाले बनरा॥ ५॥

रागिनी सिंधु तालजलद ॥

बनरा हमारे जिय भावँदा सो देखो आली। चलोरी चलो मिलि देखन जये जनक भवन छविछावँदा॥ राम

बने सिर लाली रंग पगिया उर गजरा छबि लावँदा । श्यामसखे सानूं रूप लोभानी अब घर किसविधि जावँदा ॥ ६ ॥

राग सहाना ताल झालिया ॥

लावोरी मालिनि फुलोंदी गजरा। चम्पा चमेली जुही गजरा बीच बीच कलियां गुलाबी बनरा । मोतिनहार बसंती सेहरा नइ बनरी रसमाते बनरा ॥ श्याम सखे साहजादे बने को पहिराये भल पाये बनरा ॥ ७ ॥

पिलू रागिनी ताल खेमटा ॥

तूतो जादू जाने सँवलिया बाँकी तेरी नजरिया हाँरे । काहे बाँधे ढाल तरवरिया काहे बाँधे कटारिया हाँरे ॥ भौंह तेरी बाँकी कमनियाँ काहे दीन्हें कटारिया हाँरे । कड़के श्यामसखे माँ-डा जियरा चढ़के देखो अटारिया हाँरे ॥ ८ ॥

ठुमरी गौरी रागिनी जलद ताल ॥

सेहरा लीजै सुनैनाजी रानी । गूँधि गूँधि सेहरा महल लै आईं पहिरावहु सिय आदि भवानी ॥ आँगिया लाख

हजारी किनारी दीजै कर कँगनाकी निसानी। श्यामसखे जब प्रीतम मिलि हैं तब हम लेवै भली मनमानी ॥ ६ ॥

टोड़ी जतीताल ॥

बादशाह अवधके मिथिला ब्याहन आयारे। देश शहर बजार बँगला सब फीलन पर धरवायारे ॥ देवगण तान तरंग उठावत पड़ियोंदी नाच नचाया रे। श्यामसखे छवि देखन चलिये यह बनरा मन भाया रे ॥ १ ॥

झँझौटी ताल जलद ॥

सँवलिया बांका हमारा यार। बांकी

लटपट पेच सँवारे बांके घोड़े असवार ॥ बांकी जुल्फ मुसुकनि है बांकी बांके बांधे तरवार। बांकी नई बधूटी मोहै बांकी चितवनि मार ॥ श्यामसखे बांके हाथ बिकानी दशरथसुत सरदार॥११॥

पीलूके खेमटा ॥

छैलाके सिर सेहरा देखोरी। श्याम सखे सैंयां देखि लोभानी सुधि बुधि रही देहरी ॥ १२ ॥

रागिनी लूम ताल जलद ॥

रँगीला बनि आया हो रावल राज। राम बने सिर लाली रँग पगिया सुरमा

नैन लगाया हो रावलराज ॥ मनमोहनी बिंदुमसि मोहै जुलफनि लट लटकाया हो रावलराज । श्यामसखे बनरे सँग रहना अब दिल छूटे न छोड़ाया हो रावलराज़ ॥ १३ ॥

कलंगड़ा ॥

मेरा बना बांका सिपाही लैली बियाहनको जाय । मणिगण भूषण हिरोंदी कँगना अंगन बाहुँ सोहाय ॥ आये मिलन भूमिसुत मानो कवि चंच ल समुदाय । फूलनके सेहरा मुख लटकत काजर दृगन लगाय ॥ चढ़े कमान

मान मनासिज के बकमालापर आय ।
चंदन खौर रतनके कुण्डल कण्ठ विभू
षण भाय ॥ सशिपर सुधा हेतु मन-
सिज के झुके मीन मनु आय । तुरँग
नचावत सखन सिखावत बहु सरदार
देखाय ॥ बोलत देवनकी बधूरे नर
आगे नटी नचाय । दूलह निरखि सासु
महरानी आनँद उरन समाय ॥ मन
पूरण परिछावन लागी मंगल गान
सुनाय । वारि वारि पटभूषण फेंकति
आरति साजति धाय ॥ श्यामसखे
सैयां लाल बने को लै लै बलैया
अघाय ॥ १५ ॥

इमनी रागिनी जलदताल ॥

बिलमाया जियरा छैला दशरथ के सुत सांवलडा।गलि गलि विहरे मिथिला पुरकी लखि रूप ठगी सिर भारघडा। सखि साथे मनिगांथे सिर मौर धरे न यो रूप किशोर बनो बनडा॥ बिनु मोल बिकानी हम श्यामसखे संगे जाइब प्रीतम रावलडा ॥ १६ ॥

खमाइच रागिनी जतीताल ॥

बनरा आजु बनो सिर मौर। मोति न हार फुलोंदी गजरा छवि मै चंदन खौर ॥ करिकै सिंगार मंडप तर बैठो

मिथिला कियो है उजोर। श्यामसखे
जुल्फैं लटकनिपर वारत कामकरोर १७

ठुमरी जतकी॥

चलु देखु सखी तन सांवर को। सि
र मौरधरे सियको बनरो॥ श्रुति कुंडल
डोल कपोलनको। छबि नाशा मोतिन
की लहरो॥ चित खैंचिगहे मिथिलापुर
को। तिरछी चितवै दृग हे कजरो॥
बिसरे नहिं श्यामसखे जियसों। कर
कंकन सोह हिये गजरो॥१८॥

लम जलद ताल॥

नवल बनरा बनि आयाहो। पीत

बसन पिय रामलला के भूषण छायारे ॥ छोटे भाई लछिमन मधुर सखा संग दश रथ लायारे । श्यामसखे मिथिला पुर नारी लखि सुख पायारे ॥१६॥

परज रागिनी जलद ताल ॥

हो बनि आया बना अलबेला। श्यामसखे हीरोंदा गजरा बनरा बना नबेला ॥ २० ॥

कलंगड़ा ॥

आज बनरा दिल बसिगयेरे । इन न वलपिया की झमकि चाल । मुसुकनि मुरनि षंज दृग नारिन । जादूसी पढ़ि

के मुख डारिन। कनक लता छवि धाम कसौटी उर में कसि गयेरे ॥ सेहरा लट मुख पर झुकि आये बंक भौंह कजरा छवि छाये। उड़गन मानो नागिनी छौना ससि में फसिगयेरे ॥ एकै संग दियो बैठाई ललना लली लाल छवि छाई। श्यामसखे सैंया रूप बिलोकति दामिनि लसि गयेरे ॥२१॥

पिलूके खेमटा ॥

बनरा राघोजी बना बादशाह राघोजी। सिय बनरी अलबेली अली जाने श्यामसखे मेरे बादशाह राघोजी २१॥

भैरवी ॥

रघुवरलालकी सिङ्गार । केहि पट तरों आली मेरी हे कवि जग अलप उ-पमा देत ॥ विषई जीव कामिनी हेत । नहिं मन गुनत सारा सार ॥ ताहित मदन भयोहै झूंठा । कमला बसति पय निधि माँह ॥ उपमा अरध अंग रहाहिं । विधि जग सृजाति सोच अपार ॥ तपसी रूपधरी मुखचार । श्रीभू आदिलीला नारि ॥ नहिं छवि मैथिली अनुहारि ॥ सरस्वति बैठीं अरध अगार । लखि सखे श्याम बलि बलिहार ॥ २२ ॥

ठुमरी गौरी रागिनी जलद ताल ॥

हरवा लैके मलिनियां ठाढ़ी। यह हरवा मैं केहि पहिरावों दोनों सनेह भरी रस गाढ़ी॥ सिया कर कमल धरी मालिनियां सखियां सैन वचन जब काढ़ी। श्यामसखे सिय पिय रस भीने नैनन सैन मैन रस बाढ़ी॥ २२॥

गजरा ले के मलिनियां आनी। चम्पा चमेली की लैआई गजरा पहिरे रामसिया महरानी॥ देत निछावरि मनिगन माला हीरा अँगूठी हजारों निशानी। श्यामसखे नित पियत मगन

मन दम्पति वारि वारि करि पानी २३॥

तालजलद काफीके॥

सो देखो आली बनरा हमारे जिय भावँदा। चलोरी चलोरी सैंयों देखन जैये जनक भवन छबि छावँदा॥ राम बने सिर सोहत सेहरा गजरा मल भावँदा। श्यामसखे सानू रूप लोभानी अब घर किस विधि जावँदा॥ २४॥

रागिनी कलंगड़ा ताल हालिया॥

देखु सखी छबि श्याम सुँदरकी। मनि मानिक सिरमौर बिराजै रतन

मंडपतर दामिनी दमकी उर बनमाल केशरिया जामा कचकुंचित बिच नागिनि लटकी। एक से एक सखी मिथिलापुर रघुनन्दन छबि देखत अँटकीं ॥ श्यामसखे दम्पति छबि निरखत लेत लाहु लोचन हिय हरखी ॥ २५ ॥

देशरागिनी जलदताल ॥

मण्डप तर राजे हो सीता राम। रामकुमार नवल भल बनरा दुलहिनि नई ललाम ॥ मनिगन भूषन मनिगन खम्भा मनिगन गूँथे दाम। युग प्रतिबिम्ब लखावति सखिया काहे कहि

सिय पिय नाम ॥ चंद्रमुखी सभ सौज लियेकर जिनके बसि सिय श्याम। श्यामसखे लियो राम सलोना बिन गथ केर गुलाम ॥ २६ ॥

ब्याही जनकसुता रघुराई। सता-नंद सिय आनि राम पहँ मुनि बशिष्ठ विष्ठर बैठाई। वेद मंत्र दुहुँ ओर पढ़ा-वत गंगाजल कर दर्व धराई। जनक सिया लै राम समर्प्यों भरत मांडवी अर्पि सोहाई ॥ कुश धुज सुता लखन कहँ दीन्हे शत्रुसूदन श्रुति कीरति दाई। चारो बधू सहित वर बैठ दश-रथ देखि बहुत हर्षाई ॥ जनु जिय उर

धरि चारि अवस्था बिभुन सहित राज मडवाई। लखि सुख नारि मनावहिं ईसहिं जनक पुरी में जन्म सदाई॥ श्यामसखे बड़ भाग्य हमारो देखब बहु विधि चरित अघाई॥ २७॥

खमाइच रागिनी॥

पूरो आज्रु सोहाग तोहार। मिथिलापुर तिय कहत सिया जू सो राई लोन उतार॥ सुंदर श्याम दाम घन मूरति पायो प्रिय भरतार। श्यामसखे हमहूँ सँग लागब निज निज काज विसार॥ २८॥

होली मुलतानी ताल धमार॥

बनरा श्याम बने नय रसिया बनरी भल जोड़ी हो। लाले लाल बसन तन पहिरे लाल मणिन के मौरी हो॥ अबिर गुलाब भरे मुख पंकज शोभा अमित न थोरी हो। श्याम सखे नित रहस मचावति करि करि ईश नि होरी हो॥ २६॥

चंचरीक छंद॥

सीतापति रामचंद्र निरखहु किन माई। गांथेमनि मौरमाथ कंकन युत पीतहाथ राजत नृप मंडपतर सुखमा

समुदाई॥ विमला कमला कुमारि ठाढ़ी चहुँओर नारि बिहँसि बिहँसि देतनैन कज्जल रुचिराई। रानी निज महल आनि पूंछत कछु विगबानि तातगोर सांवर तन गौरे कसपाई॥ श्यामसखे रस विहाल निरखि निरखि नृपति लाल लीन्हे मन हरे जात जनक के जमाई॥ ३०॥

परज रागिनी जलद ताल॥

जुल्फवाला बना मैं पाया हो। युग युग जीवै बनरा बहादुर श्यामसखे हरियाला बनरा मैं पायाहो॥ ३१॥

लावनी ॥

रामकी कैसी जोरीहै । आजुबनी छबि धाम राम ॥ नैनरस मनसिजकी बौरी । नील सिखरपर तड़ित चंद्रमा बकपांतिमनोरीहै ॥ निरखिशारदमति भोरीहै । चंद्र बलाहक चंद्र हंस श्रेनी सिरमौरी है ॥ राम सिर मौर विराजतु है । नवग्रह उडगन सहित चंद्र मानो निवसोरीहै ॥ गहे करमें लहकौरीहै । श्यामसखे अनुराग भाग ठगि सी मति मोरी है ॥ ३२ ॥

सहाना ॥

बनेसे आज्ञु नेह लगावोरी । नए बन

रा बनरी के लायक मंगल गावोरी ॥ लैकै रंग महल में आली आस पुरावोरी ॥ सदके श्याम सखे सम जांदीं गरे गरे लावोरी ॥ ३३ ॥

पीलू रागिनी खिमटा ॥

रघुबर सारी खड़ी धरे बहियां। जाने न देहों तुम्हैं रघुनंदन नेग हमारो चहियां ॥ श्यामसखे दीजै करके मुंदरिया तबजैहो घरमहियां ॥ ३४ ॥

रघुबर पेन्हे बसंती जामा। दावन मोती किनारी लगीहैं कटि पट पीत ललामा ॥ माथे बसंतीचिरा सँवारे बैठे

जनकके धामा। श्यामसखे ऐसे प्रीतम पर वारि तरति शतकामा ॥ ३५ ॥

रघुबर काहे आये ससुररिया। कोइ सखि गावैं ताल बजावैं कोइ सखि छीने चदरिया॥ उझकनि झझकि झरोखा झांकति कोई सखि लावै कजरिया। श्यामसखे ससुरारि पियारी सरहो जी मारे नजरिया ॥ ३६ ॥

रघुबर ऐहो बहुरि ससुररियां। बार बार निवछावरि करिकै बोले बिदेह बहुरियां। सारी खड़ी पछितात निरखिये राखिये अपनी नजरियां ॥ श्याम

सखे बिरहिनि कैसे जीवै सरहोजी सौ सौ निहोरियां ॥ ३७ ॥

रघुवर सासु सँदेशा सुनैहौं। पाँचै पान पाँचै बिरवा लगै हों अपने हाथे खिलै हौं ॥ सर हो जी सो कछु लाज नहीं है उबटन आजु लगै हौं। श्याम सखे मैयां जनक लली सँग हम हूँ अव-ध सिधै हौं ॥ ३८ ॥

लछिमन बांकी हँसनि नहिं भूले। श्यामसखे घरबार न भावै मद मद माती सी झूले॥ ३९ ॥

लछिमन राजी रहौं तोरि बतियां।

श्यामसखे वह बंक बिलोकनि बिसरी नहीं सारी रतियां ॥४०॥

त्रिवन रागिनी जतीताल ॥

शाहजादे बने को हँसि हँसि नाच देखाओंगी। अतर गुलाल सुगंध मसाले नरमि उबटि नहवावोंगी ॥ जोवन जोर मदन बिरहानल सींचि सनेह जुड़ावोंगी। श्याम सखे सुनु रामपियारे दासी मैं तोरी कहावोंगी ॥ ४१ ॥

खिमटा तालझँझौटी ॥

मिथिला नगरिया तजि न्यारो रहा नहिं जाय। जब जब जन्म देहिं

बिधि मोतन तव तब यहि पुर आय॥ रानी सुनैना की जनक लड़ैती जूठन खाइ अघाय। श्यामसखे भरि जन्म गवांए सिय पिय के गुन गाय॥ ४२॥

पीलूरागिनी ताल खिमटा॥

तुँमेरा मन लियेरे जुलफवाले सँव-लिया। कौल करार किए धरि बहियां लिखि लिखि पाती दियेरे॥ नेहलगा-य छोड़ावत रसिया देखे बिना कैसे जीयेरे। श्यामसखे मांसूक सदां के खासी खवासी कीयेरे॥ ४३॥

तालरुद्रगारा रागिनी ॥

चलु एरी बलम चोरी से। मिलि येसो राज किसोरी से ॥ छबिलीजे रघु बर सांवर की। चरचा चलै एभांवँर की ॥ मिथिला नगर नर नारी की। रस कीन्ही सरहो जी सारी की ॥ चहुँ ओर लीए कर झारी की। बिच लाल विदेह कुमारी की ॥ ससुरारि की पाठ पढ़ावोंगी। हमहूं कछुचौल सुनावों गी। मिलि लालन गेंद उड़ावों संग श्यामसखे सुख पावोंगी ॥४४॥

झँझौटी सुरताल जलद ॥

सोहागिनी सासुर सुख जाउँ। नि-

त्य निबाहि छली सो बिंजन अपने हाथ बनाय ॥ राम जेंवाय बापन खिलायब बेनियां देव डोलाय । सासु ससुर मनकी रुचि राखब देवरते मृदु बैन ॥ जेठ छोट कुलकी मरजादा स्वामीनि रेख बनैन । यह अधिकार न औरहि सौंपब सुंदरि सिखवन मोर ॥ बिबिधि भांति हम भार पठायब चातृक हंस चकोर । पितु घर कबहिं कबहिं ससुरारी दुहुं घर रहब सुखेन ॥ श्यामसखे फिरि लखन आई है राम आई है लेन ॥ ४५ ॥

होरीदेश रागिनी जलद ताल ॥

चलु देखिये मिथिला में जहँ मची

लाल रंग होरी। सब झुंड झुंड मिलि आई॥ जहँ जनक भवन अंगनाई। ता-रा की जैसी जोतें सब रंग रंग में बोरी रंग केशर भरि पिचकारी। लीन्हे कर जनक दुलारी॥ ललकारि कहे सब नारी। लाला सिर पाग रँगोरी सखे श्याम पकड़ि जो पाऊँ॥ हाहा करि नांच नचाऊँ। फगुआ हमारो दीजो॥ कहे जनक लली जी की अलियां ४६॥

सुरइमनी तालजलद॥

कबतो लाल ऐहो यहि नगरैं। मुख मयंक तन ताप हरोगे फिरि फिरि श्री

मिथिलापुर डगरैं ॥ लाज बचाइ तुम्हैं पिय देखन हमहूँ ऐहों धरि सिर गगरैं। श्यामसखे मोसे विसरत नाहीं जुलफनि की अट पट लट बगरैं ॥ ४६ ॥

सहाना ताल खिमटा ॥

देखु सखी सिया कैसी सलोनी। होत कुतोहल अवध नगर में कोटिन भानु चंद्र छवि छोनी॥ लैकर गोद सासु सब बैठीं छवि निरखत ललना छवि लोनी। श्यामसखे आई पुरवासी मधुर मधुरं स्वर गावति बैनी॥ ४७॥

सोरठ रागिनी खिमटा ताल ॥

सजनी सुनु सिया दुलहिनि घर

आई । करि आरति निज सासु सिया की मनि मंदिर लै आई ॥ हीरा लाल निवछावरि करिकै बहु विधिं रतन लु- टाई । श्यामसखे ऐसे दुलहिनि पर वारति त्रिभुवन ताई ॥ ४८ ॥

झँझौटी तालजलद ॥

देखोरी छबि आजु सिया जु महरा- नी की । अधर अरुन मुख शशि दुति निंदति बेसर लट लटकानी की ॥ पी- ताम्बर सिर लसत चन्द्रिका श्यामसखे वरदानी की ॥ ४६ ॥

त्रिवन रागिनी जतीताल ॥

चिरे वाले लला को चलो सखि नेहँ

लगावौं गी । श्री मिथिलेश लली जी
की भेजी बँगला पान खिलावौं गी ॥
नेह सुधा छवि राखि कटोरे नैनो से
घोरि पिलावौं गी। श्यामसखे ऐसे रा-
म बनेको सीनै के साथ बसावौं गी ॥

सोरठ ॥

बनरे सँवलियारे हमहूँ चलब तोरे
साथ । पैंयां परि परि कहति अनंता
धरि पियकंकन हाथ । विमला सहि-
त बिहार करायब सुनु रसिया सिय
नाथ । श्यामसखे तोरे महल टहल
करि निसुदिन रहब सनाथ ॥ ५१ ॥

खिमटा तालझँझौटी ॥

दशरथ के ललवा मन लीन्हो हमा-
रो जाय। घायलकरि मिथिलापुर नारी
बांकी सी नयना घुमाय ॥ मृदु मुसु-
कानि टरत छवि नाहीं लाली रही दृग
छाय। श्यामसखे मन रोकिये कैसे
जुलफनि लटक बचाय ॥ ५२ ॥

लीला ॥

धनाश्री ताल जलद ॥

देखि नगर पशु धरत सम्हारे। शोक
समुद्र सुमंत खेवैया बिरह जहाज कठो
त विचारे ॥ केकइ बचन भँवर भयदा

यक रघुवर मनयव मान पियारे। ज्ञान
विराग योग जप सदगुन पथिक राम
सिय मुनिजन भारे॥ तरल तरंग त्रिवि
धि दुख जन मन रघुपति कृपा दक्षिन
दिशि ठाढ़े। श्याम सखे लै विरह मजू
री सचिव जननि कर कर दै डारे॥५२॥
सिय पिय विरह कहत कोइ आई।
अवधराज हित निज नैहर तें भरत
मातु मगवाई॥ भरत वियोग बिछोह
वसीष्टी ताप निशान धराई। सखी दवा
रि नकीव ध्यान ह्वै निम फौज रहे
छाई॥ जप तप संजम चारु चंदोवानि
वसन तेग बनाई। छवि शृंगार मृगाबन

त्यागे नृप के हरि धरि पाई॥ सुख आनन्द जानि निज वैरी बांधेउ जतन कराई। श्यामसखे रघुवर बिनु भामिनि फेरत विरह दोहाई॥ ५३॥

रागिनीमारू॥

अब रथ फेरि हों हम जाय। बालापन के हित हमारे रामलखन सदांय॥ वाते जो जो भई हम से देब सुरति जनाय। हमहिं देखि कृपाल कोमल तुरत मिलि हैं धाय॥ जानकी हमरी सनेही प्रेम पूरन ताय। करब कोटि उपाय फेर न लाल धरि धरि पाय॥ चलहु

दश विश अवध नागरि शोक लोक विहाय। बचन श्यामसखे न मानव हमहुँ बनहिं सिधाय ॥ ५४ ॥

लूमतालपोस्तो ॥

पूँछति नगर नारि गौर श्याम कौन हैं। रूपके सदन जैसे देहँवीच पौनहैं ॥ मिथिला बिआहे आए धनुष खंडनहैं। भारी भारी भूपनिके गरभ कंदनहैं ॥ चित्तके हरैया पति सांवरे बरनहैं। गोरगात मुसुकात देवर लषणहैं ॥ राखो सिया श्यामसखे तोहरी सरनहैं ॥ ५५ ॥

दोहा ॥

चित्रकूट चलुहेसखी फटकासिला

के ओर । श्यामसखे निज सखिनले
बिहरे राजकिशोर ॥ १ ॥ चित्रकूट चम्प-
क लता चामी करतरु छांह । चन्द्रकला
विहरे धरे श्यामसखे गलबांह ॥ २ ॥ चित्र-
कूट कलिकाम तरु काम कामता देत ।
राम धामदा सेइये श्यामसखे यहि
हेत ॥ ३ ॥ चित्रकूट बनबागमें चारिभुजा
ब्रह्मेस । श्यामसखे सखि रूपधरि सेवहिं
राम नरेस ॥ ४ ॥

देशरागिनी धीमताल ॥

जानकी जब राम पुकारं । सून वि-
लोकि राम लछिमन बिनु जाता रूप

सवारं॥ रेषलंघाय उठाइ चढ़ाया दश-
शिर लंक सिधारं। रिष मुख पर्वत पर
बैठे कर सुग्रीव विचारं॥ हाय राम हरि-
लिये जात कोइ सिय दीन्हे पटडारं।
इहां राम सियकानहिं देखा व्याकुल
भये अपारं॥ ढूढ़त विपिनि सिया कहिं
कहिं कितगइ प्रान पियारं। कियो ज-
टाईं युद्ध सियालगि विकल भए तन-
हारं॥ श्यामसखे करि क्रिया जनकसम
तव वैकुंठ सिधारं॥ ५६॥

जोगियारागिनी जलदताल॥

पथिक दोउ आजु आवैंगे। छन

आंगन छन चहुँदिशि ताकति जो
हति हरिजि की वटिया आजु आवैंगे ॥
टूटल बसन फल गिरत सँभारति छन
क हँसति फल चाषिया राम पावैंगे॥श्या-
मसखे निरखति रघुनंदन तरिवर वोट
छपायें वेगि धावैंगे ॥ ५७ ॥

चंचरी कछंद ॥

सीतापति रामचन्द्र मेरे घर आये
भिल्लिनि अति जाति छोट जन्म
कोटि पाप मोट मेटे त्रैताप पाप दरसन
जब पाये ॥ विजन छत्तीस जोग त्यागे
रसुलोक भाग मेरे सोइ दीनबंधु जूँठ

फल खाये। सो हम अतिसै पुनीत कीन्हे सब लोक जीति धन्य तात भ्रात नात जननी जिन्ह जाये॥ दीनबंधु अस उदार कोई नहीं संसार श्याम सखे अधम जानि टहलिनि अपनाये ५८

देशरागिनी॥

सिय बिछुरन पिय बावरे मन में पछताई हो। लाज गँवाइ आपनी यद्यपि संग भाई हो॥ पूँछत रघुबर द्रुमलता मधुकर खग श्रेनी हो। तुम देखे सिय भामिनी गूँने सिर वेंदी हो॥ हे कदली अरजुन लता हे पनस तमाला हो।

तुम नयनन देखे कहीं सुंदरी तन वाला हो ॥ समुझत नाहिं मन बावरा कोइ मोहिं समुझावो हो । वदन श्रामत खँसि खँसि परे धरि हाथ उठावो हो ॥ झामो से कछु होई परी जाते दुष पाइ हो । तुमहूं सब गहे निठुरता नाहिं देत देखाई हो ॥ पाय परो हां हां करों छाड़ो रिस भारी हो । माफ करो श्री मैथिली कछु चूक हमारीहो ॥ अधर बिम्ब की लालीमां बोलनि मधुराईहो ॥ आह दैव भूले नहीं मोहि लखि मुसुकाई हो । छन यक बिछुरन होत में युग सम चलि जाई हो ॥ कैसे बितौहौं

सांवली मोहि बिनु सारी राती हो ।
बन देवी बोली गिरा पोंछति जल नैना
हो ॥ हम देखी सिय सांवली करिये
चित चैनाहो । तिय मानि पिय मन
बिछुरनो कैसै सहि जाई हो ॥ वेगि
देखा दे चंद्रमा पिवों अधर सुधाई हो ।
जीवन सी तोरी बचन है सखि बलि
बलि जाई हो ॥ श्याम सखे तोको वारि
हौं त्रिभुवन प्रभुताई हो ॥ ५१ ॥

धनाश्री रागिनी जलदताल ॥

कपिपति विनती करबहजूर । जरत
रहेउँ त्रयताप त्रिगुन महँ लषि आयउ

जलपूर ॥ नाम विभीषन रावण भ्राता सब विधि गुनगन कूर। श्यामसखे धनि भाग्यहमारो परसब निजपगधूर ६० ॥

पियसन सनमुख करब धमार। त्रि-कुटी शर महँ जाइ नहायब लै पांचोप निहार॥होत अपन सब सपन चरषवाद सबिस करब बिगार ॥ श्यामसखे सिय रामकमलपदानितानितकरबाविहार ६१

भैरवी के ठुमरी ॥

जबही हरि साँरँगधारं। प्रथमं टकोर घोर सुनि निश्चर वधिर भये यक वारं ॥ दल मलि दलित लंक महराने

प्रतिमा श्रवहिं अपारं। अंचलरोपि मंदो
दरि रानी विनय करति बहुवारं॥
जौं पतिकहा मोर तुम मानो रह अहि
वात हमारं। शादर सियको चढ़ाय
पालकी तुम उर मेलि कुठारं॥ भेंटत
तुमहिं अभै करि दैहैं कोमल चित्त उ-
दारं। इतना सुनि दशभाल रिसान्यो
नारि शुभाव तुम्हारं॥ कहं एक माथम
नुज मोहिंमारे धृग जीवन संसारं।
देखी बीर तुम्हारी हमौ कछु विदित
भुवन दश चारं॥ जब बलि बांधि सहस
भुज मारे खोरी नारि निकारं। कहँ
लगि कहौं राम प्रभुताई तुंअघ अजस

अपारं।। श्यामसखे भलमोर सिखावन सरन गये निस्तारं ॥ ६२ ॥

दशमीतिथिको भीमपलाश राग जलदताल ॥

आजु छुटे तोप तुपक जल उछले गिरि न घिहराई । सुर कन्या सखि सखा सहित द्विज मुदित जवारि चढ़ाई ॥ श्यामसखे आनंद विजै तिथि भक्ति निबछावरि पाई ॥ ६३ ॥

हमीर रागिनी जलदताल ॥

शुभघरी दशमी दिन आई । बैठे तखत राम सिय साथे विप्रन मंगल कलश पुजाई ॥ लै फल फूल जवारि सबै

मिलि ब्रह्मा चौमुख वेद सुनाई। श्याम सखे मुनिराज असीसत देव गगन फूलन बरसाई॥ ६४॥

रागिनीभीमपलाशतालजलद॥

आजु बिजै आनंद सोहाई। बैठे तखत राम सिय सोहत सुरन निसान बजाई॥ छूटे तोप तुपक जल उछले गिरिन गिरे घहराई। सुर कन्या सखि सखा सहित द्विज मुदित जवारि चढ़ाई॥ श्यामसखे आनंद बिजै तिथि भक्ति निवछावरि पाई॥ ६५

हरषि सुख लीजै राम छबि को।

आजु विजै आनंद घरी में बैठे युगल फवी को ॥ रघुबंसी चहुँ दिशि ते चम कत ग्रह गन बीज मानो तेज रवी को। श्याम सखे सुख क्योंकरि बरनो सकत न सेस कवी को ॥ ६६ ॥

धुर्पद चारिताल ॥

बादशाह प्रीथि नाथ जगत नरेश माथ बैठे तखत पर गुनि जन गावैरी। कहे बाबा श्याम सखे सुनिये अवधपति चिरंजीवो दिन दिन अगम जना. वैरी ॥ ६७ ॥

छरागछत्तीसो रागिनीका रागमाला ॥

कवित्त ॥

बैठे नरेश राम तखत सिय बाम अंग भैरवी जी गावत रिझावत सुर तानकी। भूषन बनाइ साज सुरुष रंगाइ आई भैरवी जी गाइ रीझेसकल सभा प्रान की ॥ गावै गुन कली रंग सबुज पोसाक अंग पियरी रंग साजै गावै टोडी गुनवान की। श्यामसखे गुर्जरी गुलाबी सेत रामकली रीझे रघुनाथ हाथ बीड़ा दीन्ही पानकी ॥ ६८ ॥

मेरे मन बसिगये रामचन्द्र। राजी

व नैन आनंद कंद ॥ सीता सहित सिंहासन राजित चमरछत्र कर भरत शत्रुहन। हनुमत नारद शनक सनंदन श्यामसखे गावत सुर छंद ॥ ६९ ॥

अथ रामऽष्टकं ॥

रसि केसर रूप मुदारवरं। जन कात्मज यासह सौम्यधरं॥ कमला विमला सखि भीर मुदितं। प्रणमामि सदा अव धेशसुतं॥ वर मंडित मंजुलता ललितं। वरहंस मुखाङ्गलितं चलितं। विरहंती निकुंजना जोगयुतं प्रणमामिसदा अव धेस सुतं। तिलकावलि भाल मतीय

धरं । अलकावलि कुंचित नीलतरं ॥ कर कंज धनूशर चारु धरं । प्रणमामि सदा अवधेशसुतं ॥ मंदाकिनि चित्र गिरौ बिमलं । अपिनित्य रहस्य विहार थलं ॥ सुख निर्झरवारि बहार थलं । प्रणमामि सदा अवधेस सुतं ॥ मुखचंद्र वरस्य वरस्य वरं । ब्रह्मेस रमेस सुरेस परं । निज सेवक मानस हंस गतम् ॥ प्रणमामि सदा अवधेस सुतं ॥ रघुवंस पयोनिधि ताम रसं । सर्बा परिमीश्वर मेंकरसं ॥ कलिकामद नाम महारवरं । प्रणमामि सदाअवधेससुतं ।परमाद्भुत जानकी वाम युतं ॥ मम मानस राज

मराल सुतं। निवसंत अहर्निसी शुद्ध प्रदं॥ प्रणमामि सदा अवधेस सुतं। इति सम्वत बायुसुतं प्रददं॥ जन श्याम सखा रचितं फलदं। मन पूरन काम करं शुभदं॥ प्रणमामि सदा अवधेस सुतं॥ ७०॥

नारदगौरी राग जलदताल॥

देखो माई रघुनंदन छबि अति नीकी। उपवन मध्य बाग दोउ बैठे खेलत चौपड़ ठीकी॥ मधुरसखा पिय ओर जितावत थेई थेई करत भईकी। जब सिय ओर दांव सखि जितैं विहसे

ताल सही की ॥ खेलत खेल सांझ जब जानेकनकमहल चलबे की। श्यामसखे सिय जीति भई है पिय बाजी भइ फीकी ॥ ७१ ॥

विष्णुपद झझौताल त्यौरा ॥

सब जगत बल करि काकरे जब राम जी बल करैं। चलु देखु प्यारे जनकपुर अगनित नृपति जहंसरे ॥ रघुवीर भुज बल देखिये दुइखंड शिवधनुधरे। तहँ आए भौंह चढ़ाय के प्रसराम फरसा धरे ॥ रघुबीर चरन मनाइ के तपहेतु बन पगुधरे। मन देखु दंडक विपिन में

त्रिसिरादि वल करिलरे ॥ चौदह सहस दल निमिषि में प्रभु एक सरते हरे । मन देखु दसमुख कठिन जोधा जीति नाहिं कोउपरे ॥ परिवार जुत संघारिके राजा विभीषन करे । मन देखु कहंलगि कहौं महिमां अमित खल उद्धरे । समरत्थ रघुबर जानिके श्यामसखे चरननि परे ॥ ७२ ॥

गायो जुहिंडार जाके हरितपोशाक अंग संगमें बसंती सो बसंत रितु आई हैं । बैंगनी की सारी बेलावली पहिरि गावैं ललित लाल पीरी पहिराइ सर साई हैं ॥ अम्बर से अम्बर देशाख

आछे रूप साजे पंचरंग पोसाक पंचमीं के तन छाईहैं। नायकीके द्वारा काफी ढक्कनाद श्यालसखे रीझे हनुमानताके मानिगन देवाई हैं ॥ ७३ ॥

उगो मानो भानु पंच दीप सिखा प्रगट भयो राति दिन होत भयो दीपक जब गायो है। पहिरे गुलाबीहार गावै धनासीरी नारि पीरी पोसाक मुलतानी ने सजायोहै ॥ धूमें रंग अंग में उमंगहोके नटी नाचे पहिरे असमानी जत सीरी में रिझायोहै। श्याम सखे स्यामरंग भीमपलाश विमल गला

गायो रिझायो माल मोतिनके पायो है ॥ ७४ ॥

कनक वसन कनक रंग सीरी राग गावतहै मेघ दुति मालवी सुनायो सारी रागताल त्रिवन पोशाक काछे आछे सेत पीत अरुन सुंदर सरूप गौरी गावै सुरमैंरसाल । पूरवी पुरानी नारि गावै काली पहिरि ऊदेरंग बोर बसन टौगी रस में बिहाल ॥ इमनी औ सोरठी खवासी खासी श्यामसखे रिझे रिपु दवन लाल मेलदई अंकमाल ॥ ७५ ॥

मेघके सरूपमानो मेघ मलार गायो छपे चंद सोरठी के बसन सोभा पावतो

सारंग दुपहरिया रंग भूषन औ वसन
साजे पीयरी पोसाक मधुमाधवी लजा-
वती॥ लाल वसन धारे अलापति मलारी
नारि श्याम सेत चीर बड़हंसी जना-
वती। श्यामसखे देव सभा राजसभा
वाह वाही हरषे शिव बानी देव फूलन
बरसावती॥ ७८॥

मालकौश सुरुख साजे सुंदर अला
पत हैं संग में वागेश्वरी जी सेतवसन
कामजी। खुशी होके गावति खंभावति
कलावती परज पोशाक पीत धारे गुन
धामजी॥ सोहनी मोहनी सुरुख रंग बा
वरी जी चंद्रमा पोशाक कुकुभान पेन्हे

दामजी । संग में विहाग राग लंगरा है श्यामसखे रीझे तीनो भाई तापेबीड़ा दीन्ही रामजी ॥७७॥

ठुमरी इमनी रागिनी के धुनि ताल जलद ॥

रघुवरछांडुहोलड़िकइयां । लड़िकइ यां गति हम तुम जाने अबवह बातैं नाहिं यां ॥ पुरजन परिजनको जगनातो लाज बचावन चहियां। श्यामसखे जो अब तुम चाहो चलिये कुंजन महियां ॥७८॥

रघुबर आवोगी अमरैयां । आखं ब-चाइ सासु ननँदी को बोधि सुवन अंगनैं यां ॥ आइब तुमहुं सिकार सवारी रहत

अनेक चिरैयां। श्यामसखे पिछिली सुधि करिकै खेलैंगी लरिकैयां॥ ७६॥

रघुबर मोसे बिसरिहो नहियां। चां दनि रात सात जब बीते आ जैहौं बट बहियां॥ सासु ननँद डर उर नहिं धरिहों गारी बालमु सहियां। श्यामसखे सरजू घन गनियां नचिहौं धरि गरे बहियां॥ ८०॥

रघुबर कैसे बिसरिहो बतियां। कब तो होय सांझ घरवाली मेरी तो लागि सुरतियां॥ नदिया तीर भई जो बातैं रसबस भीजी मतियां। श्यामसखे सैयां श्यामसलोने ताकोंलगैहौंछतियां॥ ८१॥

रघुबर ऐसे बितैहों रतियां। चांदनि छपे बदलि गए तारे बोलत रसकी बतियां॥ तुमसे अधिक ब्यथाहै हमको तुमहीं जानत गतियां। श्यामसखे सैयां पीर मिटादे कड़कन लागीं छतियां॥ ८२॥

रघुबर कैसे बनैगी यारी। नैहर प्रेम लगी बहु तुमसे अब जैहों ससुरारी। जब जब तुम जैहो घन गाछियां औघट घट फुलवारी॥ श्यामसखे नहिं नेह छोड़ैहों राखब सुरति हमारी॥ ८३॥

रघुबर नयना लगि रतनारी। ल-ड़िकैयां बिनु होस गवायों अब नहिंस-

कत सँभारी॥ गौने आज कालहलौं जै
हौं सुनिये अरज हमारी। श्यामसखे दुइ
कमल निशानी लीजे हाथपसारी ८४॥

रघुबर बोली लगति अति प्यारी।
तेरी बोल मोल मन लीन्हे बसकीन्हे
नइनारी॥ करत बेहाल नयन के सुरमां
बांकी भौंह निहारी। श्यामसखे सैयां
पान खिलादे राखिले मान हमारी ८५॥

रघुबर आए नवल बनिनारी। करि
सिंगार सुघर वनिताकी सिरपरगागरि
भारी। बीते रात कहत घर घरमें ल्यौ
जल पिय निहारी॥ श्यामसखे सैयां

रसिक बहादुर करत बिहार बिहारी ८६

रघुबर तोसों कहों छलछोरी। आई न रात बात भई हमसे बालम जानि गयोरी॥ साहित सखा सरजू तट आएब सुनिये लाल निहोरी। श्यामसखे तुम से लगी प्यारी विधना बातरचोरी ८७॥

रघुबर मोंसे बनैगो तोसे। उत्तम कर्म धर्म जहं लगिहैं अबना बनैगो मोसे॥ एक अधार सरूप तेहारो ध्यान धरों हिरदोंसे॥ श्यामसखे की सकल कुटिलता माफ करो बिन होसे॥ ८८॥

झँझौटी जलदताल॥

दृगन बिचछाय रहो राघोजी के नैन। लाली निरखि छकी मन आली सब तनमें मद फैलि रहो॥ श्याम क-रत घायल निसुवासर सीतल सिसिर दै रहो। श्यामसखे बांकी चितवनियां पर हूँ बिनु मोल बिकै रहो॥ ८६॥

रामगुमानी भुलानी छवि देखिकै। चितचंचल नित लगोई रहतुहैं जुल-फनि लट लट कानोंकी॥ छुटिगइ घर डर सासुननँद की छुटिगइ निज कुल कानोंकी॥ श्यामसखे बिसरत नहीं

सजनी कुंडल कच अरुझानी की ९०।

रघुबर यार हमारी गली आजाहो।
मन सिज मीन लजावनि हारे माधुरि
रूप देखाजाहो॥ मधुर सखी विरहनि
रसमाती रसमें खेल खेलाजा हो।
श्यामसखे सरजू घन कुंजै मिठी सी
तान सुनाजा हो॥ ९१॥

चितचोरे प्यारे राघो की रसीली
बतियां। टेढी भौंह जुल्फ पर टोपी
निरखत भूलि गई मतियां॥ नाहिंभावै
घरको सुख संपति नाहिं भावै पिय सँग
रतियां। श्यामसखे दिनराति सैंया को

असमन होइ लगावों छतियां ॥ ६२ ॥

देशरागिनी जलदताल ॥

हमारे मन श्याम से भई राजी। जबदेखी अपने पतिको मुख जगपति से नाहिं काजी ॥ सिखवत हौं निसु-दिन अँखियनको तजि दे रे जग लाजी। श्यामसखे जीतों की हारों तनमन धरि दियो बाजी ॥ ६३ ॥

हमारे मन सियवर के रसरंगी। जबसे सियबरके रस राती तबसे भई चितचंगी ॥ घसनि फुलेल हँसनि जुवती सँग फीको लागति संगी। श्याम-

सखे बिनुदेखे माधुरी जौबन जात उमँगी ॥ ६४ ॥

हमारे मन सियवर से मन रसा। छबि की सीवँ सिया अलबेली घनदा·मिनी जनुकसा ॥ कटिपट पीत धरे बैजंती पदिक हार उरलसा। जनुघन बीचकी रचत पलावलि आलिगन रस में फसा ॥ ऐसे रूप बिसारि बादिही बिषरस में नितधसा। श्यामसखे मन देखि बिमुखता जम किंकर अति हंसा ॥ ६५ ॥

रसिक पिय·देखुरे तरुतरे। सुर तरि·वर तरतनेव चँदोवा मोतियन झालरि

मरे ॥ चंद्रकला सखि विजन डोला-
वति मणिमय दीपक बरे। अतर गुला-
बन केर फुहारे चहुँदिशि फुही परे ॥
झीने बसन मलयतन लेपे कछु कछु
भूषण धरे। श्यामसखे फूलनके गजरा
कोन निरखि मन हरे ॥ ९६ ॥

देश रागिनी धीमताल ॥

मदनमद छाके तेरे नैन। सुनोजी
रसिया रंगीले श्यामा हो ॥ जुलफनि
मुरनि नैन सुरमा से रहत डेराने मैन।
छूटी रसबस ग्रामबधू की बालमु के
घर सैन। श्यामसखे सुनु राम रँगीले
बिनु देखे नाहिं चैन ॥ ९७ ॥

जलदताल सोरठ के ॥

मेरो मन राघोजीने मोल लियोसो । टोपी जाल भाल बिच बेंदी छतियां साल दियो सो । बीड़ी खात सखिन मुसुकावत सुरमा खौंचि कियो सो ॥ श्यामसखे तेरो घर के दासी जूठन खाइ जियोंसो ॥ ६८ ॥

ठुमरी झँझौटी ताल हालिया ॥

बसिभई बिरहिनी बावरिया पियढूं- ढ़त कानन कानन में। सखिबन प्रमोद के कुंजलता छिटकी शशि चानन चा- ननमें ॥ सखि बैर परी मोहिं वा दिन

की रसखान की तानन ताननमें । सब खेंचि मगावत अवध अली विरही दृग बानन बाननमें ॥ मन मोहि लियो मोरी श्यामसखे छबि चन्द्रकलानन आनन में ॥ ६६ ॥

निरदई श्याम से नैनलगी जल भरन भूलिगई गागरिया । टेढ़ी शिर पाग लटैं बगरैं तन साँवर गावत राग रिया ॥ मोहिदेखि भभूत चलाइ दिया तबसे चित चैन न नागरिया । इत छैलके छौ रस ते न छकी भारी डर है उत सासुरिया । इतहूँ से गईं उतहूँ से गईं बदनामी लईं शिरसागरिया ॥

पिय नेह के कारन छांड़ि दियो सारे घर लाज उजागरिया । बदनामी उठाइ के श्यामसखे रसिया से मिली गरे लागरिया ॥ १०० ॥

पनिघट पर हमको मोहि लई दशरथ के प्यारे सांवलिया । जलभरतधरत कटिकरकि गई भरेखत सारी सरकिगई निरखतछबि घूंघुटउघरि गई चितचंचल ज्यों भई बावरिया ॥ फिर सँभरत धरि धरि शीशघड़ा मनमोहन बालम नजरपड़ा दृगलागत चौगुन चाहबढ़ा सुधिभूलिगई घरगांवरिया । धरि खींचि लई पियपीत पटा मानो

दामिनिके संग मेघ घटा बिनुमोल बिकी हमश्यामसखे पियके सँग दीन्ही भांवरिया ॥ १०१ ॥

बड़ाताल सिंधुरागिनी ॥

मैथीली पिय संग लसीहैं। बन किशोर बिच राजकिशोरी बैठेजनु जुगपूर ससीहैं। मुख बीड़ी अधरा अरुन सुंदर बेशकी मोतियां हलसीहैं ॥ जनु सित मेरु गेरुके धारा ता ऊपर ध्रुव पांति बसीहैं। मोतिनकी लरियां जुग राजित कच बिरचे अलकैं गलसी हैं ॥ कनक सिखर पर रहेउ बलाहक बक गनबीच

बिलोकि फसीहैं। राजकुमार धरे गज· रा उर करमें सेत छड़ी भलसीहैं॥ सहित कुटुम्ब फनीस गये जनु नागिनि मुख अभिषेकजसीहैं। बिहरत कुंज किशोर किशोरी चन्द्रकला विमला बिलसीहैं॥ उरनहिं धरे जुगल मधु मूरति श्याम सखे सब साधनसी हैं॥ १०२॥

भीमपलाश रागिनी जलदताल॥

ठाकुर से मेरो ध्यान लगोरी। ठा· कुर दशरथ लाल हमारे ठकुराइनि मिथिलेश किशोरी। बैठे कुंज धरे गल· बहियां चंद्रकला विमला चहुंओरी।

श्यामसखे दंपति छबि निरखत पिय प्यारी की सुंदर जोरी ॥ १०३ ॥

मनबसि करिलियो अवध बिलासी। दशन दाम मन काम पूरकर मटकनि मंद हँसनि सुखमासी। चिकने चिकुर मुकुर कपोल ढिग लटकनि कुंडल बलनि बिभासी ॥ मदन मीन अहिगन विलोकि के नाचत गावत खंजन त्रासी। पैग पोखराज पदमावलि यंत्रावलि गज रिपु नख भासी। मानहुँ नीलकंठ सुक कोकिल निवसे निसिबारिद तर डासी ॥ धर सिसु रूप ईश मुनिगन जहँ खेलत मगन रहत अवि-

नासी । श्यामसखे कमलाशिवदासिनि भृकुटी बिलोकत करत खवासी १०४॥

चैत गौरी रागिनी जलदताल ॥

नासहब तोरि तिरछी नजरिया । नित काहे को मचावत रार रसिया ॥ एदशरथके छोहरा रे क्योंतोरेगरेहार । डारोंगी टोना सांवरे पर मदन बानकी माररसिया॥ अबतो ढीठभये हमजानी सुनिये राजकुमार । श्यामसखेकी प्रीति न छूटै मोरि तोरे कठिन करार रसिया ॥ १०५ ॥

छांडुरे सैंयां हमारो अँचरवा । मोरी

बरबस तोरत हार गरवां॥ आईथी पनि घट जलभरबे तापर बरसे मेंह। नेह घड़ा सों मैं भरीरे प्रेमडोरीके बेह गरवां॥ प्रीति निगोडीमैं परीरे छिट-कावै को एह। श्यामसखे अबना तज्योंरे भूलि भलाई गेह गरवां॥ १०६॥

ख्याल हमीर रागिनी जलदताल॥

मेरो मन बावर भई आली। निरखि निरखि नैनन की कटा छटा॥ जुल्फ जाल खौर भाल मुक्तन के गरेमाल आस पास बालचाल में नटा। दीन्हे गर बांह बांह सरजू तट कदम छांह खेलत कर

कमल सखी माधुरी लटा लटा ॥ रसिकन सोय धरत ध्यान जीवन धन प्रान मान श्यामसखे पपिहा पियसे घटा ॥ १०७ ॥

नायकी रागिनी झपतालीताल ॥

अवध सुख चंद मन फंद कीन्हो मेरी । ललित बटछांह गलबांह करि परस परस घन बन बाटिका शुभग बन हेरी ॥ लालजी लाल जामा ललित पागरी सागरी सिय तन लाल ओढ़े घेरी । मुदित सखे श्याम पिकदान कर मेधरी परम सुख होत जब पीक गेरएरी ॥ १०८ ॥

झँझौटी तालखिमटा ॥

राघोजी की तिरछी तकनिसे सुख छाई मेरे नैन जबसे लखी श्यामली मूरति बिनु देखे नहिं चैन। थके नैन निरखत मुख शोभा बोलि सके नाहिं बैन ॥ श्यामसखे लखि वारत सजनी कोटिन छबि रति मैन ॥ १०६ ॥

छांड़ो लला मोरी डगरी पैयां लागों तोहार । राज राज तुम नीति बहादुर काहेफोरे मोरे गगरी ॥ श्यामसखे महराज से कहि हौं कौशिल्या से झगरी ॥ ११० ॥

धुरियामलार ताल जलद ॥

आजु पिय प्यारीकी छवि कीन्ह।
चन्द्रकला सखि माँग संवारे बेंदी का-
जर दीन्ह ॥ बेसर बीर बहूटा झुलनी
अंगियाके रस भीन। एक अनूप अलौ
किक आली कुच दोउ अतिहि नवीन।
बनेउं श्याम अति सुंदर श्यामा निर-
खत सखी प्रवीन ॥ श्यामसखे हँसि
कहत लडैती यह मेरो छविछीन ११॥

ललाछवि भामिनि आज करी।
टेढ़ी पाग सुरुख रँग जामा जुलफनि
पेंचपरी ॥ छड़ी गुलाब लिये कर गजरा

कुंजन मांह खरी। श्यामसखे पिय भेंटभई है हँसि उर मालधरी॥ ११२॥

नारदीगौरी रागिनी जलदताल॥

प्यारी दीजै गेंद हमारी। पूँछत श्री मिथिलेशसुतासे रघुबर अवधबिहारी॥ खेलत रहे एक संग मिलिके जो निज सखी तेहारी। तिन अंचल पट ओट छिपायो कीजे खोज पुँछारी॥ हाहा करत खड़े रघुनंदन सखन प्रमोद मँझारी। श्यामसखे सिय गेंद दिआये सखिन बजायो तारी॥ ११३॥

स्वामिन तोर सोहाग मनाऊं। श्री

मिथिलेश किशोरी सेवा जब जब यह जग आऊं ॥ अतर फुलेल अरगजा सुंदर पिय प्यारी उबटाऊं । बीड़ी सरस लगाय खिलाऊं रसकी बैन सुनाऊं ॥ प्रीतमसे नित नेह बढाऊं । टहलिनि होइ अपनाऊं । श्यामसखे दरबार रहोंगी जूंठे आस धराऊं ॥ ११४ ॥

रघुबर आजु घरे आवो । हम सब चन्द्रकला विमलाको रसमें आस पुरावो ॥ बनकिशोरके कुंजगलिनमें मिलि जुलि रास रचावो । बेंदी मांग किशोरी जीकी अपने हाथ बनावो ॥ सुनियत आपु रागके रसिया मीठी तान सुना

वो ॥ श्यामसखे सखि ओर कृपाकरि
जीकी आस पुरावो ॥ ११५ ॥

झँझौटी के ठुमरी जतीताल ॥

ना भरों तोरि घाट गगरिया । ए
दशरथके लाल खेलाड़ी कहोतोछांड़ि
देउं अवध नगरिया ॥ जौबन जोर
जनावत निसुदिन घेरत पनिघट गैल
सगरिया । श्यामसखे सैयां बन किशोर
चलि रसचसकैहोंझुलायसगरिया ११६
नासहों तेरे नयन लहरिया । नित
नित नयन लगावत आवत पलकनि
कोरनि जहर कहरिया ॥ जद्यपि कुल

गुरु लाज बड़ी है अति विलंब लखि रूप गहरिया । श्यामसखे सुनु राम गुमानी सहोंगी पीवोंगी दृगरूप तोहरिया ॥ ११७ ॥

खमाइच रागिनी तालहालिया ॥

रसिक सिरोमनि राम । बिहरे संग लीन्हे बाम ॥ चन्द्रकला किमला बिमला सखि राजति पिय चहुं ओर । कनक लता के मध्य जुगल जनु दामिन के संगमोर ॥ झुकिरहीं अलकैं लटकाम । बन किशोर जहँ गुल्म लगे हैं गावत अलिगन गीत ॥ शुक दादुर

पिक हंस चंद्रिका पिय प्यारी रसरीत। गजरा मोहै अभिराम॥ कोइ मुखपान खिलावत भावत कोइ आदरस देखाय। कोइ सखि करति गुलाब फुहारे कोइ करधारि उरलाय॥ अंखियन मारैं छवि धाम। धिधिकट धुधुकट मृदंग बजावत कोई सारिगम गतितान॥ कोइ पट खैंचत सैन दिखावत कोइ कररति उत्थान कोइ श्रम पोंछे तन घाम॥ रसिकन हित पिय करत रहस रस पूरन रस सिंगार॥ यह रस जान शंभु शनकादिक सिय पिय राम विहार। निज उरधारे सखे श्याम॥ ११८॥

धुनिगौरी ताल खिमटा ॥

नजरिया से मारिडालेरे जुलफवाले छयलरारे। बांकी चितवनि तीर। हमसे प्रीति लगाइके रे क्यों किता बे पीर॥ नेह तोरी बावरीरे बांधी झोंका खाय। श्यामसखे धरिले सैयांरे नाहीं तो बूड़ा जाय॥ ११६॥

नयना लगाये लिये जाय बांके यरवा। मांगत दाम भरन सरजू को झुकि झुकि छीनत गज मनिहरवा॥ अवधराज म· हाराज विराजित नेकु न मानत नृप जू की डरवा। श्यामसखे सुनु राज·

कुँवर बर तोरे संगे रहिहौं मैं ताजि निज घरवा ॥ ११२० ॥

रागिनी मारू जलदताल ॥

कृपासों क्यों नहिं कीजे तात। जो नहिं करिके सको करुना निधि है कितनीसी बात ॥ हो नहिं सके कृपा कछु करनी जग जनमें पछितात। श्याम सखे प्रन राख सैंयां रे सखा भाव के नात ॥ १२१ ॥

आजु कहिं देखे सजनी पिय बिरहिनि के ऋतुराज। हरित हार हरि भूषन पहिरे हरि अम्बर सिरताज ॥

पारिजात मकरंद मलै छबि घन दामि-
नि डासिजात। श्यामसखे बिनु कंत
बिरहिनी मनासिज महिप समाज १२२

ठुमरी झँझौटी ताल जलद॥

सपना लागी यारी आली सुनु।
राम छैलवा अवध गैलवा धरे कलया
रे दैया मोरि श्यामसखे गोरी अवध
बिहारी॥ १२३॥

आवैं गलबांह धरे हो प्यारी जीकी
छबि रसमाते। प्यारी की लट कुंडल
अरुझाने सरुझन कौन करे॥ जगे
अँखियन रसराते। फूल उड़ावत गेंद

खेलावत सो सुख कहि न परे ॥ पगनि धीरे धीरे घर जाते । श्यामसखे यह जुगल माधुरी मन अभिलाख करे तनक मोहिं तन मुसुकाते ॥ १२४ ॥

यारा नयना बड़े मजेदार । जुल्फें काली गोसन सी हैं दिलदां करत ह-यारा ॥ कहँलगि कहौं ज़ुल्म सुरमाकी करकत कोरकटारा । श्यामसखेमिलि जा गरे लाके पूरे आस हमारा ॥ १२५ ॥

प्यारी नैना अदाँ मुझे मारा । दिलका दिल जाने यह घातैं दिलसे करत पुकारा ॥ बिनु देखे गुरु ज्ञान न भावै दुख जानै करतारा । श्यामसखे

यह प्रीति कठिन है बूड़े रसकी धारा ॥ १२६ ॥

ठुमरीगौरी रागिनी जलदताल ॥

फुलवा लोढोंमैं कैसे जेठानी । सनमुख राजाराम खड़ेहैं तापर बरसै रिमि झिमि पानी ॥ पूँछत सासु कहा भइ आली चंद्रमुखी मुख देखों मलानी । श्यामसखे सैयाँलखि भई बौरी घरवर तजि पियसे अरुझानी ॥ १२७ ॥

झँझौटी सुरताल जलद ॥

मोरि तोरि यारी साँवलिया । जब तुम गए रहे मिथिलापुर फिरत रहे

फुलवारी ॥ अपनी रूप देखाइ मोह नी बस कीन्हे नर नारी । श्यामसखे बस भए सखिन के हमरी सुरति बिसारी ॥ १२८ ॥

रघुबर बारे के गोइयां । जब हम रहे बलापन सजनी खेलत सांभ सकारे ॥ तब तो तीर धरे कर बंसी बिह रत सरित किनारे । श्यामसखे सैंयां भेंट कठिन है अब हम बैस सँभारे १२९

जब से रूप निहारयों सखी हो राज दुलारे । तब से बिबस भई मन एरी ऊदीपाग सवांरे ॥ रतनारे लोचन मन भारे चिक्कन कच घुँघुरारे । नन-

दी नीक लगत नहिं जग सुख गेह नेह भई भारे॥ मंद हँसनि मटकनि दुख भई है औषध एक बिचारे। सकल मनोरथ श्यामसखे तब जब यह पौरि सिधारे॥ १३०॥

सखिन बिच शोभित सीय घनी। बैठी भवन झरोखा झांकति पिय मुख ध्यान सनी॥ नवग्रह उड्डगन सहित सुधाकर बिलखत रविहि गुनी। चंद्रक ला कमला बिमलादिक सौज लिये करनी। चितवत अमित चकोर जोरि कर मनहुँ शशिहि आननी॥ पाटी पारि सवांरि अलक जनु दुहुँ कपोल

अवनी। मदन महीप बिगारि राहु जनु सही देत दुफनी॥ शोभा ध्यान सिया की पटतर को बरने अवनी। श्याम सखे रघुबरहु न कहिसके दूजो कौन भनी॥ १३१॥

ठुमरी झंझौटीसुरतालदादरा॥

विरह माती सैंयांके नजरियारे यक तो कटीली आंखैं लालभाल बेंदी राखै जुलुम लगावलो कजरियारे॥ श्यामसखे मैं तो प्यारी सैंयां से लगाई यारी छुटिगई बरन बजरियारे॥ १३२॥

झमकि चली सैंयाँके अटरियारे।

सोहमासिबुंदकि वरन वर सोहै सारी मोहै तन लहँगा लेहरियारे॥ उन मुनि गुनी धुनि नूपुर नवल वनिक से गोरी अँगिया केशरियारे। श्यामसखे श्यामा प्यारी सैंयाँ मोहे मतवारी नयना नोखेधोखेकी कटरियारे १२३॥

राग श्याम कल्यान॥

बाँकी मुसुकानि छबिजाल। लालन की बसि गई मोहिं फबिरहि रेख दृगन बिचं कारे मदन धनुष दृग केशर चंदन भाल॥ कुंडल मकर मनोहर आली ललकि रहे मन जुलफानि कु·

टिल विशाल। धरि गलबाँह श्याम-
सखे रसिया तरुवर तरे हम लखि
भई हैं निहाल॥ १३४॥

अवध रँगीले तेरी चाल वालनको
मन हरि लई। सिरमें ताज बाज कर
लै मधुर सखन संगे फिरत गलिन
बिच लाल॥ जबकहुँ दृष्टि परे सखियन
तन झमकि झरोखन चितवत करत
नेहाल। श्यामसखे पिय रसिक सिरो
मनि विहरत नितानित बिकिगइ लखि
छबि जाल॥ १३५॥

ध्रुपद धनाश्री राग चारिताल॥

सिसिरि सफूल रचे हीरनके कोर

खचे सिरस फूले जामा जोड़ा जुल्फ कुटिल सोहै । खड़े सोभ श्रवन बटे सिरिस फूल सेजपटे धरे कमल कोमल कर प्यारी गरमोहैं ॥ आसपास मधुर सखा चंद्रकला विमलकला फूलनके धनुषवान कर कर कमलो हैं । श्याम सखे विहँसि देत अर्घपानि बहुरि लेत हेतु हरखि हिय समात चितवत तिर-छोहैं ॥ १३६ ॥

जंगला सुरताल खेमटा ॥

चित चोरन राम चपला चितव-नियाँ । चितसे चखनि चखी चित मेरी

चेरीसी होते बनियाँ ॥ चारु चलनि चिकने चिकुरनि घनि चंद्रहार चमकनियाँ । श्यामसखे सैंयाँ चंद्र बदन पर पियत वारि वारि पनियाँ ॥ १३७ ॥

सोरठ जलद ताल ॥

राघो प्यारो कारो जू पाग सुरंग । सिर पेंच लपेटे फूलन के जामा सोहै अंग ॥ मधुर सखिन संगे गेंद उड़ावत सिय गहि बाहुँ उतंग । बन किशोर बिच रहस रचावत नाचत मदन उमंग ॥ श्यामसखे सखि सेज सँवारति बिहरति पिउके संग ॥ १३८ ॥

राग टोरी ॥

माने न काहूकी बिचार। सखीरी सँभार अवधछैल आजु बहियांमरो ॥ सखन लगाय धाय अचरा धरतु ह श्यामसखे सरजू किनार ॥ छांडु छांडु नृपके बार ॥ अब करोंगी तिहारी भाई आवोंगी मैया कि सों मैं यार ॥१३६॥

झँझौटी ॥

रघुबर यार गुलामी लिखि मेराहो। दश करि कमल प्रेम मसि सजनी दश नष दशखत घेराहो ॥ संवल पियापद प्रेम लिखो है बहुरिनहीं जग फेराहो।

श्यामसखे पर सही कियो है हाजिर सांझ सबेरा हो ॥ १४० ॥

बिहाग रागिनी ॥

तेरी यारीकरना अब नहीं कहियां। हम सरयू जल जात भरन को बिचे धरत तुम बांहियां ॥ इत घर डर उत रूप सुधा लखि बिसरत पिय सुधि नाहिंयां। श्यामसखे नित नेह लगैहों वाही कदम ज्झुड़ि छहिंयां ॥ १४१ ॥

ठुमरी खिमटा ॥

सैयां मोरि बतियां भुला दीन्होरे।

रातैं कहे सैयां कंगना गढ़ाइदेउं नाहीं गढ़ा दीन्हो रे ॥ रातैं कहे सैयां ऊदी रँगाइदेउ पियरी रँगा दीन्होंरे । श्याम सखे मोरि कुसुमी चुनरिया दागी लगा दीन्होरे ॥ १४२ ॥

छैला मोरि जियरा लोभा लीन्होरे । रातैं सैयां मोरि धरे कलैया बेंदिया हेरा दीन्होरे ॥ थोरी उमिरि मोसे अँखिय मिलाये सखिया छोड़ा दीन्होरे । श्याम सखे सैयां सखा गोपाल जोबना लुटा दीन्होंरे ॥ १४३ ॥

झँझौटी रागिनी एक ताल ॥

मेरे रघुबर कृपाल दूसरा न कोई ।

जाके सिर क्रीट मुकुट धनुशर कर होई। सो इनके धन्य भाग्य नयनन जिन्ह जोई। लोने संग लखन लाल बोलत मुसुकाहीं॥ शारद औ शेषरूप बरनत सकुचाहीं। जब जब सियसंग लाल बिहरैं गलबाहीं॥ कोटि कोटि मदन लजित निरखत छबि छाहीं॥ जगपति सुरपति नरेश हित चित गति ओई। श्यामसखे सीतापति मेरे पति सोई॥ १४४॥

ठुमरी झँझौटी के ताल॥

लजानी रसमाती गोरी चलत

अँगनैया । तनपति हरषि सवाँरि बदन श्रुति कनक तौल सोरी । जलधिज जल धिजसींचि मनोहर मुख पंकज मोरी ॥ सुनतचारु चरचा बिहसानानि गोवृषभ तोरी । मधुवारन द्युति हेरि फेरि ठग बोले श्रुति जोरी ॥ मंगल जनानि ध्यान धरि लेखति कर रुह रसघोरी । दुरजन लेवत उचित समय मधु सासु ननँद चोरी ॥ श्यामसखे छबि आम बिरावौ फिरि फिरि ना बौरी ॥ १४५ ॥

धुनि बिहाग ताल जती ॥

चलु सखि पौढ़े राजकिशोर । कनक

भवन के ललित कुंज में दुति दामिनि छबिजोर ॥ जनक लली चरनन पर लोटत रस बस करि घन घोर। महलन में मंजरी अलापे मधुरी तानन सोर ॥ श्यामसखे सखि पीत पिताम्बर लै आईं बड़े भोर ॥ १४६ ॥

भैरवी ॥

हमारे मन बसि गए राम धनी। राम धनी मेरे कौन कर्मोहे पायों हीरा कनी ॥ यह संसार भरम का जुलहा माया जाल तनी। श्यामसखे दियो राम कृपाकरि चिंता चारु मनी ॥ १४७ ॥

झझौटीं तालहालिया ॥

लाल क्योंन मोसे बोलो हो। प्रीतम राम सुजान जो ऐहो मेरे गलियन में अछे खिलावोंगी पान रसकी बातें सु· नावोंगी तुमको जोबन देउँगी दान ॥ चुनि चुनि कलियां सेज बिछैहों करि हों आदर सन्मान। श्यामसखे बिन मोल बिकैहो करिहों सुख घम· सान ॥ १४८ ॥

लाल क्यों न मोसे खेलो हो। दिल की कुलुफ अपान बार बार पग तोरि परत हौं तजिकै लाज गुमान ॥ जो जो बात भई कुंजन में वर तर भई

जुबात। लीजे धर्म कर्म नाहिं छीजे कीजे आँखि मिलान ॥ श्याम सखे तेरी मुसुकनि पर बार बार कुर बान ॥ १४९ ॥

टप्पाझँझौटी जलदताल ॥

दशरथ राज कुमार प्यारा बेमन हरि लेगए श्याम सलोना श्यामसखे मतवारावे ॥ १५० ॥

रागिनीलूम तालखिमटा ॥

साजन रघुबर बांका सिपहिया क-दमतरे साजन। साजन रे पाग लटापट सोहै जुल्फमन मोहै गोरी सियप्यारी धरे गरे बहियां कदम तरे साजन ॥

साजन रे श्याम सखे बलिहारी जुगुल पटतर कोई जग नाहिंयां। कदम तरे पिय प्यारी तोरी साजन ॥ १५१ ॥

साजन सजन धीरे धीरे घोड़ा दौ-रावो अयोध्या के साजन। साजनरे कमरसे बांधे कटारिया मैं देखी अट-रियां ॥ नई सखि यन जिय ललचावैं अयोध्या के साजन। साजन रे श्याम सखे बलिहारी रजाय तिहारी बिनु देखे नाहिं जियसुख पावै ॥ अयोध्या के साजन ॥ १५२॥

लावनी॥

सांवली छबि बनिआई हैं। अधर

बिंबफल मधुर सुधाकर सुख रस सर
साई हैं ॥ मांग मोतिनसों छाई हैं। राहु
मदन जुग मीन पीन शशि मिलन सो
हाई हैं ॥ दशन दाड़िम सरसाई हैं। पा-
न पीक झलकै कपोल कंठा रुचिराई
हैं। कंचुकी ललित लगाई हैं ॥ अंगिया
भरे सनेह गेह प्रीतम फलदाई हैं। स-
कल सोभा अधिकाई हैं ॥ श्यामसखे
मुसुकात मिली पिय के गरे लाई
हैं ॥ १५३ ॥

झँझौटीताल जलद ॥

सँवलिया हूँ तो नई पनिहार। सासु

रिसाई आइ जल भरने क्यों तोरे गर हार ॥ बीचे हमैं तुम धरि गरे लावत बूड़ी बिरह की धार । अबतो गैल बतादे घर की जैहों भई अवार ॥ श्याम सखे राति आवोंगी प्रीतम पैयाँ लागों तोहार ॥ १५४ ॥

सिंधु रागिनी बड़ाताल धीम ॥

आवोंगी मैं आज ललारे। ले गोरस सो रस सुनु प्रीतम मिसु ननँदी घर काज ललारे ॥ बोधि सुवन परिवार पाहुनो उर धरि कै कुल लाज ललारे। श्यामसखे ऐसे यार न पैहौं दशरथसुत सरदार ललारे॥ १५५ ॥

देशचलत

राज दुवारे मोतीक्देल लियोरे । अतिसिंगार लखत तेंसिया मदन सनेह सरस रस भरे ॥ औचक भेट भई सरयूतट टेर पियापियोरे । श्यामसखे जुलफनि महै तुम बिनु कैसे जीवोरे ॥ १५६ ॥

पीलू के ठुमरी ताल ३ ॥

लागीहै मोसे नेह नेकयाँ । दशरथ सुत बाँकेयार । के सिखावों मन मानत नाहीं बाऊ बेन देखे नैना रतनार ॥ श्यामस तो चेरी तेहारी तू पियपारे हमा ५७ ॥

प्रभातीताल त्योरा ॥

स्वामी स्वामिनी के शरन । दीख नहिं चित मृदुल मोहन सरस रस नव भरन श्याम स्वामी गौर स्वामिनि मेघ दामिनि हरन । भक्तिमै मुद्रा विराजित दिव्य गुण बहु धरन ॥ देत अस· कृत सकृत नावत ढरत औढर ढरन । मधुप श्याम सखे मनासि कृत कमल जाके चरन ॥ १५५ ॥

सिंधु के टप्पा ॥

सो आवै आली सांवला सुजान मन मोहन्दा । अंटकिरही बांकी चितवनि

पर जुलफनिकी लट सोहँदा॥ संगलली सोहै अलबेली फैलि अदा तिरछो हँदा श्यामसखे मैंतो मोल बिकानी थरकि थरकि छबि जोहँदा ॥ १५९ ॥

खिमटा रागिनीझँझौटी ॥

करकिगई रे मोरी करके कंगनवां। राम लला धरि के झिकझोरे गिरि गई जाते अँगनवां। श्यामसखे सैंयां के रस छाकी घरे आइ परि के पगनवां॥१६०॥

ठुमरी तालहालिया ॥

एवान परे की बात है। करत झगर

नित रगर मगर मेरी छतियां छुइ छुइ मगरी फोरी छल छैलनकी नर घात है ॥ महाराज दशरथ के द्वारे जाइ पुकारों श्यामसखे कुल नीति को सँभारो बिनु देखे जिय ललचात है ॥१६१॥

ठुमरी देश के तालजलद ॥

बाग में बिहरे राज कुमार । फूल बंगला छाए नये नये रे । बेली चमेली यो गुलदाऊदी खस खस कीटटिया लागी ॥ प्रेम से सींचाते है सखिया हरदम रंग नये नये रे । चुनि चुनि कलियोंदी

सेज बिछाए धरि तकिया मषतूलरी ॥ श्यामसखे फूलोंदी डलिया साजि आई नई नई रे ॥१६२॥

खिमटा ॥

झिक झोरोना बालमु मैं पतरी। अंगुरी छुवत मोरि बहियां पिरानी छतिया छुवत मोरिजिया निकली ॥ आसों के साल माफ करु बालमु आगे के साल तुमसों झगरी। श्यामसखे सुनि ले चिरवाले दिन दस नैहरा जाऊँ चली ॥१६३॥

सोरठ के ठुमरी ॥

सैंया सैंया सैंया रे गोसैंया चूरो

मांसगी। डुगरं डुगर मैन जगावै रगं रंगावै जोबनकी अवध छैलमेरी गैल परो है जाय कहोंगी राज दुआरे। बरजो अपने रामलला को श्यामसखे गरेलागसि लागसि॥ १६४॥

लागी लागी लागी साजन चित-बनिप्यारी आरसी। बाँकीछैल छबीली सोहै छिटकी लटकानि जियसों मोहै कल न परैरी श्यामसखे अब जियरा तरसै मांडारे जो कोई साजन मोहिं मिलादे ताको जोबन वारसी वारसी १६५

रागिनी भैरवी ताल जलद॥

अबना जैहैं भरन हम नीर। मधुर

सखा सँग लै बिहरतहैं सुन्दर श्याम शरीर ॥ चंचल चिकुर बिलखि चितवनि की उघरत स्वास समीर। श्याम सखे कछु दरद न जानत दशरथ सुत बेपीर ॥ १६६ ॥

भैरवी रागिनी कौआली ताल ॥

नित नित हमसे नेह लगावत बांके भौंहनि अवध बिहारी। जब जब पनि घट जात अलीरे तब तब दस बिस गागरि फूटे ॥ सखा घनेरे लै सँगडोलै ऐंड़त जोबन मांते। बोल करत ठठोले घूंघट खोले अँगियाके रस हँसि हँसि

छूटे ॥ लाज सरम बड़ि भारी मनमें औरनहूँ से अपने घरमें कैसे कहिए यहि विधि रहिए अनरस होइजैहैं नाहिं जूटे । श्यामसखे बिनु देखे नैना छन छन मन नहिं आवै चैना वा मुसुकानि तान वा चितवनि जीवन भरि हमसे नहिं छूटे ॥ १६७ ॥

सिंधु भैरवी धीम ताल ॥

छबि छाकी सांवरे । रट लागी सांवरे ॥ राम लला तेरी रूपदेवानी जुल्फनि की लटकानि भुलानि होइ रही बावर रे । सुधि न रही सिर नीर घड़ा

को भूलिगई ठांवरे ॥ श्यामसखे छबि अवध बिहारी गाड़ि गइ दिल से तीर हमारी बिरही घावरे ॥ १६८ ॥

ठुमरी गारा ताल जलद ।

अँगिया ना छुवो दिलजानी । जो सुनि पैहैं राज बुँदेला होजयहो बिनु पानी ॥ ए उगना सुगना सरसावन दीजो भेजि बेगानी । श्यामसखे गईनेह लगावन गेह गरूरभुलानी ॥ १६९ ॥

नादिया ना भरोंगी पानी । एक सांवर सिर जुल्फ बनाये लागत है ठग ठानी ॥ हमको देखि नयन मट-

कावत बोलत भौंहनि तानी। श्याम सखे रस बस भइ आली सहजे सहज बिकानी ॥ १७० ॥

ठुमरी ॥

कगवा बोले मीठी बतिया अचरा डोलेरे मोरी। गगन मँदिल चढ़ि डोरि या लगै हों बिनु पनिहारी की गोरी ॥ पंच पकवानापियाको जेवैं हो अँखिया चारोंसेज डसैहौं। श्यामसखे ले सेजसुतैहौं हिलिमिलि करिहौंरे मौरी१७१॥

लेजा लेजा लहर बाँके यार। झमक मोरा झुलनीकी ॥ लाज निगोड़ी तजि

हम आई गूंदे चमेली हार। दूती झूठ निरखि उठि धाई आसा देखि तुम्हार॥ श्यामसखे यह तुमको न चहिये प्रीति की रीति लबार॥ १७२॥

रतियां जाउँगी पंनिघटवा। कौल करार पिया से हारी नेह लगी अट पटवा॥ काहू कै मैं बरजो न मानी श्याम श्याम भइ रटवा। श्यामसखे बांके ज़ुल्फ़नि से बसकियो नागर नटवा॥ १७३॥

हमरो सिपहिया बुँदेला। घोड़वन आवै असवारियां॥ श्यामसखे मोति-

यन के गजरा जुलफनि फुलवन गुंदेला ॥ १७४ ॥

परज के ठुमरी ॥

कहिं देखो हमारे रावला । जटा बनाय जोगिनी होय घर घर ढूंढति बावला ॥ देखि सरूप मोहनी मूरति कोइ सुंदरि बिलमाला । श्यामसखे सैयां छैल छबीले राजबहादुर सांवला ॥ १७५ ॥

पिय मिलेहमारे भागन से । पिय आवनकी खबर सुनी थी पथिक पिया रे कागनसे । फूलन सेज फूलनकेगजरा

फूलन मोती मांगन से। श्यामसखे गरे लाइ रहोंगी जोड़ी अति अनुरागन से ॥ १७६ ॥

हो रावलडा बालमु मेरा बांका। बांके लटछिटकाये बांके भौंह चढ़ाये॥ बांके जटियों दायाराबांके हयलेहारा हो। बांके हाथ सितारी बांके गावत प्यारी। बांके हार गुँनावौं श्यामसखे पहिरावौं ॥ १७७ ॥

ठुमरी ताल हालिया ॥

गोइयां रसिक किशोरे धरि बांह न जैहौं नदिया डगरी। जुलफनि घेरि

दृगन रतनारे बिलखि रहत धीरनाह ॥ श्यामसखे धरि हाथ निबाहो मैं तो तेरी लागिहों पनाह ॥ १७८ ॥

ठुमरी झँझौटी ताल जलद ॥

कर करसे कंगना भइ भारी । जब से बिछुरे राम रंगीले तबसे भइ मत-वारी ॥ भादौं रैनि राति दिन सजनी जहँ देखौं तहँ कारी । श्याम सखे मो-हिं सेज सतावै बिनु रसरास बिहारी ॥ हरि होउ गरता दे छोड़ी । रामरंगीले पैयां परतु हौं सुनिहै सासु निगोड़ी ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा कैसीकरौं

त्रिन तोरी। श्याम सखे यह नई सर-
दारी राह चलत ठग जोरी॥ १७९॥

नयनन से सांवरो बस कीन्ही।
खंजन मीन कमल उपमाकी मनासिज
की छबि छीनी॥ अब नाहिं कछुक
सोहाति सखीरी रतियां कारकार रंग
भीनी। तन मन वार डार लालन पर
श्याम सखे लिखि दीन्ही॥ १८०॥

जुल्फनिसे मन मोल बिकैहैं। तूंरे
पेंच लटक कलंगी की सो छबि जिय
से न जैहैं॥ श्याम सखे मुसुकानि
माधुरी निरखत बलिबलि जैहैं॥१८१॥

ठुमरीबरवे के ताल हालिया ॥

तारे नयनो दीवान लागी आवे। श्याम सखे दरशन दाप्यासा बांकी मुखड़ो दीतान ॥ १८२ ॥

ठुमरी झँझौटी के ताल ॥

हमारे मन लागि रही युगल तन शोभा। मन लागो जब से वा छबि पर जग अभिलाष वही छबि रजु गिरि सिंगार करै जो रति सत छानि सही॥ छबि नव नीत निकारै मनमथ जग द्दुति फैलि मही। अलकैं झलक जुल्फ एक संगी क्यों कवि बरानि कही ॥ उन

के द्युति उनहीं के अंग में उपमा नहीं नहीं। देखों नहीं प्रगट वा मूरति यह जिय दागरही॥ श्यामसखे कछुध्यान निरख्यों ताते पागि रही॥ १८३॥

ठुमरी सोरठ मलार ताल ठेका॥

चूनर मोरी भीजे हो राज। रिमि झिमि बुंद परत चूनर पर सासु ननँद की लाज॥ श्यामसखे तुमसे रस बस भइ अब घरकी नांहि काज॥ १८४॥

ठुमरी देशके॥

हो रावल तेरा नैना कटीला। फूल

बाग लगाहै गुल से कमर कटारी से जियरा बसीला ॥ नई दुलहिनि रसरंग न माती नये जोबन तन छैला छैल बहादुर बांका सिपाही श्यामसखे मोर राम रंगीला ॥ १८५ ॥

ठुमरी गौरी के ताल ॥

चिरे वाले हो लला मोकों बटिया देखा दे। बिरहा की मातीरा दोसरे उमगे छाती नई नई झुलनी गढ़ा देवो पेन्हा देवो ॥ जरकसी सारी जामें मोतिन की नारी धारी सुरखीसी चुनरी रंगादे । श्यामसखे सैयां कदम के

तरु तरे मांग भरी सेंदुरा लगादे छबि छादे ॥ १८६ ॥

ठुमरी झँझौटी ताल हालिया॥

सजन दिल बसँदा एआली। आली रे मोहन राजकुमार ॥ वन किशोर सुंदर बट छहियां बिहरन बाग बहार। चहुँदिसि सखियां खड़ी रस माती रस की उड़त फुहार ॥ जुल्फ छिटकि लटसे लपटत हैं खेलत गेंदन मार। श्यामसखे मेरी यारी लगीहै दसरथ सुत सरदार ॥ १८७ ॥

तेरि लटक चाल चितवनियां जि-

यरा बस कीन्हो रे। छड़ी गुलाब फुलौं दी गजरा जुलफनि लट लटकनियां॥ गौहरोंदी सिर ताज लला के कानोंमें सोहै गजमनियां। श्यामसखे रह दासा नु तेरी नाले छुटिगई घर कुल कनि-यां॥ १८८॥

सोरठ जती ताल॥

लालबलि जाउँ तिहारी हो। टेढ़ी चितवनि रावरी मानो काम कटारी हो॥ टेढी जुलफ देखाइ के मन लेत हमारी हो। जबलगि घराफिर अइहौं धरि गागरि भारी हो॥ तबलगि तुम

जानि जइहौ सुनुअवध बिहारी हो ॥ बन प्रमोद के कुंज में बहु सेजसँवारी हो । आस पुरैए सखिनकी मीठीतान उचारी हो ॥ जानत हौ गतिसांवरे अंतरगाति सारी हो । श्याम सखेरस भावके नितचाहत यारी हो ॥ १८९ ॥

सोरठ जलद ताल ॥

मैं रसीले बनरे को गोरी कैसे के जगाऊं । धरि कर लाल डालि गल बहियां लै आदरस देआऊं ॥ सींचि सनेह अमी जल अखियां उन दे पान खिलाऊं । श्यामसखे अब लाज काज नाहिं अनहोनी सुख पाऊं ॥ १९० ॥

दीजे हमारो चूरो जू मोहन छैल। चूरो दीजे पाय परीजे खीझै ननँद हठैल ॥ अब तोहूं घर जाउं सैयांरे भारी सिर पर घैल। श्यामसखे थे मीत हमारो रूडो अवधपथैल॥१६१॥

सोरठ चलता जलद ताल ॥

चीरे वालो हमारो चूनर चिर दई। राज रेथांकी चाल बिगरि गइ दिन दिन देखो थारी रीति नई ॥ डुंगरन ओरी घेरत म्हाको बारी बयस नहिं ज्ञान भई। श्यामसखे रूडो राज बहादुर थारी मिलिना जी हमारी पीर गई॥ १६२ ॥

सुर गौरी ताल खिमटा ॥

राम किशोर किशोर सिया । हिल मिल रंग झूलन झूले पिया ॥ छड़ी गुलाब गले गजरा भाल बेंदी विराजे दृगन कजरा । जब जब बुंद परे सर साईं ॥ पियप्यारी कदम तरेछपि छपि जाईं । सिय पिय जोड़ी कदम छहिया बिसरे न सखेश्याम पलक गोइयां ॥ १६३ ॥

चसकी मेरी जान बाँके बिहारी से चसकी । जुल्फनि पेंच सँवारत निसुदिन टोना लगाय कियो बसकी ॥

श्यामसखे लंबे बाला सँवलिया यारी लगी मोरी रसकी ॥ १८४ ॥

पचड़ा ताल खिमटा ॥

तेरे बड़े भागनसे आये बिहारी के पापरूरी । घूंघुटवारे अलक से दृग कोरन चोट ॥ लाज शरम को छोड़िकै खोलि घुँघुट पट वोट । उदासी मत करूरे चोखा चांदनि रात है ॥ सरह स बोले बात । मिलना हो तो लै मिलो रे फिरि फिरि भेट मोहाल ॥ छबीले से छकि रहुरे । चलु चलु बंगला बाग में जहँ बैठे राजकुमार । रसबस करिले

सांवले श्यामसखे के यार सोहागिन होइरहु रे ॥ १६५ ॥

खिमटा ॥

लाल बँगला छवावो महाराजा। बारहदरीके बंगला बनावो खसखस टटिया लगावो महाराजा ॥ अतर गुलावनकेर फुहारे पचरँगपलँग बिछावो महाराजा। श्यामसखे पलंगो परपौढ़ी चढ़ती जवानी की जोर महाराजा ॥ १६६ ॥

लाल मुनियां लड़ावो महाराजा। एक सदिया दुइ लाल लड़ावो हम से न

बाजी लगावो महाराजा ॥ श्यामसखे मनिमाल गरे की लैहौं धराय तुरित महाराजा ॥ १६७ ॥

नैहर नाहिं नीको लगतु रे पिय तोरे साथे जाउँ। तेरी जुल्फ निरखि दिल भरिहौं रसकी झोका खाउँ ॥ श्याम सखे तेरी चितवनि परसै बिनुमोल बिकाउँ ॥ १६८ ॥

बेनियां ना करोंगी रे। अब मेरी ललरियां तू तोरे ॥ राज लला तेरी ऊंची अटरिया ना चढोंगी रे। सासु करे बदनामी नगरिया ना रहोंगी रे ॥

श्यामसखे तेरी बांकी नजरिया ना सहोंगी रे ॥ १९९ ॥

अँगिया ना पेन्होंगी रे । अब मोरी खीजे ननँद जेठानी अवध बसे एक बांका सिपहिया ना डरोंगी रे ॥ श्यामसखे गरे लावो अकेली ना फिरोंगीरे ॥ २०० ॥

भोर भये छवि देखि ललन की रूप ठगी लखि पलकनि पलकी ॥ उझकत बदन सँभारति सखियां श्याम सखे सखि करत बिजन की ॥ २०१॥

झूमर ताल खिमटा ॥

मुख देखो दुलहिन कर खोलि ।

अधर मलिन देखहु मुख मटियार ॥
गिरत धरनि जैसे गंगा जल धार ।
बिहँसि बदन लखि अँगुरी लगाय ॥
जननी निरखि प्रभु रहेउ लजाय ।
बालचरित अति सरल सोहाय ॥
प्रमुदित श्यामसखे नित गाय ॥२०२॥

झँझौटी सुर ताल खिमटा ॥

बारेसे मोर सैयां खैंची रे कमान ।
खैंची रे कमान बान दृग चितवनि
नई नई जुवतिन को मारै निशान ॥
औघट घाट बाट नय रसिया जबदेखे
तब करै घमसान । श्यामसखे मेरी

फँसिगईं अखिया जाय की अब पति
राखै भगवान॥ २०३॥

बारे से मोरे सैयां नयना रे लगाय।
नैना रे लगाई आइ घर हमरी लरि
कन संग खेलि खेलि गई रे भुलाय।
भेट होत शिव के पूजन मिसु संग
सखी जब जात नहाय॥ श्यामसखे
भइ बयस जवानी अब कस करिहौं
मोरी जानेवलाय॥ २०४॥

देश रागिनी॥

गगरीउतार हो सैयां गागरीउतार।
रहसि रहसि रंग भीजत मोर सैया।
उमाड़ि घुमाड़ि आए कारे कारे

मेंह । घरही बैठलि तोसे करिहौं सनेह ॥ छोड़ी देहौं भइया भौजी छोड़ि देहौं गांव । तोरे सँग ए रावला जोगिन होइ जाउँ । लागी यारी श्यामसखे भारीपरी दाउँ॥ राम रँगीले तोरेघरे बैठी बैठी खाउँ॥ २०५ ॥

मोको अंखियन मारे रावला । अखियन मारे काम सँवारे तोरी गरे हारे ॥ सासु ससुर गुर लाज न माने सांझ सकारे । श्यामसखे मेरे बाल सघांती पिय तन कारेरे रावला॥२०६॥

टप्पा गारा के ॥

गले हार पेन्हा देऊं । श्यामसखे

रघुबीर बने को डारि आईं टोना न
जारा नजारा नजारा ॥ २०७ ॥

टप्पा पंजाबी जलद धुनि इमनी ॥

अंगिया बेगानी एरी छुवना नहीं।
श्यामसखे तोको लाज नहीं है सुनिहैं
राम गुमानी एरी छुवनानहीं। २०८ ॥
दरस देवानीक्यों जी मिलता नहीं।
श्यामसखे मन भइ वैरागिनि सुनि
लेवै दिलजानी ॥ २०९ ॥

टप्पा झँझौटी जलदताल ॥

मेरा चिरेवाला चिरेवाला। श्याम

सखे कधी दरश देखा जा सैयाँ दशरथ के लाला ॥ २१० ॥

लागी आवै ताड़े नयनोदीवान । श्यामसखे दरसन दाप्यासा बाँकी मुखड़ो देतान ॥ २११ ॥

दिल वसँदा मोती वाला मेरा वे । श्यामसखे कद दरस देखावँदा माडी गलियाँ बिच फेरा ॥ २१२ ॥

नैनो दी नजारा मानुलागी घनेरी । श्यामसखे सैयाँ छबि मतवारी तासों भइ पनिघट विच देरी ॥ २१३ ॥

टप्पा सुरइमनी ताल जलद पंजाबी ॥

मुझे जान्दे बिगानी मैंतो साँवरे

भलावै । श्यामसखे जादी पनिडी भरन दी तैनु लाज न मानी मैं तो साँवले भलावे ॥ २१४ ॥

कीसीनाल दिनकहना मैं नुतांडी वेगुमानी । श्यामसखे सुनले श्यामस-लोने तेरी मेरी यारी दिलविच रखना तांडी वे गुमानी ॥ २१५ ॥

टप्पा सिंधुके ताल धीमा ॥

अनि अनि वेर रघुराज गुमानीडा एक वेर सुनिहौ मीठी तानन छोड़ि के लाजन काज कुलकानी ॥ हौं पति मानि देखि जुलफानि तेरी वरजी रहीं

घरे सासु जेठानी ॥ हौं धरि हाथ रिझाय वरसव सवन की सोर बिच छयल छैलानी। श्यामसखे अब कैसी बनैगी इतनई नेह उत ननँद गलानी ॥ २१६ ॥

टप्पा चलता ॥

बागानी बागानी चल गोरिया। श्यामसखे सैयाँ रामवने को फूलोंदी बनाई मालिन सेजरिया ॥ २१७ ॥

रागिनी गारा ॥

बटिया रोकतवे। श्यामसखे नहिं हाथ लगोगी जोबन माल बेगाना बेगाना बेगाना ॥ २१८ ॥

मिलता क्यों नहीं वे। श्यामसखे सुनु राम रसीले तरसत आँखि हमारा हमारा हमारा ॥ २१९ ॥

रागिनी सिंधु के ताल धीम ॥

राजरस भीनेसे आएहो मुसकाति छविसे छैल अठिलाते। मांगत हौ रस लाल श्यामसखे औरन के समरस नहिं मोल बिकाते ॥ २२० ॥

रागिनी खमाइच के ताल यकताला ॥

राहस मंडल रचित श्याम। सोहैं संग अमित नागरी चतुर तिराछित

मौहैं॥ आव भाव लावैं बतलावैं नच-
वावैं पिय दरनि तिय सिखावैं अलि
चखनि चंद जोहैं। हँसनि मन्द फँसनि
बदन दसन दाड़िम मदन लसनि क-
सनि कमर केहरि लखि अपसर मन
मोहैं॥ श्यामसखे सुनत तान कोकिल
खनि रस मान सुर विमान थकित
भानु सुधि नाहिं हमको है॥ २२१॥

राहस मंडल विवश भई गोरी।
गोरी तन द्रवत श्रवत श्रमकन सुख
सोरी॥ झीने भीने सारी जर तारी
बहु भांति धरे मुकुतागन पवि रहे
जनु शशिहि लयनि होरी। करत

विजन बाल लाल बालन प्रति लाल लाल पगनि परत करत भाव चितौचित चकोरी ॥ विगलित सिङ्गार हार विरचत कर श्यामसखे देत लेत सेत पीत मृगमद मासिरोरी ॥ २२२ ॥

हरषि हरषि हँसि हँसि सबआली। आली रस रंग अंग नचाति गाति सुचाली ॥ तालसे उठावैं नई नारि को सिखावैं भरि भाव से भुलावैं पिय विविधि परन ताली । सुरधारि खंभावत सब गावत सुख पावत अलिमलय बदन मदन रूप बालिका मराली । श्यामसखे चपलि पगनि दृगनि फि-

रनि ढरनि मुरनि निरखि निरखि थि· रकनि मन होइ रहौ मतवाली ॥२२३॥

रागिनी लूम धीमताल ॥

बनरा बेदिल बहार। जटिबोंदा है मजेदारा ॥ जुल्फ सेहतजरियोंदा गेंदा सुर्ख सिरो दस्तारा गुल्जामा गुल्दा पाया तारा। गुल्समाशिर कटा रा। श्यामसखे सब रोज जुवासे बस दाराम कुमारा ॥ २२४ ॥

रागिनी इमनी जल्द ताल ॥

छांड छांड बहियांघरे जानेदे देरी

भई रे दैया। पनिघट बट रोकत टोकत हौं रिस रोकब ना ननँदी मैया॥ रघुनंदन मानु मेरी बतियां रतियां हम आएवलाजधैया। अब श्याम सखे नइ नेह लगी हम तोर गोइयां तुम मोर गोइयां॥ २२५॥

रागिनी पूरबी के ख्याल धीमताल॥

तेरी आँखिन की सुर माईयां। जुल्फ लटक बारिछकी राहि छबि पर साडे नाल मैं बलि जाइयां। कदम के तरु तरे बिहरे सखिन घरे सखे श्याम लै गरे बाहियां॥ २२६॥

रागिनी चौताला पूर्वी॥

तू सजिआयो रे अलबेला बनरा रंगिया रंगिया। नयन तो रंगीले बांके सोहैं कजरा सखे श्याम रंग बरसायोरे॥ २२७॥

रागिनी देश सांझी समइयाके पद जलदताल॥

अवध सोहावनो सांझी आज। यह सांझीतिहुँपुर उजियारी कोटिन ससि दुति वारे लाज॥ पासा साजि साजि नय नागर खेलत मनधरि बाज। श्यामसखे चलो निरखिए ना-गरि तजि अपनी घरे काज॥ २२८॥

आजु यह सांझी भली बनियां। चलो देखी सहेली अवध गलियां॥ महलन की खिरकी झरोखा झरी हीरालालन की मालन की दीपैंधरी। औघट उपबन बाग बने॥ धरे बाती कपूर फनूस घने। लाखों करोरन को दान हुआ॥ खेले नारी बिहारी दिवारी जुवा। सुर विमान श्यामसखे देखैं खड़े सुख सांझी अयोध्या आनन्द भरे॥ २२६॥

भीम पलाश जलद ताल॥

बांका सिपाही सँवलिया चलाआ

वाहमार । सरजू नहाय सिखायरे बांका पटा खेलोर ॥ कमरसे सोहै कछनियां घोड़े असवार । टेढ़ी सी टोपी लगाये रे मोहन माला क हार ॥ तिरछी सी मारे नजरिया रे नई नारी निहार । कुंज गली रतियां बोलावै रे दिन राखे बिचार । श्यामसखे बांका सांवर से हमसे लागी है यार ॥ २३० ॥

झूमर ॥

नव रंग नीको लगे अति प्यारो । नवल नवेली नारि चहुँओर करधारै ॥ नौहारलै आई । नौसह को पहिराई ।

नवराग सखेश्याम गुनि जनकियो गारे ॥ २३१ ॥

बना आली अजब बनी सुघराई। छवि दा करकर मेहदी सोहाई ॥ फूलों दाजामां सखेश्याम हार छड़ा लटक चलनि में बलि जाइयां ॥ २३२ ॥

झँझौटी ताल जलद ॥

सैंयां देखि देवानी भई रे। जाती थी मैं अपने गैल से घूँघुट के पटदई रे ॥ जुल्फ सेहत सिर पेंच सवांरे चितवतहीं चितलई रे। श्यामसखे कछु बात न भावै छैल छमकि छवि छई रे ॥ २३३ ॥

राम बने के सिर सेहरा मैं देखि आई । नवल किशोरे लालचोरो ओर ठाढ़ी बाल सिय बनरी की रस नेहरा ॥ गूँने हैं चमेली चंपा कानों मे लगाये बाला जुल्फ छिटकगले हरा । श्याम सखे बनेड़ी सखी मोहै सहस पड़ी की ऐसी चेहरा ॥ २३४ ॥

झँझौटी ताल हालिया ॥

तुम्हारी नित बानि नई । लड़ि-कैयां गोइयां सँगबीतें जो बिन होस भई ॥ अबतौ अपनी नीत सँभारो जोबन जोर नई । नेह गेह गलियन

बिच परकत अजहूँ न पीर गई। श्याम
सखे सुनिले दिलजानी छांड़ि दई
सो दई ॥ २३५ ॥

झँझौटी सुरताल जलद ॥

कासों कहौं सुख भारी। लखि
आजु बिहारी॥ चढ़ि सुखपाल बटेर
सिकारिन आय रहे फुलवारी। बिहरत
रौस सखिन धरि हाथे जहँ जहँ
उड़त फुहारे॥ खग मृग डार पात
झुकि झुकि गए सुनिसुनि तान पियारी॥
हमहूँ सुनी लखी वह सूरति अब लगी
मन मतवारी। श्यामसखे तन भई
बौरीसी फूटो गगर सिर भारी॥२३६॥

राग टोरी ॥

तुमसेलागीयारी सुनिये बालमु राज हमार । प्रीति पुरानी हमसे तुमसे ॥ जोग जुगुति से तुमहौ न्यारे रसिकन के हितकारी । श्यामसखे माडी जियरा फसंदा सुन्दर औध बिहारी देवे गिरी ॥ २३७ ॥

कैसे जाऊँ बीर नदियारे । ठाढ़ोहै छबीलो श्याम सुन्दर मूरति राम श्यामसखे सरजू के तीर ॥ २३८ ॥

कामोद ख्याल ॥

सैयाँ तोरा रे कैसे घर आऊँ । श्याम

सखे मोरी पीयल बाजे ठाढ़ी भई पछिताऊँ ॥ २३९ ॥

गुन कली ॥

गुमानी टोला क्योंन हरो मोडीपीर। श्यामसखे तेरी रूप देवानी सुनि लेवे रघुवीर ॥ २४० ॥

देशरागिनी जलदताल ॥

सहेली सुनु साँझीकी सुख घड़ी। कौनो जन्म होय यह नगरी विधिसों विनती करों। वसिके ध्यान धरों पिय प्यारी पल एकोन टरों ॥ श्यामसखे

तजिके सुख नगरी काहे को भवन परों ॥ २४१ ॥

बिरह राग कल्यान जलद ताल ॥

मन बसिगई सरूप निहारे । बाबाहो मोरि ब्याह करा दे रघुबर राजदुलारे । मोरा जीवनसों अरुझानो सरुझत नहीं सभारे ॥ श्यामसखे मेरी ब्याह करादे तजिकै लोक बिचारे ॥ २४२ ॥

पिय बिनु सखी नींद न भावंदा । छन आंगन छनगैल अथाई छनजुग जामिनि जावंदा ॥ शीतल शशिकर निकर हुतासन जलद मनहुं बरसा-

वंदा ॥ श्यामसखे कद वा दिन आवैं भेटों पियागरे लावंदा ॥ २४३ ॥

रागिनी मारू जलद ताल ॥

तिरछी नजरि जियरा हमारे । सुनि ये राम श्याम नये रसिया उठी बिरह की आगि हमारे ॥ बिनु छुये यह हाल भई है मदन वेगि गई जागि हमारे । श्यामसखे सैंयाँ यह गलियनमें दरस परस बड़ भाग्य हमारे ॥ २४४ ॥

रागिनी देश ॥

भूले नाहीं रे सैंयाँ भूले नाहीं रे । अवध नरेश बाँकी चितवनि तोरी

सयाँ ॥ घर नाँहि भावै डर देखावै देह जनावै जोर । काली नागिनि सेज सतावै जियरा काँपै मोर ॥ विरह बयारि लागी कठिन कठोर । बावरी भईहैं नयना सूझै नउँजोर॥ पैयाँ परों श्याम सखे सुनिये किशोर। एक बेरी हँसिके बोलो हमरी निहोर ॥ २४५ ॥

हमारे मन सांवली छवि छाकी। हमतो तन मन वारि दियोहै जब देखी छवि बांकी ॥ मधुर कहनि मुसुकानि हँसि हेरनि बिसरै न आंखि अदाकी। श्यामसखे मैंतो बिरही पियासी नित घनश्याम पियाकी ॥ २४६ ॥

ठुमरी परज के॥

हो लागी हमारी बलमु जी से यारी । नाहिं भावै घर वारी नाहिंभावै ससुरारी सौ सौ सुनियत गारी दिल जावे नाहिं न्यारीहो॥ बिरहिन नागिन डसिगईराति बिहाली हो। श्यामसखे पीर भारी विनु बालमु को उतारी हो॥ २४७॥

ठुमरी झँझौटी ताल जलद॥

मुसुकनि से जियरा गड़िगइ रे। जाति रही मैं अपने महलसे एअँखियां पड़िगइ रे॥ रामलला तेरीरूपदेवानी

बिरह दुनी चढ़ि गइ रे । श्यामसखे सैंयां हाथ तिहारी अब होनी कढ़ि गइ रे ॥ २४८ ॥

करादे मोरी गौना गोरी । होओंहि अमरैयां ॥ महादेव शशिभालदिगम्बर लगी गई मनमोरी । सुधासींचि मन सिज रस बिरवा जनक जननी मोरी ॥ परत तुसार रहत सकुचाने बिपति न कछु थोरी । जो शिवरानी बांह धरादे पगनि धरे डोरी । श्यामसखे नाहिं लिखल विधाता करि देवर जोरी ॥ २४९ ॥

ठुमरी झँझौटी ताल हालिया॥

सजन मन हरि गए रे आली। आलीरे तबसे कछु न सोहात॥ छन एक रूप लखी बालमु की पलक परी नहीं रात। बिलग होत मन मीन दुखित ज्यों अँखियां भईं बरसात॥ चंद्रकला की कला नहिं भावै कुमुदिनी सी कुंभिलात। श्यामसखे बिरही मतवाली मिलि गए पिय मुसुकात॥ २५०॥

सजन सँग सोइया रे राती आली रे बिरह भरी सारी रात। बन प्रमोद जहँ सीतल छहियाँ फूली रही जल जात॥ सेज सोहावन रस उपजावन पुर

वैया सरसात ॥ फूलनके नख सिखलौं गहना पहिराये भरि गात। श्यामसखे सैंयाँ अवध रंगीले हँसि हँसि पूँछत बात ॥ २५१ ॥

ठुमरी जंगला जलदताल ॥

काहे को लगाए नई यारीरे छयलवा बिछुरन में बौरानी बिरहा की मातो। श्यामसखे तोरे लगि रघुनंदन ढूंढत ढूंढत दैया डगर भुलानी बिरहाकी मातो ॥ २५२ ॥

काहे दिखाएरे जुल्फकारीरे सँव-लिया अजहूँ न पीर भुलानी साँवले

से अटकी। श्यामसखे दिल दरद मिटादे हम बिन मोल बिकानी साँवल से अटकी ॥ २५३ ॥

ठुमरी जोगिया जलद ताल ॥

श्याम बिनु नीको न लागत धाम। दिन दिन देह भई दुबरीसी रटलागी सियाराम॥ कब मिलिहैं पिय बाल सने ही बीतेयुग सम जाम। श्यामसखे मोहिं भेट करादे ताकी होंगी बाम ॥ २५४॥

ठुमरी पीलू के चलताल ॥

सजनुआँ राखे न हमसे बिगार। जो तुम बातैं बिगारोगे हमसे बिरहा

की बरसै अंगार ॥ श्यामसखे जियछो-
ड़ोजी कपटी रघुवंसी दरबारा॥२५५॥

ठुमरी खिमटा ॥

छैला तोरी बटिया जो हों खड़ीरे।
तोरे कारन हम सेजिया सवाँरे आसा
लागी बड़ीरे॥ हमसे कहे सैंयाँ रातै में
ऐहों नींदौ नाहीं पड़ी रे। श्यामसखे
सैंयाँ बिरहा सतावै छिन छिन पल न
घरी रे ॥ २५६ ॥

छैला मानै मैं नाहीं रे । जब लगि
कर कँगना न पैन्हैवे धरि धरि बाँहींरे
जब लगि मोहिं बिड़ी न खिलैवे धरि

धरि के मुख माहींरे। श्यामसखे सैयाँ सेजिया न सोवै कदम के छाहींरे २५७॥

छैला बोलो न मोसे काहेरे। कामोसे चूक परी बारे बलमा कौने गुनाहेंरे। श्यामसखे सैयां कलना परतु है बिनु गले बांहेरे॥ २५८॥

नजर तोरा लागीरे बाँकेयार। सुनु रघुबर दिलदार॥ सिरिस कुसुम मन सिज रस बोरे तिरछी तकनि तेहारई। रहीन हाल सुनो दिल जानी होइ गई कलेजेपार॥बिनं लागे रहि जात न मोसे वाही काम कटार। श्यामसखे गरवां

कब लगिहो सुनु रसिया सरदार॥२५९॥

ठुमरी जती के॥

चितवत चित खींचि गहोरी छैल। कासे कहूँ मैं तौ जिय की उचट॥ सुधि न रही मोकों असन बसन सखि भावै न सेजिया की सैन। श्यामसखे कहुँ दीख न ऐसो राज कुँवर होवे न होय न॥२६०॥

ठुमरी देश॥

देखी जो रंगीले राम ठाढ़े बगिया में फुलवा बिनन जाउँ। फुलवा बिनत मेरी अंगुरी पिरानी कसकत है मेरी

बांह ॥ श्यामसखे मेरी पीर मिटा दे तेरी मैं बलि बलि जाउं ॥ २६१ ॥

ठुमरी सोरठ मलार ठेका ॥

कोइलिया रे तू क्यों बोली रात। सोईथी मैं रंग महल में चिहुँकि परी मेरेगात ॥ श्यामसखे घर प्रीतमहोते पूँछति तुमसे बात ॥ २६२ ॥

ठुमरी ॥

ननँदी पैयां परों मेरा सैंयां दीजे मनाय। गगन मँदिल मेरा सैंयां बसतु हैं हमसे चलो नहिंजाय ॥ दुखसुख जो सपना की बातैं सो पिय दीजे

जनाय । श्यामसखे मेरे रूठे बलमु को मिलिहौं लै गरे लाय ॥ २६३ ॥

देजा देजा दरस रे आई । दुखित भई बिरहाकी ॥ बिन जाने तब लगी रही बिरही अब नहिं सकति सँभार श्यामसखे नहिं अनत रहौंगी कर लीजे गलहार ॥ २६४ ॥

उमिरिया कैसे क बीतेहमार । आसा नाव बिरहकी धारा कोइ न खेवन हार ॥ बिनु बालमु नदिया भइ गहिरी कैसेक उतरौं पार । श्यामसखे जब मिलिहैं बालमु रावल राज कुमार ॥ २६५ ॥

सिपहिया ना बोलौंगीयार । आसा लागिरही तेरो आवन सोचत भई भिनुसार ॥ मेरो कौन करै यह बातैं सोतिन के दरबार । श्यामसखे सैंयां कैसे सहौंगी जौबन की नई भार ॥ २६६ ॥

बटिया भुलानी हो रामा । अब कोइ दीजे हो देखाय श्यामसखे मैं तो बिरहा की माती जिय बौरानी हो रामा ॥ २६७ ॥

रागिनी झूम धीम ताल ॥

सुनि लेवे चिरवाले । किसनूदी

कहिये हाले फसँदावे ताड़ी रूपनसे में फिरता हूं मतवाले। जड़ि चाहे नालेरखदावन कुछु तो भी फरमाले श्यामसखे घायल जरवोंसे दैनुदर दमसाले॥ २६८॥

रागिनी सोरठ धीम ताल ॥

राजा जी से राजी था रे साथ सुनिये श्यामसखे रघुनंदन धरिलीजे मोर हाथ॥ २६९॥

राजा मैं छोड़ों कैसे नेह। एकतो श्यामसखे घरजागे दूज़े बरसत मेह॥ २७०॥

राजाजी सुना दे बांकी तान। श्याम सखे सुनु राम रंगीले रखिले मोरी मान ॥ २७१ ॥

रागिनी सोरठ जलद ताल ॥

मैं न बोले सांवले को गोरी कैसे कै मनाऊं॥ रही नवेरि सैंयां कैसे जिया ननँदी बात बुझाऊं। पियकी मनकी प्रीति भई नाहिं कैसे लाज गँवाऊं॥ श्यामसखे सैंया रंगमहल में जियकी आसपुराऊं॥ २७२॥

हमको नीको लागै छैरो थारो चाल। थेछेजी हमारो ननँदीरो प्यारो

गरे पेन्हावो मोती माल । जब लगि हूं नहिं देखों तोको आंखें आवै जाल। श्यामसखे थे राजबहादुर थारी हमारी प्रीति बिहाल ॥ २७३ ॥

नींद परै नहिं रातबातन से अरु भ्फाइ लिये रे। जबलगि मुख देखौं नाहिं बालमु कंचुकि उरज न जात ॥ बूझै न बिरहिनि की तन आगी बिनु पतिके मुलकात। श्यामसखे पछितात बिरहिनी कंत कथा सुनिबात ॥ २७४॥

सोरठ जती ताल ॥

मोहनराजकुमार छैलवा आनि

मिलादेरे ॥ हां हां करतु हौं पैयां परतु हौं बिरह जनादे रे ॥ सूझत नहीं विरह की माती राह बतादे रे। श्यामसखे सैंयां रंगमहल में गर लपटादे रे ॥ २७५ ॥

लाल मोहिं आस तेहारी हो। सुनिए कोशलचंद के एक अरज हमारी हो। तुम जल निधि हम सरिताहैं तुम पति हम नारी हो । तुम बासर हम राति हैं तुम चंद हम चकोरीहो ॥ तुम नायक हम नायका गठबंधन जोरीहो । नात बात तुमसे भली जग नेह लबारीहो ॥

श्यामसखे अपनाइए सब चूक बिसारी
हो ॥ २७६ ॥

सोरठ ॥

मोरि बिरहिया कौन सुने भँवरारी
जबसे बिछुरे श्यामसखे सखि तबसे न
लीन्ही खबरिया भँवरीरी ॥ २७७ ॥

झँझौटी ताल जलद ॥

सँवलिया तोसे बसे जिय मोर।
नहिं भावै नैहर को रहना नहिं सासुर
घर ओर। मदन जगावै बिरह सतावै
माती जोबन जोर ॥ अब घर जान
कहौ मति बालमु पगधारि करउँ निहोर।

श्यामसखे लै अनत रहौंगी हम तुम राज किशोर ॥ २७८ ॥

सँवलिया कैसे धरों जिय धीर। बिनु देखे तोरि सांवलि सूरति अँखियाँ ढरकत नीर ॥ हम तुमरे जिय हम तुम जाने सासु ननँद बेपीर। छन २ देखत रसउपजावत बिछुरत बिकल शरीर। श्यामसखेको दरदमिटावै बिनु बालमु रघुबीर ॥ २७९ ॥

मनमोहि रही सैंयां की अलक लटकियां। हमतो जात रही पनिघट में चितवत बिसरि गई बटियां ॥ सु-

न्दरराज कुमारि पिया से रही अरु झाई अवध जाटियां। श्यामसखे पछ तात गई घर तब से श्याम श्याम रटियां॥ २८०॥

मोरि तोरि लागी सनेहिया। नाहिं नीको नैहर को रहना रस बस में मनजागी॥ सुनिये राजकुमार तुम्हैं बिनु मनसिज भै बैरागी। श्यामसखे धरो सीतल बहियां मदन लगावत आगी॥ २८१॥

बेंदी भाल न दे। रसिकरसीले सैयां हो॥ जुल्फ लटकआये दिल फसिया

क्यों तरसा वँदे। तेरी अधरबिम्बमेरे करपान खिलावँदे। श्यामसखे सैंयां वहि बट छहिंयां आसपुरा वँदे ॥२८२॥

रघुवर लेले खबरिया मेरी ॥ जतन अनेक कियो बहुतन की औषध मूल घनेरी। श्यामसखे बहु हेरि खोजि कै एक आस रही तेरी ॥ २८३ ॥

झँझौटी ताल खिमटा ॥

राति सैंयां सपन हम देखारे। राति बालमु मिलि गए सजनी। श्यामसखे गरेलाय अवध बिहारी। पीर हमारी हरिगये धरि गये रे ॥ २८४ ॥

राति सैंयां हमारे घरे ऐहैं हो । सरजू तीर ललित बंगला में रचिहों सेज सोहाय ॥ श्यामसखे सुनु राम गुमानी रसकी तान सुनै हों हो ॥२८५॥

राति सैंयां बिछुरि गये सजनी । धोखे रामकुमार सखी रे आइ मिले छन एक ॥ श्यामसखे दुख दूनी सी धरिगए बीती निहारत रजनी ॥२८६॥

राघोजी से नयना लगी है अटकावै अब कौन । जो सुख भई रघुबर की चितवनि सुख भावै फिरि कौन ॥ जो दुख भई है प्रीतम जी की बिछुरन दुख पावै फिरि कौन । श्यामसखे

सैयां से अरुझानी सरुझावै अब कौन ॥ २८७ ॥

रघुनन्दन लाल बिसरै न तोरि चितवनियां। तोरी चितवनि है भइ थीर अखियां अनहोनीसुख देनियां॥ जोग बनाय मौनि घर बैठी कैसे बनै दरसनियां। श्यामसखे को निबाहे बनैगी धरिधरि कर कमलनियां २८८॥

लरिकैयां के गोइयां हमारे सैयां। जब मोरे बालमु छैल छबीले तब हम बारि कुमारी रहियां॥ खेलत रहेएक सँग गोटी तब कछु लाज की बातें नाहियां। श्यामसखे अब भेट कठिन

है ऐसे समय दुख दीन्हो दैया ॥ २८९॥

झँझौटी चंचरीक ॥

श्याम कै गयो चितवानि की टोनवां। हमतो नीर भरत रही सखिन के गोहनवां ॥ फिरत फिरत आइगयो दशरथ के छौवनवां ॥ टोपी सिर जुल्फ धरे श्रवन कुंडल सोनवां। मारि चल्यो भौंह जोरि तिरछी नयन कोनवां॥ रघुबरसे करों व्याह रहों ना भवनवां। श्यामसखे की लगन लगी है होनी होय सो होनवां ॥ २९० ॥

झँझौटी टप्पा जलंद ताल ॥

राघो जी मिलोंगी लागी आस

हमारी। जैसे पपिहा प्यास पुकारत तैसे हम ढूंढ़त घनवारी॥ श्यामसखे मेरी पीर मिटैगी सखन साहित मिले अवध बिहारी॥ २६१॥

नबीली अली आस पुरादे मांडी भावँदा। तू है बीर पीर पैगम्बर पिय से हाल जनावँदा॥ अबकी वार पार करु बेरा बिचे नाव फँसा वँदा। श्यामसखे समसेर बहादुर दशरथ सुत दरसावँदा॥ २६२॥

झँझौटी सुर ताल तेवरा॥

दाव न लागी ताड़े नाल। रावला

रसियायार सुनलेवे चिरेवाले सांवले भूले न तेरी बांकी चाल ॥ जबजब तू फिरँदा बिच गलियां गजबाति राज मराल । श्यामसखे गले बांह लगाले सुनुदशरथ दीलाल ॥ २६३ ॥

मुलतानी जलद ताल ॥

बिछुरन पियकर बरब न मोरी । जोतृन तरुवर जन्म देहि विधि अवध पुरी की खोरीरे ॥ राम रसिक गुन कीच नहैहों लहिसुख सिन्धुहिलोरी रे । श्यामसखे निज नैन धरोंगी रामसिया जूकी जोड़ी रे ॥ २६४ ॥

सांवरो ने पनिघट घेरी रे। बिनु देखे मोहिं कल न परतु हैं आई देवर मिसु हेरी रे॥ काह करौं कित जाउँ सखी रे उठि हैं बिरह की फेरी रे। श्यामसखे सैंयां भूले न हमसे तिरछी चितवनि तेरी रे॥ २६५॥

भैरवी सिंधु धीमताल॥

सानू दीलों बिच बसंदावे बसँदा क्यों मांडाजी तरसावंदा नहिं आवँदा॥ तेरी गोसन सी ज़ुलफ ने बेदरदी मांडा पीर न जाना श्यामसखे हँसदा फँसदा॥ २६६॥

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
श्री ... दास शास्त्री
16761

भैरवी ताल छपका ॥

तोहरे बिनु सुनु सिय पियरे । देखत तेरी जुल्फनि की लटकनि बिरह बिकल भई ॥ छुटि गई असन बसन दृग अंजन सुधि बुधि सब गई । श्यामसखे बिरहिनि कैसे जीवत बिनु रस रंग नई ॥ २९७ ॥

सुरइमनीताल जलद ॥

करिहौ छाँह कबै करि परसै । हे रघुनंदन हालहमारी जुगसम जाम श्याम बिनु दरसैं ॥ तबसे चित चौगुन भई हमरी लाज रही नाहिं घर डर डरसैं ।

श्यामसखे सैंयाँ धरि गरे बहियाँ बीड़ी खात जात सुख सरसैं ॥ २६८ ॥

भीम पलास जलद ताल ॥

चिरेवाले रे सँवलिया जियरा लागी तोसे मोर। घायल करत जुलफ की झलकनि सालत आँखिन कोर॥ झूलत नहीं भौंहकी मटकनि दूजे जोबनजोर श्याम सखे गले लागी रहौंगी इतनी मोर निहोर॥ २६६ ॥

परजकेख्याल धीमताल ॥

प्रन टारे न टरो। रामचरन जुग

आनि परो ॥ रामसिया पद प्रीति निरं
तर ताजि कुलधरनि धरो । शेश महेश
सुरेस विधाता काहू आसनरो ॥ श्याम
सखे सरनागत मांगत निसुदिन ध्यान
धरो ॥ ३०० ॥

टप्पा चलता ॥

लागानी सांवल राजीसे यारिया ।
श्यामसखे लागी पनिघट यारीया ॥
बिरह भरी धरि गागारिया ॥ ३०१ ॥

जती पञ्चाध्याई ॥

ठाढ़ी कदम तरे साँवरी सखी धरि

गल बाँहिहो। कब ऐहै मोरे रावला ह-
मरी सुधि नाहींहो ॥ ध्यान धरी ओहि
साँवरे सारी रात बिताईहो । कवन कहै
सैयाँ रामसे मोरि दशा बनाईहो ॥ कैसे
मिलौं सैयाँ जाइके सखि लाज बड़ीहै
हो। जुल्फ लटक बाँकी अदाँजिय
माह गड़ीहैहो ॥ बिरहिन बावरि जानि
के सपना में मिले आईहो। श्यामसखे॥
वांके रावला मोरि आस पुराईहो३०२॥

सुरताल ॥

आए आए कंतजी आए। पिय का-
रनमैं मंगल कीन्ही करिपांचो अतवार

त्रिकुटी गङ्गा जाय नहायों शिव पूज्यों सौबार। भवन भवानी के वर पायों लग आजु परजंत ॥ श्यामसखे सब आस पुरायो भई बिरहकी अंत कंतजी आए ॥ ३०३ ॥

घनाक्षरी ॥

किन बिलमायोरी। बारीबयस सखी कंपति रहति दुख आमितमदनकर जरत झरत मद आँगियां अंग भिजा योरीवे ॥ मास असाढ़ बूँद बरसावन सावन सबसखि झूल झुलावन। भादौं रैनि भयावन सखिरी हियरा मोर डेरा

वन । आसिबन कमल कली बिगसायो
रीवे ॥ कातिक दिनकर अरघमनावति
अगहन मांग कढ़ाइ बिलखि पिय
बिनु गुनिगुनि मन श्यामसखे मोरी
अँगिया जोर जनायो आयो गरवाँ
मोरे लायो री वे ॥ ३०४ ॥

खिमटा बिरही ॥

कदम जुड़ि छहियां नाजैहों रे ।
जेठ मास की धूपचलतु है वारी सी
जिरा डाला जैहौं रे ॥ बाबाकी प्यारी
दुलारी बलुमकी बारी कमर बल खाजै
हौं रे । श्यामसखे सैयां तिरछी नजरि
या रघुबर हाथ बिकायजैहौं रे ३०५

लावनी ॥

कबऐहो लाल जुल्फवाले हो हमरी गलियांना। चढ़ीं अटारीअली अली सभलली ललकिललचाहिं॥ घाटघाट सरजू तट कुंजन पेन्हे जरकसी ताज मनमोहनि मुसुकानि रंगीली वैंची कड़ी कमान॥ पलक पलक सभ ललक बिरहिनी श्यामसखे हित लागि। एक बार नेक दरस देखाजा बिरहपीर के हरैया॥३०६॥

लावनी जलद ताल॥

तेरी सूरतके मतवाले दिलवर दे

खाउरे छबिवाले ॥ रूप सुधारस नेह रसीली अँखियाँ पियाउ प्याले। गरम रहत मेरीसीस दिवसनिसि धरि दे हाथ रसाले॥ श्यामसखे बिरही रस चाहत सुनु दसरथ के लाले॥ ३०७॥

पूर्वी॥

मांडा पिको मिलादे हो रतियाँ। हो रहिहौं बनमा लतियाँ॥ श्यामसखे जो पिको मिलादे ताको मैं वारि दिहों छतियाँ॥ ३०८॥

पद श्रीहनूमानजीके॥

झँझौटी सुरताल हालिया॥

सुमिरु गुमानी हनुमानी हरु पीरके

अंजनीके प्यारे औ दुलारे जो समीर के ॥ संत जन उदधि रतनसुर स्वारथी सुर कुल मंडन हरन महिभारहैं। चारो फल भक्तिभाव देबे को उदारहैं॥ कोटि कमनीय अति सुंदर ललामहैं। धारे कोटि चन्द्रकला आये जनु राम हैं ॥ श्यामसखे सिय भक्तिमांगे बरदा नसे।अवधके राजा महाराजा हनुमान से ॥ ३०६ ॥

झँझौटी सुरताल जलद ॥

हनुमतहु कुवर रजाय तेहारे। उल टतहैं पलटत पलहीमें कोई यामें नहीं

रोकनिहारे ॥ संकट हरन सरन सुख दायक वंदौं छोरन बेद पुकारे। जो सुर नर मुनि लायक नाहीं ताको करत न लावत वारे ॥ ध्वजा धौंस गदका लिये डोले संतनके निसुदिन रखवारे। श्याम सखे हमरी सुधि लीजै रामसियाजीके प्रान पियारे ॥ ३१० ॥

तेरी हनुमान विरद सांचो। चहुँ जुग विरद विदित जग मानत कहत पुकारि वेद सांचो ॥ करिके भक्तिकियो बस रघुपति निसुदिन चरित रहत राचो। देहु भक्ति जन श्यामसखे को फिरि नाहिं और द्वार नाचो ॥ ३११ ॥

बाँके हनुमान अरज मेरी । जन्म धरे करजोरि कछु चाहौ कीजै नयन चितै फेरी ॥ दुसमन बहु लागे यहि तन में ताको दूरि करो हेरी । सीदत श्याम सखे निसुवासर राखहु लाज विरद केरी ॥ ३१२ ॥

मेरे हनुमान अवध वासी । अवध राज दियो राम कृपा करि अखिल लोक भव दुख नासी ॥ जो तोकों निश्चै करि ध्यावै ताकी अष्ट सिद्धि दासी । अभिमत श्यामसखे जन चाहत रघु-पति चरन सरन दासी ॥ ३१३ ॥

जाके हनुमान चरन आसा । ताकी

सकल मनोरथ करिहैं वरदीन्हो रघु-
पतिदासा ॥ जो मन वच विश्वास बढ़ावै
संकट वेगि करैं नासा। निश्चै श्याम
सखे अपनायो दीन्हो अवध नगर
वासा ॥ ३१४ ॥

गौरि रागिनी एक ताल॥

कृपा करु वायु तनय यक बेर। करु
फेरनि हेरनि सुखमा सी रीति सदा की
टेर ॥ मेरो मन सीपी तुम स्वातिक अब
कीजै नाहिं देर। श्यामसखे तेरो सरना
गत अन धन ढेरम ढेर ॥ ३१५ ॥

हठीले राखिले प्रण मोर। दूजो नाहिं

सरदार हमारो तुमसम जोरमजोर॥ गगन हृदय तुम बाल दिवाकर वसि कीजे घर तोर । श्यामसखे सुरईश बचावत तेरी भौंह मरोर ॥ ३१६ ॥

दंडकगौडसारंगतालझप ॥

सदाजैतिकपिराज किंजल्कसन्निभ वदन सदन छविकदनारिपु रावनारी । कोटि कंदर्प्प सम तेज रविद्युत छटा कोटि ससि सदृश वर ब्रह्मचारी ॥ देव कीट कुंडल ललित अलक कुंचित कलित शत्रु दल दलनकटि घंटधारी । अरुन लंगोट अतिमोट घंटाज्जुगल

पादुका जलजपद पाद चारी॥ देवतुल
सीमाला जुगल उरसि आय तलसे
अरुन मन हरन तन मौंजि सूत्रं।
गदा गिरिधर सदाध्यान सिय रामको
केशरी सुवन ईशान पुत्रं॥ देव देवे
श्वरं सदै करुना करं उदधि पारंग
परम तत्व ज्ञाता। विकट संकट हरं
मंत्र परमुंचनं राम रस रसिक गण
राज भ्राता॥ देव पंच मुख हस्तदश
सकल आयुध लिये वरद सरदार जन
शत्रुशालं। देहि हनुमान पद प्रीति
नित आपनी श्यामसखे शरण तव
रक्ष पालं॥ २१७॥

सदा सुमिरु हनुमान वरदानि दाता किये सुमिरन सदा खड़ो जनु रहत हैं मानु विश्वास मन मात ताता॥ गई बहुरि निहार बेद गावहिं चार वंक विधि अंक हर द्रवत थोरे। विदित विरदावली अंजनी सुतकी दूसरो देखियत जगतकोरे॥ विषय सुख पुत्र धन धान्य दारादि फल सुलभ नाहिं होत बिनु दृष्टि तोरे। एक मोहिं आस विश्वास हनुमान की श्यामसखे त्राहि हरु त्राश मोरे॥ ३१८॥

ठुमरीगौरीरागिनी जलदताल॥

मोरि सुधि करिहौ कब हनुमान।

उथपे थपनि थपनि उथपनिहौ सांचे प्रभु मूरति भगवान ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि किंकरी अपने जनको राखत मान । श्यामसखे पिय तोर भरोसा वीर बीर बाँके बलवान ॥ ३१९ ॥

कहौंमैं कासौं अरज पुकार । कवन सपूत पूतहै जाको कौन कुबेर खोलै भंडार ॥ दानी बड़ो सूरमा साहेब पवन कुमार अपार उदार । श्यामसखे मोहिं दृढ़ विश्वासा पूरन करिहै आस हमार ॥ ३२० ॥

सारंग रागिनी जतीताल ॥

जो कोई दुनीचहै धरे ध्यानकी ।

ताको अष्ट सिद्धि सब करिहैं श्रुति सिद्धांत प्रमानकी ॥ जोरन तोरन गई यहोरनफोरन कलुष पषानकी॥इष्ट करे जप मंगल भूषे पीठ परे नहिं प्रानकी ॥ भागत भूत पिशाच निशाचर नाम लेत हनुमान की। जिनके हृदय बसत निसुवासर राम लखन अरु जानकी ॥ कहँ लगि कहौं अमित विरुदावलि जा- नत बेदपुरानकी। सुरदुर्लभ जगमें सुख करिले गति पावै निर्वाणकी॥श्यामसखे रघुवीरसभामें पावैबीड़ापानकी३२१॥

आरतीहनुमानजीकी ॥

आरति बायुतनै प्रभु तेरी। करुमन

काम सिद्धि सब मेरी आरति राम आ-
पु से कीन्हा। चवँर छत्र ब्रह्मादिक
लीन्हा। पंच वदन दश भुजा बिराजै।
शूल सैल पवि मुदगर भ्राजै। इन्द्र
वरुन जम हैं दरवानी। नाचें रंभादिक
स्वर ठानी। पंचवदन कपिवर की
आरति। दुख सुख संकट काम सवां-
रति॥ अभै दानि निज जन के दायक।
श्याम सखे के सदां सहायक॥३२२॥

देशरागिनी जलद ताल॥

बरदानी समीर कुमार। शंकर के
सुत बीर महाभट दहिने हाथ पहारा॥

बायें गदा कोटि अरि तोरन तन सेंदूर सँवारा । क्रीट मुकुट भल कुंडल भ्राजै उर मुक्ता मनिहारा ॥ जनु गिरि गेरु ऊपर गुरु द्विज फनि बैठेकरत विचारा॥ घंटा सहस चमक अति सोहै मोहै कच छिटकारा । त्रिभुवन लोक जीति निज बल ते कटि मेषल जनु धारा । उपमा वायु तनै की अगिनित को कवि वरनै पारा ॥ श्यामसखे नित ध्यान हमारे रसना नाम तुम्हारा ॥ ३२३ ॥

अथ हनुमत ऽष्टकनिगद्यते ॥

ॐ हनुमताय नमः । कपि जुग पिं·

गल नयन धरं ॥ श्रुति कुंडल चारु कपोल वरं। रघुनाथ कथा रसिकं विमलं ॥ प्रणमामि हनूमत पाद युगं। कनकारुन भीषन भीम तनुं ॥ बिग सत्तरुशैलगदाधनुषं ॥ मुखपंकजपंचम नोहरनं ॥ प्रणमामिहनूमतपादयुगं ॥ सुर मंडन विश्व भयं समनं। परमाद्भुत राम कथा रमनं ॥ सुर वंदित ब्रह्म शिवादि तनुं। प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥ धृत शूकर सिंह सुपर्ण मुखं। हय मद्भुतबानर बिश्व सुखं ॥ कृत नाशन तारक बिश्व भयं। प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥ भवदीप सुधा चरितार

मितं।कृत मानस राग नमींमुंदितं॥नहिं सिद्धि मनोरथ तस्य भत्रं। प्रणमामि हनूमत पाद युगं॥ हरि मर्कट ह्रींमिति मंत्र परं। सतमेव जपे यदि नित्य नरं॥ भव भूपति भूति करोतिचसं। प्रण· मामि हनूमत पाद युगं॥ नचरात्रि लिखे यदि दस्तवकं· शुभ वास सहोम जपादि युतं॥ अपि तस्य भवंति सुतं शुभदं। प्रणमामि हनूमत पाद युगं॥ इतिऽष्टक श्यामसखा कथितं। पठ नाक्ष वणाच्छुभदंचनृणा॥ नरबीर भवेप्पससा विजयं। प्रणमामि हनूमत पाद युगं॥ ३२४॥

नमोस्तु राम सेवकं । त्रिलोक मेक
देवकं॥परात्परं महोदितं ।भजेहमंजनी
सुतं॥धराधरंधनुर्धरं । कु-चंडमुंडमर्दनं॥
गदाधरंगणेश्वरं । भजेहमंजनीसुतं ॥
सुरक्त चन्दनार्चितं सुरक्तमाल्याधृतं॥
किरीट कुंडलानितं भजेहमंजनीसुतं॥
महाबलेश्वरेश्वरं । महोदधीसपारगं ॥
मदादिदोषवारनं । भजेहमंजनीसुतं ॥
वुभुक्षिवाटिकाफलं॥विमर्द्दिरामणिर्वलं।
दशाननं भयावहं । भजेहमंजनीसुतं ॥
त्वदीय भक्तिकामदं ॥ करोतियेनमा·
नसं । नप्राप्नुवंतिवैभवं । भजेहमंजनी
सुतं ।त्वदीयऽष्टकंशुभं ॥ पठंतियेपिशा

दरं। लभेतिमानसेसितं ॥ भजेहमंजनी सुतं।कपीशपादमाश्रितं॥सुश्यामसख्यु दाहृतं । भजेहमंजनीसुतं ॥ भजेहमं जनीसुतं ॥ ३२५ ॥

श्रीदेवीजी

हमीररागिनीझपताल ॥

सकल सुख करनि जै राम जाया। युगलपद पद्म धरि सत्यकरि कहतहौं तोहिं बिनु मातु नाहिं कोइ सहाया॥ तुमहिं जग जानकी अज्ञ तमभानकी दानि अस्थानि घट घटकी बासी। ग्रासदाता तुहीं बासदाता तुहीं आस

दाता तुहीं त्रासनासी ॥ तुमहिं जगमो-
हिनी भारनी तारनी रसिक उपकार-
नी वपु अनंगी । चहत सखे श्यामसिय
राम छबि सततहृदि राम घनश्याम
नित राम अनंगी ॥ ३२६ ॥

कद जानकी जानि जन हेरिहौंजू ।
कनक मंदीर रुचिर सैन दंपति रहत
किंकरी मानि नाम हेरिहौंजू ॥ कररत
रस रहस मिसु लालजू ते कछुकबोल
बिहाल सुधि मेरिहौंजू । श्यामसखेओ-
र कर जोरि पिकदानकर बिहसिमुख
पान पिक गेरिहौं जू ॥ ३२७ ॥

एकमोहिं आस बिश्वास जियजान

की। बचन मनसा कर्म साखि दैके धर्म सपथ सतशंभुदै आन हनुमानकी। देवि यद्यपि समरथ सकलजगत त्रैका· ल महदेव मनुजेश अरुशेश शिवभान की॥ तदपि नाहिं एक मन धरत काहू बिषे काजनाहिं चारि फल सुगति नि· र्वाणकी। चहौंनहिं चंचला भूति त्रय पादकी कर्मफल आस नाहिं लाभ मघ वानकी॥ किंकरी किंकरी बहुरि शंत किंकरी इष्ट उछीष्ट भवदीय रजधान की। देवि जीवों जब लगि जगत पीवों तबलगि अमृतनाम रसनालियेभक्ति गुरु ज्ञानकी॥ राम सिय सिंधु छबि

मगन मन मस्त रहि श्यामसखे आश महाराजा महारानिकी ॥ ३२८ ॥

सहाना सुर जलदताल ॥

जानकी सुजानी महारानी आस रावरो परो। माया कूप रूप छुटिबे को छवि नाहिं कीजे वेगि सोई जासों छूटे जगतांवरो। अगमतिहारोधरगमरसिकनमन विधिहरि नाथहु को नाहिंमन जावरो ॥ कीजिये मनासिवासी महल टहलदासी खासी खवासी में सखे श्याम छवि बावरो ॥ ३२९ ॥

भैरवीरागिनी झपताल ॥

जैतिपरमेश्वरीपाहि वानी। शारदा

नाम जग विदित पद्मासनी त्राहि जग दंबिके शूल पानी॥ अबुध को बुध भरे असतको सत करे सहज औढर ढरे ब्रह्म रानी। द्रवत जेहि ओर दृग कोर कुछु थोर ह्वनाकपति ईश तेहि कर बखानी॥ जैति मुखचारनी संतउपका रनी विबुध कुलतारनी असुर हानी। श्यामसखे सरन मोहिं राखिले भारती सुजश जग तोर सुनिले भवानी ३३०॥

भैरवी रागिनी झप ताल॥

जैति कमलेश्वरी आदि रानी। कालिका मातु निज अमृत धारावली

विदित तिरहुति में वेद भानी॥ दिव्य लछना सकल चवर छत्रादि वर ठाढ़ि चहुँ ओर लै पानदानी। कमल कर शंखचक्रादि आयुध लिये मकर वाहन किये असुर हानी॥ अमित महिमा अमित रूप नारायनी जनक पुर जानकी जानि जानी॥ श्यामसखे मोहिं कमलेश्वरी की सरन त्राहि आरत हरन बिमल बानी॥ २२१॥

पीलू के खिमटा॥

सकल सुख सदनि करु देवि दाया। विनै सुनु त्राहि काली कमल लोचना

तरौं भव घोर सोई करु उपाया ॥ देवि
त्वमसिसरवज्ञ गुन भिन्न त्रय गुणमयी
अंत श्रष्टादि नाहिंजान सोपी। निस्सर:
त तव वदन ज्वाल मालानल सकत
नहिं रोकि विधि विष्णु कोपी ॥ देवि
सकल मुनि देव निज तेज तव आर्पि
दिये कोटि दिवसेश जोतिस्सरूपा।
काम छवि कोटि शशि कोटि दुति
वदनकी पाहि मा रक्षपदनमीत भूपा॥
देवि जैति बानासुरो वरदवानी वसासि
परत परत मपरा परमइष्टा । सूक्ष्मतर
सूक्ष्म अस्थूल ते अधिक अति अमल
अनूपम अनघ अति गरिष्टा ॥ देवि

जैति परमेश्वरी परावामेश्वरी त्रिपथ
गा पुन्य तर तीब्रनामी । श्यामसखे
शरन कमलाशनं गेहनी वापिका
सुकवि हृदि हंशगामी ॥ ३३२ ॥

ठुमरी ॥

हम गई लोभानी देखि सखी अति
सुंदर साँवल नीकी छटा । नइ श्याम
सरोज उरोज कली जुत दामिनि नूतन
श्याम घटा ॥ करमाल बनी कटि में
खलनी मुंडमालधरे शशि भाल फटा ।
झलकैं मणि कुंडल ओर कपोलन
श्याम शरीरमें श्याम जटा ॥ कर मुंड

कृपान कराल धरे नइ जोगिनिसे मुसु कांति लटा। शिव बाहिनि चाहिनि श्यामसखे निति दाहिनि सांझ विशंभु भटा॥ ३३३॥

चंचरीक एकताल॥

देवी दीन को दयालि काली और नहीं देखौं। तुम समान तुमहीं मातु और काहि लेखौं॥ जो जोतू असरन आय अभे बाँह दीन्हा। नाक नाक पति अजादि रक्षा सुर कीन्हा॥ दुष्टन सँघारि भक्त तारि बार बारे। तेरे पग पूजि राम रावण बल मारे॥ तेरे बिनु दरस परस सुर नर मुनि माहीं। जप

तप ब्रत कोटि करे सिद्धि होत नाहीं ॥ पतितनमें पतितमहा मंद करम मेरो । श्यामसखे सरन नैन कोर कृपा हेरो ॥ ३३४ ॥

लोभानी छबि देखिकै देवी महारानीकी । कटि केहरि केहरि पर निरखत कर कमलन शूल पानीकी ॥ बंक भृकुटी चितवत असुरन दिसि पांच बाण संधानीकी । श्यामसखे मुखक्यों करि बरने श्रुति शारद सकुचानी की ॥ ३३५ ॥

चंचरीक परज के एकताला ॥

नौमि नौमि नौमि काशि वासिनी

हेमा ।मंगलमोद चंद्रवदनी अष्ट सिद्धि रिद्धि सदन कदनि दोष दारिद बहु शूल वपुष धारनि अनरासिनी हेमा ॥ सदाशिव मनसदा भिरामिनीराहसरा मिनी सुजन स्वामिनी अभित नामिनी दामिनी दर्प हारिनी हेमा । भैरवी कालिका तारा धुमावति षोड़शिवंगला प्रभावति छिन्न नाथ भुवनेश्वरि सकल काज सुधारनि गरुड़ासनि हेमा ॥ ध्यावत शिव शनक सनंदन इन्द्र वरुण नंद को नंदन सांभवि सरदार त्रिकुट चारिनी हेमा । महिष मर्द्दनी शिवे त्व- मेव त्राहि श्यामसखे देहि भक्ति चरन

रज हुलासनी कमलाशनी यमत्राशनी हेमा ॥ ३३६ ॥

जंगला सुरताल खिमटा ॥

मोहिं जगदंब अवलंब पदत्रानकी । जाहि पद आस सुरईश जगति गति दानकी ॥ हेरु विरदावली विदित जग जानकी । चारु मोहि फेर कर कमल कल्यानकी ॥ करे सत सपथसखेश्य।म मघवानकी ॥ ३३७ ॥

गुह्येश्वरी रानी आदि भवानी तूं जगकी ठकुरानी । विधि हरिहर पद पदुम पलोटत अष्ट सिद्धि वरदानी ॥

नर तारनि नैपाल निवासिनि वासिनि
अभिगति अंतरजामी । सिंहासन गढ़
सिखर मनोहर निज जन मन वि-
श्रामी ॥ मुनि किन्नर गंधर्व महीपति निसु
दिन करत गुलामी । तारति तरनि सर-
निजै दुर्गे कवि कुल कमल प्रकासी ॥
नाहिं अवलम्ब छाड़ि जगदम्बे श्याम
सखे तेरो दासी ॥ ३३८ ॥

काफी रागिनी जती ताल ॥

सुनिये अरज हमार काली कृपाकर-
नि मा । एक आस बिश्वास तेहारो
दूजो नाहिं आधार ॥ नाहिं निर्वाना बिमान

चहतहौ नाहिं चाहों फल चार। चरन कमल अनुराग मधुप होइ सुमिरन नाम तुम्हार॥ नव अम्बुदतन श्याम-सलोनी छबि सेंदूर लिलार। सहित कुटंब दिनेश महीसुत बैठेमेघ पसार॥ लह लह जीभ दशन कछु लाली लो-चन तीन उदार। प्रगटे नभते दामिनी मानो कोटिन शशि उजियार॥ जय भव भजनी जन मन रँजनी लीला अ-मित अपार। श्यामसखे नाहिंछाड़वी सखिया आपनी ओरनिहार॥२३९॥

ख्याल बड़ाताल॥

मा तेरो आसरो देबीदनुज दलनि

हो । तेरो पदरज शीश चढ़ाये काहूते ना डरो ॥ आसनहीं मोहिं शंकर विधि की सुर नर मुनि बपुरो । श्यामसखे जो दरसन पावौं तव भव सिंधु तरो ॥ ३४० ॥

अलैया ॥

जयति हिमिगेहजा आदि माया । प्रकृति मूला धारन भेव सून्याकार तत्व जोगीश इति वेदगाया ॥ इंगला पिंगला सुखमना अष्टदल बंकनादि ज्ञाता मलाक्षी । रूप वेदार्ष चर अचर अचर थल ब्यापिनी इड्य सर्वाभि सर्वे

वसाक्षी॥ब्रह्म ब्रह्मीब्रह्म बिरजवैराटिका
जननि हरि हर पिनाकी प्रचंडी। सहस
भुज सहस मुख सहस सर्वांगिनी शूल
चर्मासि परिघा भुशुंडी ॥ राम तारा
वदत कृष्ण वपु कालिके छिन्न सिर
नृहरि अवतार दशधा । मारि खल
तारि जन विरद विस्तारि बहु भार
देवारि दलिअचल वसुधा॥त्रयास्त्रिंशति
शक्ति भृकुटि मवलोकयति कोटि
तड़िदाभ मुकुटा गदांदी। क्रीट कुंडल
महा मोल चैलांगधाहार मुंडावली बहु
जुगाधी ॥ जैति श्री सांभवी कालि
करुनामयीवामदक्षीनमंत्रवपु विधात्री।

प्रबल कलि काल मोहिं पाल श्रीका-
लिके श्यामसखे सरन भव भीत
हर्त्री ॥ ३४१ ॥

अस्तुति येकताली ॥

कालि कालि भुवन पालि भाल लाल सेंदुरं । शिवे सुरेंद्र सेवितं अजादि देव वंदितं प्रफूल कंज लोचने दरिद्र दीन आदरं ॥ मलेक्ष मर्दनी शिवे सलाक आदि जोगिनी निशुंभ खंग खंडि खंडि गर्दि गर्दिकंधरं । श्याम सखे चंडि भक्ति चाह सत भारती नतोहमूर्विजा प्रिये प्रसन्न देहिमें वरं ॥ ३४२ ॥

देवी बानी ॥

जै शंकरकी महारानी मोरहीरही। षोड़श कला आपु तन धारे यश फैलो सारे मही ॥ आदि कुमारि बिना तोहिं पूँछे विधि हरि शंभु न करत सही। श्यामसखे पर कृपा बिलोकहु दीजे वर देरी नहीं ॥ ३४३ ॥

जै जै विकट तन धारनी सुखधाम श्यामा हेमा। काटि शिर कर धरे धावति दनुज दानव भय दिखावति जोगिनि साथ नचावति आदि बामा हेमा ॥ खर्ग खप्पर जीभ लह लह दशो

आशा होत दह दह रुधिर नख सिख समर शोभा मुंड हस्ता हेमा । सरन श्यामसखे परेहैं नाम आसा को धरे हैं समन करु भवशोक ग्रस्ता छिन्न मस्ता हेमा ॥ ३४४ ॥

काली ध्यान धरत जिन मनते । अनधन लक्ष्मी कोटिन पावै ॥ घरमें रोग दोख नहिं आवै ॥ सखेश्याम रहत लहत चरननिसों संगति लावै ॥३४५ ॥

हरनि जरनि चरनधरों कालिके मन । भेष जलधिभवव्यालिके मन ॥

श्यामसखे जगजीवन तनको महिमा जाको अपार भैरव भन ॥ ३४६ ॥

चंडिके भवानी सुखदानी दुखहानीमा। चपल चलनि चारु नैना सोहै रतनार चिकनारे कारे मदभारे केशरानीमा ॥ महामूल मातंगिनी नाग पाश सारंगिनी सोहै अश्व बाहनी वराननी जुगानिमा। श्यामसखेमहारानीसरना आपरोंमैंआनी दीजैमन मानीवरदेवानी वरदेवानीमा ॥ ३४७ ॥

सुरसहानातालजलद ॥

सारदा भवानी वरदानीमा। श्याम

सखे गुणगावै रिद्धि सिद्धि फल पावै सुजस लुडावै सुखसानी सुखखानी मा ॥ ३४८ ॥

सहानानायकी ॥

कंकाली कंकाली काली कालिनी करालीमा । तुहीं दुर्गा तुं भवानी तुहीं वरदानी ध्यानी मानीनी गुमानी हानी दानिनी दयालीमा ॥ मालिनी बिशालिनी सुपालिनी कपालिनीगो भवने भवानी भगदानी खल खाली मा । रुद्रानी रमानी रानी रमसानी करु कल्पानी श्यामसखे जानवि अपानी मोंहि पालीमा ॥ ३४९ ॥

एकतालापंचम रागिनी ॥

देवीके दरबार मनाउँरी। सिंहासन पर मातु विराजित छवि उर लावोरी ॥ सुर नर आस छोड़िके ध्यावों अनधन पायोंरी। श्यामसखे देवी दिल हेरे सु-जस लुटावोंरी ॥ ३५० ॥

अथ श्रीसरस्वत्याऽष्टकनिगद्यते ॥

समस्त देव वंदिता। उमा रमा सु सेविता ॥ अनूप रूप षोड़शी। प्रकाशिनी महोरशी ॥ नमोस्तु वाक्य वादिनी। सरस्वती नमोस्तुते ॥ सुचंड मुंड दारिनी। त्रिशूल शक्ति धारिनी ॥

विशेष दास तारिनी। स्वइच्छया विहारिनी॥ नमोस्तु वाक्य वादिनी। जगज्जयी जगन्मयी॥ सुरक्षिनी भवोलयी सुशंकरी शुभंकरी॥ सुरेश्वरी मनोहरी नमोस्तु वाक्य वादिनी॥ हिरण्य गर्भ धामिनी। विलास रास रामिनी॥ समस्त लोक स्वामिनी। यशेश्वरी सुनामिनी॥ नमोस्तु वाक्य वादिनी। सुतान कोकिला स्वरा॥ प्रबन्ध छंदनी परा। अकार एहि हरालिखे॥ अर्द्धरात्रिये नरा। नमोस्तु वाक्य वादिनी॥ त्वमेव मुंड मालिका। त्वमेव त्राहि कालिका॥ त्वमेव दुष्ट शालिका।

त्वमेव भक्त पालिका ॥ नमोस्तु वाक्य वादिनी । नमो दशा वतारिनी ॥ सुखे मुखे विहारिनी । महाबुधेश कारिनी ॥ विमूक दुःख दारिनी । नमोस्तु वाक्य वादिनी ॥ सरस्वती स्तवं मुदाकृतंतु श्याम सख्युना । प्रभातवै पठेप्यदा सरस्वती वसेत्सदा ॥ नमोस्तु वाक्य वादिनी । सरस्वती नमोस्तुते ॥ ३५१ ॥

भजन महा विद्याजीके त्योराताल ॥

जय जय सुखदानी आदि कमला हे । सिंह गर्जनी सिंह बाहनी अरुन वसन विशेष मौंहनि मुंड माला उर

विशाला रूप कमला हे ॥ नवो विद्या संग सोहत दनुज दानव दल विमोहत सकल मुनि जन भौंह जोहत ब्रह्म रूपा हे। मातु तोहिं महेश ध्यावैं तबहुँ सुजस न पार पावै निगम नित नित नेतिगावैं नमित भूपा हे ॥ तुमहिं सब जगकी पसारा तुमहिं तीनों भुवन भारा तुमहिं करुनाकर उदारा गंग धारा हे। दीन श्यामसखे तुम्हारा त्राहि त्राहि सदा पुकारा खुशी हो कीजे उबारा उग्र तारा हे ॥ ३५२॥

कलंगड़ा रागिनी धीमताल ॥

प्रथम कालिका नाम दुतीया तारा

वरदानी । तृतीय षोड़शि देवि चारि भुवनेश्वरि मानी ॥ पंचे भैरवी षष्टे छिन्नमस्ता कर माथा । सातें धूमावति अष्ट वगला धनु माथा ॥ श्रीविद्या नव नाम है दशयें महालक्ष्मी घरे । नित्य श्यामसखे सुमिरत जपत संतन को रक्षा करे ॥ ३५३ ॥

कलंगड़ाके धुनि जलद ताल ॥

विन्दवासिनी भवानी वरदानी वरदे । औढर ढरनि मातु अखिलेश्वरी खाली घर भरिदे ॥ जो तेरो जस गावत ध्यावत अष्ट सिद्धि करिदे । श्यामसखे

भव फंद परे हैं कीजे दिल दरदे ३५४॥

कल्यानी करु काली कालि काल कर त्रिशूल डमरू मुंड माला तनलाल बसन लाली लालि लाली॥ चौंसठिसै जोगिनी संगे नाचति गावतिदैदैतालि तालि ताली। श्यामसखे मोहिं मातु भरोसा बरदाइनि रक्षपाली पालि पाली॥ ३५५॥

विहागके धुनिएक तालीताल॥

अंबिके देवी दया करु मातु। मनि मै छत्र मुकुट सिर सोहे बहु दामिनिसी गात॥ तेरी सौंह भौंह चितवनि से

केते को बनि गई बात। श्यामसखे मा तो बिन देखे निसु दिनजी लल- चात ॥ ३५६ ॥

अंबिके शरन परो तेरो आई। जो जो सरन परे तेरी जननी ताको करति सहाई ॥ शरनागत आरति भव भंजनि कीरति नित नित गाई। श्यामसखे मन बच क्रम दासी दीन्हें क्यों बिसरा ई ॥ ३५७ ॥

बंगाली रागिनी जलदताल ॥

जै जै जगतारनी माया बँगला मु खी। तेरी अति महिमा माहि मंडल

कोइ कोइ ज्ञानि लखी ॥ विधि हरि हर सुर अन्त न जानत बरनत शारद शेष थकी । श्यामसखे वरआस मनावतदीजै कीजै आदि सखी॥ ३५८॥

झँझौटी सुरताल जलद ॥

अन्न पूरना भवानी तेरी पैयांलागों। हिमगिरि सुता जगत सुखदायिनि कस नहिं हमरी बेर जागो । करोध्यान अभिमान त्यागिके तेरो गुनगन अनुरागों। श्यामसखे नित आसलगी है रघुपति चरन शरन मागों ॥ ३५९।

गौरीरागिनीजलदताल ॥

सरस्वती दीजै बरदानी दीजयवर दानी। कोटि कांगड़े मातु विराजित विंधेश्वरि ठकुरानी। श्यामसखे मेरी आस पुरादेदिलसेदेवीमहारानी॥ ३६०

काफीरागिनीधीमताल ॥

सेइहों मैं तो आदि भवानी। तारा नाम दिवस निसि जीवन दोसरे तेसरे कोनहिं जानी॥ जो कुछु कूर कपट है जिय में सो मेरी मातुकरो पहिंचानी। श्यामसखे याही बर मागत शुद्ध करो मेरी बंकटबानी॥ ३६१॥

गाईहौं गुन मातु भवानी । पूजा पाठ सदा जननी की हमतो इष्टदेव करि जानी ॥ और सभैको और भरोसा मेरे आदि जोति शिवरानी । श्यामसखेमन बच क्रम सरनै लिखौं न कछुक कपट छलसानी ॥ ३६२ ॥

रागिनी मारू जलदताल ॥

कृपासौं क्यौंनहिं कीजै अम्ब । कृपा कर निजढरनि ढरावनि समरथ पालनिअम्ब ॥ भक्ति भाव जोरनि जन जामिनि नामि निरूप सदम्ब । श्यामसखे पदपंकजआसा दूजोनाअवलम्ब॥ ३६३

श्रीमहादेव ॥

झँझौटी जती ताल ॥

गिरिजा शिव ध्यान संभारं। आसन लाय जोग धरि बैठी चहुँ दिशि पलक न टारं ॥ भोजन पवन तपति पंचाग्नी शिव शिव नाम अधारं सुता विलोकि हिमाचल रानी नैन बहै जल धारं ॥ वेगिहिं विप्र पठाय उनापित खोजन जोग कुमारं। फिरत फिरत गिरि मेरु भुलानी देखा शिव करतारं ॥ कोटिकाम छवि शिव

मुख सुंदर चौदह बरष कुमारं। द्विज कर जोरि अछत दधि लावत शिव सिर तिलक सँवारं॥ जनु शशि छीन पीन हितकारन पूरनचन्द्रलिलारं। शोचत विप्र काह मोहिं दैहैं नाहिं घर सहन भँडारं॥ भरि भरि भभुति चले मग शोचत नापित भूमिपँवारं। द्विज गठरी मनि मानिक देखत नापित सिर करि मारं॥ बहुरि मोट भरि बान्हि गठरिया निज घर कहँ पगु धारं। सुनि हिमि नृप मन हर्ष भएहैं बजत अनंद नगारं॥ देखि बरात मध्य यक बूढ़ा गो सुत पर असवारं॥ श्यामसखे गिरिजा

समुझावति परिछहु शिव अवतारं । सो नाहिं मिटै लिखा विधि माई जो कछु करम हमारं ॥ ३६४ ॥

ठुमरी झँझौटीताल जलद ॥

लोभानी मोरी पारबती बरद वर देखि । त्रिभुवनसुखेछाड़ेअति कोमल नाहकतप तपती अंग भभूत डालि गलसेलीशिव शिव को जपती ॥ श्यामसखे बौराह उदासी चाहत करनपती ॥ ३६५ ॥

रागिनी चैत गौरी जलद ताल ॥

ना करब बावर वर भंगिया बिनु

ब्याही रहति वरु वारि सखी हे । चन्द्र वदन मृग लोचन नीरे गौरी अति सुकुमारि ॥ वर बौराह बघछाला ओढ़े बसहा पर असवार सखी हे ॥ छौरस भोजन खात खिलावत पूरन मोर भंडार । उनके गेह नेह कछु नाहीं भांग धतूर अहार सखी हे ॥ अब कस करब सुनहुँ हिमिरानी यह वर लिखा लिलार । श्यामसखे शिव अलख निरंजन देत पदारथ चार सखी हे ३६६ ॥

देश रागिनी जती ताल ॥

सखि बर बाउर कैसे करों । बरो न

उमत विरस वर भँगिया वरु जल माहिं परों ॥ बन बबूर बरियात टिकैहों गौरी लेई पाताल धरों। श्यामसखे हम उनकी चेरी बर बरि आय बरों ॥ ३६७ ॥

महेश बानी ॥

नेवति मँगावल अलखवर जोगिया हमें न चुमायब यहवर बाउर हेरोगिया॥ वड़े वड़े जटा सीस भाँग विष भखिया हमेना वियाहव गौरी धिय सुंदरि हे सखिया॥ वर जैसे खाकछाउर छाड़ि देहों वरदी ।फेरि फेरि लगन धरायब हे ननँदी ॥ कह जन सखेश्याम दृढ़

करु मतिया । यह बर गौरा तोरा त्रिभुवनहै पतिया ॥ ३६८ ॥

खिमटा काफी के ॥

छियाला जोन लागे देखत वर बौराह । तन अति पातर पेट भँडसार सिर जटा जूट जैसे करिया पहार । गरे मुंड माला सरप लपटाय ॥ धूरधारे अंग अंग फाटे बिमाय । श्यामसखे शिव बिना देखे ललचाय ॥ बड़े भागे मैना अस भेटलो जमाय ॥ ३६९ ॥

बंगला ॥

बूढ़ा न करिहौं जमाय मोरी धिय

बारी रहति घरना । आपु तन बूढ़ा बयलतन बूढ़ा छाउ रतन लपटाय अक वन बाँधे मोटरिया ॥ नाहिं मनसिज रस रीति हृदय कछु दीन्हो है मदन जराय । श्यामसखे मोरि धियवर लायक बूढ़ा की बलि बलि जाय त्रिभुवन दानी अटरिया ॥ ३७० ॥

देश रागिनी जलद ताल ॥

ए बावरो ना करब जमाई । नख सिख करिया भसम चढ़ाये बड़े बड़े दाढ़ भूमि फहराई ॥ ऊकल गावन को वर लाये विख पोटरिया कान्ह दबाई

को उबहत यह भसम को गोला को यह शूल उठाई ॥ मुख नाहिं दंत देह सब काँपत चिकुर सफेद चौथ पन आई । वरिये विधिहि सकल गुन आगर नंद नँदन वरो कुँवर कन्हाई ॥ हम नाहिं परिछब वतहजमाई परिछब मुँह खोरनाठ घुमाई ॥ सुनि सरहोजि के व्यंग वचन जुत शंकर मनमुसुकाई। जो छवि शिव तन एक अंग प्रति श्यामसखे विधि हरिहू न पाई॥३७१॥

सोरठ रागिनी जलद ताल ॥

असबरकौन वरे हो मनाइनि।

नगन जघन ओढ़े गज छाला हाऊ रूप धरे॥ भरि भरि चिलिम चढ़ावत गांजा भोरिन भांग भरे। श्यामसखे परिछो किन रानीं घर फल चारि फले॥ ३७२॥

गौरी ना करोगी नाह। कैसे हम परिछब बर बौराह॥ नगन कलेवर कच घन माल। विभुति भुअंगम ओढ़े बघ छाल॥ अमल उगंग दोउ आँखि झलमलात। देखि देखि मोरी धिय हँसि मुसुकात॥ कहे गौरी श्यामसखे मोरे जिय चाह। करम लिखल फल यहि भोलानाह॥ ३७३॥

खिमटा ॥

जोगिया कैसे बरों हो मोरी ननँदी हो मोरी ननँदी । जबसे सुनी जोगीवर कीन्हे छतिया शाले मोर ॥ घर वर खान पाननहिं साथी सुनि सुनि बातें डरों । श्यामसखे हमहूँ संगे जायब बेनियाँ साथे करों ॥ ३७४ ॥

रागिनी चैत गौरी जलद ताल ॥

हमे नाहीं परिछब वर बौराह । यह नउमत सखि गौरी कर नाह ॥ नयन अरुन के लेखे ले विष दाह । विष घर धारे सारे तन बौराह ॥ अज्ञान

वसन नहिं गर मुंड माल। गरल चिबुकतर चंदा फट भाल॥ हरखित श्यामसखे कोहवर गाय। यह न जमई सखि रहति सदाय॥ ३७५॥

दीपक राग जलद ताल॥

उतर दिशा से जोगि यक औलनि बूढ़ वयस बूढ़े चढ़ी बयलनि॥ अहें सखी हे हिमगिरि के घरे औलनि डमरू बजौललनिना। राज सुता लैके गोडवां धरौलनि ढिग बैठाइ के कर देखलौलनि॥ आहे सखि गौरी छबि निरखि लोभैलिनि धूनिया रमौलनि

ना । मैना बूढ़ लखि अति रिसि अल-
नि ॥ काहे बूढ़ावर तिलक चढ़ौलनि
आहे सखी हे गिरिजा माई के बुझौ-
लनि साज सजौलनिना ॥ मंडप तर
वर दुलही बैठोलनि । सुर मुनि गन
मिलि दुंदभी बजौलनि ॥ आहे सखी
गिरिजा शिव वर पौलनि श्यामसखे
गौलनिना ॥ ३७६ ॥

गौरी रागिनी खिमटा ताल ॥

फकिरवा बैल वाला रे । खिरकी
ऊपर बजत वारी अनहद सिंगी गान ।
गिरिजा मेरी बसकरी वारी लै लै

मीठी तान। घरकी धंधा छोड़ती वारी
करती जोगी ध्यान ॥ प्रेम जादू
डारि के बारी हरि लई सब ज्ञान।
श्यामसखे शिव जोगियारे पूर करै
मन काम ॥ लेना वाला कुछु नहिं
वारी देने वाला दाम ॥ ३७७ ॥

जंगला सुर जलद ताल ॥

बमनारे जुड़ावों तोरी छाती।
मन इच्छा वर खोजि लिआये पुरुष
पुरान सुजाती ॥ दूलह आदि सनातन
आये साजती आरतीबाती। श्यामसखे
छवि देखि बराती मनहिं मनहिं मुसु-
काती ॥ ३७८ ॥

बिवाहमंगलगीत ॥

आजु तुहिंन घर मंगल गौरी ब्याह को । चलु चलु सखि गीत गाइए परम उछाह को ॥ जस गौरी धिय सुन्दरि चन्द्र लजावना । तस वर त्रिभुवन नाथ वरदहर पाहुना ॥ लक्ष्मीधरि हरहाथ सुखीर खिलावहीं कहि २ रस में वैन सबै सुख पावहीं । शारद कोहवर द्वार खड़ी रसभीजिये । जाने नदेउं हमहिं कछु दीजिये ॥ देन लगे हरहार लेहु किननागरी । भागिचलीं चहुंओर हँसत गोरी सागरी ॥ राजत श्री भुवनेश्वर कोहवर धाम हैं । ध्यावत सो

फल पावत पूरन काम है ॥ जो यह मंगल दिव्य वचन सुर लेहिंगे । श्याम सखे सबकाम कामारिपुदेहिंगे ॥ ३७९ ॥

तिरहुतिरागिनी जलदताल ॥

चलु हे मनाइनि राजदुआर । परिछनकरिये कनक लैथार ॥ सुन्दर अंग जटा सिरमौर । पहिरन पीत बसन तनगौर ॥ जसि सुन्दरि धिय राजकुमारि । तसबर मैन हरन त्रिपुरारि ॥ हरषि हरषि हर कोहबरलाय । श्याम सखे सखि सब फलपाय ॥ ३८० ॥

काफी धीमताल ॥

गौरी भाग तेहारो पायो शिव भर-
तार । अनगढ़ रूप अखण्ड जाति
नहिं बूढ़ बयल असवार । गौर बरन
माने मौर बिराजे शशिकुण्डल लट-
कार । जनु सित गिरिपर चन्द्रफनी
जनु जलद नषत परिवार ॥ मुंडमाल नव
लसत महाछबि पीत बसन कटिधार ।
सोहत जनु बहु शृंग तड़ित ढिग तापर
मदन बजार ॥ नवछौ प्रगट भये हैं जा-
सों नादब्रह्म विस्तार । सोडमरू निज
हाथधरे हर जनु आपन भंडार ॥ देखि

अलौकिक दूलहरानी निजमन कीन्ह बिचार । श्यामसखे अब भाग्यहमारो पाहुन शिवअवतार ॥ ३८१ ॥

इमनी सुर जलदताल ॥

परिछावोरी गोइयां दुलहा भल सुंदर है रंगिया । मनिमानिक मौर विराजतु हैअति भ्राजित सीस जटा गँगिया ॥ जबइंद्र कुबेर खड़े ढिगमें विधि विष्णु सुरेश सबै सँगिया ॥ जिमि श्यामसखे छबि गौरिबनी तयसहिं बर ईश मिलो मँगिया ॥ ३८२ ॥

गौडकेसुरजलदताल।

सखीरी आजु अनन्द बधाई। मुद मंगल हिमिराजदुआरे शम्भु। जमात मँगाई॥ हरदी दूब बेलकीपाती आरति करि परिछाई। श्यामसखे नहिं ब्याह बराती पहिले सुवन पुजाई॥ ३८३॥

हमीर रागिनीझपताल॥

आजु हिमराज के धाम शोभाभई। दिव्य मंडप अरुन तड़ित हीरावली पंक्ति गजमुक्त की चौक छविमैं कई॥ गान मंगल मची रमा शारद शची

गौरि हर हेरि लहकौर मुख में दई ॥ पानिग्रह जानि अतिहरष सुरमंडली प्रणव पटह प्रमुख भेरि दुन्दुभी हई । चारिफल खानि निर्बान पद सन्तत प्रद श्याम सखे ध्यान यह परम मान सघई ॥ ३८४ ॥

लगनी जतसारी दीपकी रागिनी
हालिया ताल ॥

कनक मँडपतर बैठल वर योगिया रे। अंग सोहै पीत बसन बड़ भोगिया रे ॥ जनु घेरि सिखर तुखार सुंदर तन दामिन रेकी। मनिगन

मौर गरे गजमोती हरवारे ॥ अंगन युग भुज मदन सवरवारे । सिर चारु चंद्रमा ललाम अधिक छवि पाव थिरेकी ॥ रती सखि गोरीतन रचति मयनवारे । पाटकी पाट बीवि लसत अयनवारे । दुलरी तिलरी गरेहारपहुंची करे कंगनरेकी ॥ गौरी तन नील सारी अरुन ओढ़नियारे । गंगा जमुनाकर धार सोहनियारे ॥ जनु सित शिखर बलाहक पवि धर शायकरेकी । कनक कदलि जंघ नूपुर पगनियारे ॥ अरुन कमल पग नख मनिगनियारे । जनु हरहर मन हेतु मदन दल साजलरेकी

रचि दुतितन लै चललीं मयनवारे। कनक थार करमंडप गवनियारे॥ नमति महेश पद कंज चितै हर हेर थिरेकी। विधि हरि गांठ जोरि फेरथि भँवरियारे॥ बैठल महादेवगिरजा कुमरिया रे॥ बड़े तप गौरीवरपावल श्यामसखे गावलरेकी॥ ३८५॥

ठुमरी चैत गौरी रागिनी जलद ताल॥

ना फिरति भांवरबर गोरिया। मन सकुचति करति विचार सखी हे। प्रति भूषन रवि शशि छवि छीनत गौरी रचित सिंगार। इनके सर्प मौर के

भूषन घिरत करत फुफुकारसखी हे॥ जोकन गोजर देखि डरत घरसोभइ शिव गले हार । श्यामसखे शिववर विधि रेखा अब को मेटनहार सखी हे॥ ३८६॥

सुर जँगला ताल जलद ॥

चलो देखन गौरी बिवाह सदा शिवको वरे। सहित भवानी मंडप राजैं गावत मंगलचार॥ परिछत महाराज औरानी वारत मनिगनहार। अलख लीला करे इन्द्र कुबेर चार मुख ब्रह्मा गावत तानतम्बूर। श्यामसखे

जगदम्बकृपासे अनधन लक्ष्मीपूर। हिमाचल के घरे॥ ३८७॥

ठुमरी झँझौटी जलद ताल॥

हरकी सुघरता देखी। मंडप तरु गिरिजा सँग सोहत अपनी भागनी रेखी॥ दम्पति हरषि आरती साजैं जानत ईश अलेखी। श्यामसखे गि-रिजा हर मूरति बिलग न होत निमेखी॥ ३८८॥

जंगला सुर जलद ताल॥

जोगिया रे जुड़ानी मोरी छाती। जबसे मैं जोगी बरकीन्हा नाहिं सनेह

कहि जाती ॥ आसन एक बैठी लखि मयना हरष न हृदय समाती । श्याम सखे कोहवरके लीलागावत बीती राती ॥ ३८६ ॥

ठुमरि झँझौटीजलद ताल ॥

लजानी गोरी देखि जती फिरत गठ जोरी । सर्पन मौर लँगोट फनिन के अहिमाला लसती ॥ ऐसे वरसँग जाय भवानी घर रहि कस करती । श्यामसखे पद पंकजपरसाति प्रेमघटै न रती ॥ ३६० ॥

तिरहुति लगनी ॥

साखि हे यह न देखल नाहिं नारी ।

समधी समाधिनि दुहुँकनाहिं बाटे केहि दिसि पारब गारी । शशि छिन सह जाकर मुख पंकज गज गतितनक मराली ॥ लोढधिय पाव परिछपरि पूरन जिन बरलिखल कपाली । मन सखेश्याम सुनहु हिमिगेहानि किंकरब गुनदोष मोरा । जल सुत निधिसुत महि सुत सत छन होथु सदापहु मोरा ॥ ३६१ ॥

ठुमरी बरवेके ताल जती ॥

जोगी हो गिरिजा नीके राखब । टहलिनि ज्यों करि पालवि बतियां

मिठी भाषब॥ छमि अवधिय अपराध किंकरिकरि उरआनब।श्यामसखेपैयां लागिहौं नितनित अभिलाषब॥३६२॥

जोगी हो इतही रमि रहना। गिरि जंगल भटको नहिं अब क्यों दुखसहना॥ हिमिगिरि की सुखसम्प्रदा तुमहीं सुख लहना। श्यामसखे हम किंकरी जुग जुग तोरि पहुना॥३६२॥

देश सुरताल॥

भोलानाथ भलाबर पाइरे। चौदह भुवन सकल सुख संपति सब तेरे घर

आई रे ॥ सुरनर मुनि ब्रह्मादि देवता करिहैं नित सेवकाई रे । श्यामसखे चिरंजीव मनावत बढ़ो सोहाग सदाई रे ॥ ३६४ ॥

लावनी जोगिया रागिनी ताल ह्यालिया ॥

सावली शिवकेसँगसोहै । चितचकोर पति प्रेम पियासी बदन चंद जोहै । शिवा की छवि वरने को है ॥ कोटिन रति पति उपजत बिनसत भृकुटीबर भौंहैं । जाहि माया में नित राचे प-हिरे त्रिगुन त्रिवेश बिभूषनबिधिहारि नित राचे ॥ कोटि योगिन जेहिके पाछे ।

प्रतिजोगिनि ब्रह्मांड अनेकन आछेसे आछे॥ जानि माहिमा गौरी वरका। श्यामसखे मनबचक्रम शरने धरेध्यान हरका॥ ३६५॥

रागचैतगौरी जलदताल॥

शिवाबिना कोईनहिंरे मोरि बिपति बिडारनिहार। सकृत न मीत करुना के सागर जो कोई करत पुकार॥ देखि न सकत दीन दिनताई देत पदारथ चार। निसुदिन देत शम्भु अबिनाशी लखि बहु जांचनिहार॥ धारि नरमाल दिग म्बर डर नखन बन फिरत उजार।

अढरनढरनचारि जुगदानीदेख्योंनहिं संसार । श्यामसखे यह रीति सदा की वेदहु करत पुकार ॥ ३९६ ॥

नादब्रह्म जोकोइ जानमाने सोसुरनर मुनि गुनको खान । नादवेद दुनोंभाई नाद निर्गुनता से नाद ब्रह्म तासों कहिये घट घट व्यापित पूरन सोई । श्याम सखे सो शंकर मान ॥ ३९७ ॥

हर ध्यान धरत जक्त तरतशूलपानि के जहान गिरि सुमेरुबासी । शंकर रज कामधेनु बिधि सुर मुनि धरत रेनु प्रकृति पार परम तत्व अविचल अबिना-

शी ॥ ब्रह्मदत्त बर प्रंचड प्रबलदेव अरि नरादि अजितो अविनाशी । तोषे सुर मुनि समूह धारे करवर त्रिशूल समिध किये त्रिपुर सकुलकोपकी हुतासी ॥ हर्ष भये बासुदेव ब्रह्म प्रभु आदि लोकपाल पुसपन बरखासी । दीन ढरन पाप हरन मेरे हरचरन शरन श्यामसखे मन बच क्रम तेरो निज दासी ॥ ३६८ ॥

शिवसंग बहु रंगिनी कालिकायै । ज्योतिस्सरूपावनी देविदायै ॥ तुहीं साम सीह कहीज्जेहलक की जहँ राखो दाम खोदाई सबै बेद गाई ॥ जो

जक जिलाजोस दाता बिधाताबिधाता
की आद मइलाही तुही न बनाई।सखे
श्याम उल्फी सही दाह में साक धीता
करम्मे करोगे सहाई॥ ३९९॥

चन्द्रभालललाट मोहै मुंडमालगरसोहै
बैठे सुमेरु बट छांह बाहकर दिए सीस
जटा गंग धरे अंग विभूति भूति भरे
फननिहार कंठनीलहलाहल विषपिये॥
रती आदि देवत्रिया इन्द्रप्रिया रम्भादि
कर्ती सती निशक्ति करन चमर छत्र
बिजन लिए श्यामसखे सदा शम्भु का
र्त्तिकगणनाथ अम्ब हिये किये बास
दास माथहाथ को किये॥ ४००॥

महादेव गणेश्वर आनन्दी ॥ सरस्वती विद्या देनि बुद्धि देनि वाक्य देनि श्यामसखे सुख देनि सानन्दी ॥ ४०१ ॥

एभयो श्रुति मूर्छिना ते सप्त स्वर को रूप । तानको ढरन औ मुरनरस उपजत ताल भेद द्रुती अनुद्रुती लघु गुरुको भाव ब्रह्म भूप पुलित प्रस्तार ताल बन्धान मृदंग थुन्ना भेद परन सम वे सम अतीत औ अनाघात अयसो रूप श्यामसखे सोई करे सरस्वती ढरनि ढरे अगम अपार नाद भेद ताल भेद थुन्नागति अनूप ॥ ४०२ ॥

जोगी भूलि क्योंतैं गए । जोग जुक्ति

विसारि वादे करम में तन तये॥नेह गेह शरीर सुख हित विषय में विष बोये। जन्म श्यामसखे बितायो जोग रोगी भये॥ ४०३॥

वसह चढल नाथे जटाजूट माथे गाथे यहिपथे देखिल पतिमोर। रहब कवन भांती दूजे नहीं संग साथी बाल बोध हे कार्त्तिक कोर अपने तो थोरे थोरे सखेश्याम आन ठोरे निज जन हे सा दानी वरजोर॥ ४०४॥

झँझौटी सुर ताल जलद॥

हमारे शिव पारबती जिरालागि

गई । कुंदसरस तन गौर मनोहर मनसिज कीनगती ॥ मनि में हार पीत पट मेषल दामिनि कोटि द्युती । चंदन चन्द भाल बनमाली नूपुर ध्वनि करती ॥ रति रति लख रति सरस छवि श्यामासारस्वती । ऐसो रूपशिवा शंकर लखि कौन रहे बिरती श्यामसखे हमरे पति सोई भोला-नाथ जती ॥ ४०५ ॥

रागिनी गौरी ॥

फकिरवा साथही तेरे जैहों । प्यास लगे तब पानी पिलैहों भुख ले मांग

भिजैहौं ॥ अचरन झारबतोरि बट
छहियां औ बघछाल बिछैहौं । श्याम
सखे नित उबटि चुबटि के गनपति
गोद खेलैहौं ॥ ४०६ ॥

बसिगये जियमोरे जोगिया गौरि
तोर बउराह । तजिदेहौं बाबाकी अट-
रियारे रहिहौं बटकीछांह ॥ देखिदेखि
तोको जुड़ैहौंरे छाड़िहौं उरदाह। आक-
ढाकके डाचवैहौं रे नितनितचितचाह॥
श्यामसखे आयों सरनियांरे भोलातोरी
पनाह ॥ ४०७ ॥

ध्रुपद हमीररागिनी चारिताल होरी ॥

जोगिनी फागुन जानि अबीर अतर

लै शिवसे करति धमार। डारत श्याम सखे रंगकेशरबारत कौचनभार॥४०८

चंडिका काहेकोमानकरत ऐसे दिननमें हिलिमिलि खेलिये रंग। बोलत श्यामसखे मिठी बातियां गौरी उंठी है उमंग ॥ ४०६ ॥

ठुमरी ॥

रसमाते मोरा जोगियारे जगाये न जागैं। एक बटछांह दुसरी पुरवैयारे मिठी भँगियासे पागे॥ गनपति खैंचे धरत जब दाढ़ी धरिमुख चुंबनलागे। श्यामसखे नित सेइहौं बरदानी से मांगे॥ ४१० ॥

धनाश्री रागिनी धीमताल ॥

राजराज शिवशंभु हमारे पारवती महरानी। चर अरु अचर आजिर उर बिहरत गिरि सुमेरु रजधानी ॥ जोरे कर इन्द्रादि देवता ब्रह्मादिक दरबानी। श्यामसखे उरमाह विराजित हर त्रिभुवन वरदानी ॥ ४११ ॥

हमारे मन शिव से जांचवरो। एक अधार नामको आसा निसु दिन ध्यान धरो ॥ जपतप नेम धरम जहँ लगिहै सो सब झूठ करो। श्यामसखे सरनागत आए दुख दारिद्रहरो ४१२॥

बेला बल रागिनी एक तालीताल ॥

शिव नाम जपत भौन परत भौन
डरत प्रेत भूत सहित श्रीभवानी ।
संकट नहिं एकरहे त्रिविधि तापदाप
देहे सहे न तपनि पंच अगनी बदत
बेदबानी ॥ अचल भये सुरसुरेस ज-
पत विष्णु औगणेश त्रिकुटी धरि
ध्यानी । निश्चै मन करि विचार तजि
कै भ्रम जाल भार श्यामसखे रसना
नित शिव शिव जपज्ञानी ॥ ४१२ ॥

झँझौटी जती ताल ॥

काहे न मोहिं जगाये डमरूवाला

जोगी। लक्षमी वेनु सितार शारदा इन्द्र वधू गति लाया रे॥ गिरि सुमेरु पर रास रचो है सिंगी आपु बजायारे। जोगिनि सहस कोटि संगे नाचत तान तरंग उठायारे॥ धरि त्रिय रूप देव सब नाचत प्रेम पुलकि तन छायारे। सब मनकाम करत परिपूरण शंकर औ गिरिजायारे॥ श्यामसखे तेहिमध्य भवानी गनपति गोद खिलायारे४१४॥

काहे को वेनु बजायारे डमरूवाला जोगी। वेनु बजाय सकल तिय मोहै सुधि बुधि सब बिसराया॥ गिरिसुमेरु

के मुनिगनमोहे विधिके ध्यान छुड़ाया रे। वच्छरुक्षीर तजेतृन गौवन नदियन नीर चलायारे ॥ रविके रथ बिथके खग मृग गन डोलत नहीं डोलायारे। छवो छतीस राग औ रागिन रसंम गाइ सुनायारे ॥ श्यामसखे शिवअलख निरंजन सब मनकाम पुरायारे ४१५ ॥

बिभास रागिनी तेवराताल ॥

भजु मन शंभु चरन सरोज । ललित लाल विशाल कोमल वारि कोटि मनोज ॥ जासुमहिमा सर्वविधि पुर गावत ध्यान धरोज। शारदा आनन्द

गावत प्रेम आंसु उरोज ॥ खड़े ब्रह्मा इन्द्रदिगपति बरुन यमहुँ दनोज । रहे श्याम सखे खवासीहाथ लीन्हे मौज़ ॥ ४१६ ॥

जामें शम्भु जस नाहिं परे । सपनहूँ नाहिं श्रवन कीजे जीभ काहे धरे ॥ शम्भु भजन बिहीन जो नर सत्य ज्यौं पशु खरे । जठर जन बीगरे क्यों नाहिं दनुज सम तन धरे । प्रेमकरि मूरति बनावै चारु अच्छत करे । पूजि श्यामसखे निरन्तर गौरीशंकररे ॥ ४१७ ॥

महेशबानी ॥

जोगिया तुमको चीन्हाछोड़ि जग

ब्यवहार सपना जोगहोइ रहुलीन ।त्या-
गि बिधि परपंच जियसों बीस आठ सं-
भारु ॥ तानि पांच पचीस सूधो बहुरि
कर्माहिं जारु। अष्टदल पर जाय बैठो
सात सीढ़ी देख ॥ सकल इन्द्री कर्म
जारो होइ रूप विशेष । करहु मज्जन
गंग धारा जपो जानकी रमन ॥
अचल श्यामसखे सदा रहु छोड़ि
आवागवन ॥ ४१८ ॥

देश रागिनी जतीताल ॥

हे हर कौन भई अपराध । जेहिअ-
पराध बिसारि दीन्ह मोहिं कहौं न कछु

छल साध ॥ तब पद विमुख सकल सुर नर मुनि करत धरम धरि बाध । श्यामसखे अब द्रवहु उमा वर तव पद रज नितराध ॥ ४१९ ॥

देश जलद ताल ॥

छवि देखि हँसी मनभावन की । माथे मौर पीतपट जामा मोतिन की दुति दावन की ॥ रमा शची चितवत सकुचानी हिलि मिलि शारद गावन की । श्याम सखे परिछत मन हरखी जुगुल मधुर मुसुकावनकी ॥ ४२० ॥

गिरिजा शिव संग विलासं । सकल

सुखद गिरि मेरु सोहावन सुन्दर वट कैलासं ॥ विहरति चौंसाठि लै संग जोगिनि करत रहस रसरासं । आवभाव दृगफेरि निहेरि निकरत परसपर हासं । निकसत सकल राग औरागिनि डमरू बाद सुधासं ॥ मोहे जीव चराचर सुरमुनि पयनिधि रमानिवासं । श्याम सखे गनपति कर धरिधरि रहत हमेश हुलासं ॥ ४२१ ॥

देश के ठुमरी जलद ताल ॥

गोसांईरे भूलिगई बट छहियां । नगरिया राह बेगि देवादे ॥ गोसांई रेगन-

पति गोद हमारे डमरू लेके राग तान सुनादे । गोसांईरे श्याम सखे आजु रतियां जोगिनि लेके रास रंग रचादे ॥ ४२२ ॥

खिमटा ॥

फकिरवा रागवालारे । निकसत रागौ रागिनी वारी तान तरंग विचार ॥ त्रिभुवन वाज को करैवारी डमरू सुर भंडारसिखे राग तान नाहिं आवै कैसो मूरख भूप ॥ जो डमरू को ध्यान धइ ले होइ राग कोरूप ॥ चर अरु अचर जहांलगि गावै सो सुनै हरआप॥श्याम

सखे शिवचारिहू फल फले फकीर प्रताप॥ ४२३॥

इमनी झँझौटी॥

या मुंड माला मेरे दृगन बसीहै। जुगल जलजपग अलिमन माहियां श्याम घटा सम सांवलि सूरति चन्द्र भाल अलकैं छुटि रहियां। दंत अरुणार सना जुत शोभित औ दामिनि घन मेंलि गाहियां। श्यामसखे भुजचारि सोहावन दिये रहत निज जन सिर छहियां॥ ४२४॥

लगनी दीप की रागिनी जती ताल॥

उतरदिशा जब गे महादेव वितल

महिनवांमें चारहो । मचियां बैठलि गोरी जोहति बटिया नहिं आए बलमू हमारहो ॥ कीतौ जोगिनि संगे रहल लोभाइके की बिषसे मतवारहो ॥ कीबेल पातदेई कोई मोहेकीअच्छतदुइचारहो बन घन बीच गोद मोरे लड़िका रात भइल अँधियार हो ॥ बोलत सीहबराह भयावन नाचत भूत बैताल हो । है कोइ पथिक पियार बटोही कहि दे हमरो संदेशहो। आस जोहतमोहिं जुग समबीते तुम बिन भूत नरेशहो॥सुन्दर अंग बजावत डमरू गावत मेघमलार

हो। सनमुख श्यामसखेसैंयां मिलिगये पूरल आस हमार हो ॥ ४२५ ॥

चंचरीकछंद ॥

भजिये शिव महादेव बाहन पशु जाके गिरिवर कैलाश बास भूत प्रेत संग बिलास कातिक गननाथ ताल स्वामी गिरिजा के। बैठे हर बाघ छाल भूषन तन ब्याल माल मुण्ड मालचन्द्र भाल गङ्गधार ढाके ॥ नाद वेद कोसुठाम डमरू सिगी जो नाम बाजत जहँ आठ जाम लपटे तन खाके। श्यामसखे कहि न सकै महिमा शिवशंकर को नार

द औ शेश आदि बरनत जशाथा
के ॥ ४२६ ॥

सोरठ सुरताल हालिया ॥

जपिले मन शंकर को सुवनम् । शिवपारबती गणराज पदम् ॥ करि अस्नान पारथी पूजन पाती अक्षत औ जलगङ्ग । गाल बजाइ रिझाइ ताइ के करि विनती बोलो बम् बम् ॥ भूले फिरत विष तृस्ना में दिन दुइ माया कीचमचम् । लेखा घटा कर्म सावनकी बरिसेगोजम से झम् झम् ॥ ताते प्रथम सन्त उपदेशत संतत जपो तजो हम्

हम् । श्यामसखे नित गावत ध्यावत पावत अष्ट सिद्धि दम् दम् ॥ ४२७ ॥

सोरठरागिनी ॥

हे हरमौन भये कस आज । दशशिर बेर मौन नाहिं साधे दीन्हे त्रिभुवन राज ॥ हेरहु नैन कटाक्ष कृपाकरि कस न करहु उर लाज । श्यामसखे हम शरन पंचमुख शंकर गरिब नेवाज ॥ ४२८ ॥

कहत हवानि दे मोरि जटा । जटा बांधि मुंडमाल लगादे शिरपर शशि द्युतिफटा ॥ गीत रीत सांगीत सुनैहौं

राग रागिनी छटा। श्याम सखे संगे तोहू नचैहों कोटि कला जिमि नटा॥ ४२९॥

नाचत हर राश में रंगभरे। गिरिजा संग किए अरधंगी गिरि सुमेर बट तरे॥ शची शारदा लक्ष्मी गावैं बीन-बाँसुरिधरे। श्याम सखे सुर नारि अनंदित थेई थेई गति अनुसरे॥ ४३०॥

दिल्ली त्राली भैरवी धीमताल॥

मानत नाहिं बताहन बूझत गौरी वर बाउर तोरारे। जिनकेकरम लिखी हम नाहीं सुख भोजन यक बारारे॥

तिनरकन को धन बकसीसत खाली करत भंडारारे । ज्यों त्यागहिं अस रीति महेश्वर तौ हमरहब बिधातारे ॥ लीजे सब समुझाइ भवानी त्यागब विधि कर नातारे । सुनि विधि उक्त हँसी जगदंबा शंकर मन मुसुकाईरे ॥ श्यामसखे शिव पुरुष पुरातम अभि-गति लखलो न जाईरे ॥ ४३१ ॥

देश रागिनी त्योरा ताल ॥

जापर गौर के पति ढरे । सकल सुर मुनि इन्द्र तापर छत्र छाया करैं ॥ ढरे गुन निधि ब्रह्म के पर जगत जश

विस्तरे॥ परसुधर पर ढरे ऐसे तेज त्रिभुवन वरे। आपु कर्ता आपु भर्ता आपुही जग हरे॥ आपु दीनाहिं करत बनपति आपु माँगन खरे। गौर के दूलह सो मेरी अरज को अनुसरें॥ अबतो श्यामसखे दुखित होइ शरन आके परे॥ ४३२॥

अब मोहिं रावरे पद आस। यक तो सब जग भये बैरी तापर जम देखावत त्रास। कर्मजोग समाधि सब कलि काल कीन्हो ग्रास॥ बन्ध्यौ मायासद्यौ नाहीं होत सोउ परिहास॥ वृथाजननी जठरजामें वृथा तप उबासस। मंजुमन

सर हंश जबलगि हृदय करहु निवास॥
कुंद दरस सम देह प्रफुलित जटा
सघन अकास। शिवा संग वट छाँह
राजितमेरु गिरि कैलाश॥ज्ञानतुम्हरी
ध्यान तुम्हरी कछुक उर बिश्वास।
चहत श्यामसखे तेहारी दास खास
खवास॥ ४३३ ॥

रागिनी ढक्कनाद ॥

आजु देखली महादेव हो सजनी ।
माधव रितु पति शशि सत रजनी ॥
उमंग मदन रस वोहि बट छाँह। गोरे
गोरे थोरे थोरे धरि गल बाँह ॥ लक्ष्मी

मृदंग लैब सरस्वती बीन। नाचति स-
हेली संगे सचि कुच पीन॥ छने छने
देत सखि गौरी मुखपान। छने सखि
गौरी हर धरति ध्यान॥ श्यामसखे
गौरी हर सुखद विहार। मनकी म-
नोरथ पुरल हमार॥ ४३४॥

कहिं देखली गे सजनी येहि पथे
जोगिया। इन्द्र वरुन सम छौरस भो-
गिया॥ यह न उमत सखि हे हृदय क-
ठोर। बीचे बन छोड़ि दे लगन पति
कोर छने छने जोति मलिन तिमिर
विकाश। कौने विधि जाइब पुर
कैलाश॥ महिमा न जानै कोउ पुरुष

पुरान । श्यामसखे गनपति गौरी हर
ध्यान ॥ ४३५ ॥

मारू रागिनी झपताल ॥

प्रभो जैति जै सदाशिव शमन सं.
सृति विभो विमल कविकुल विपिनि
विहर करता । आद्यमनवद्य मखिलेस
भजमनद्यमतिसहितगिरिराज दौहितृ
भरता ॥ देवसांख्यजोगालयं सदैकरुना
मयं निमिड़ तमतरनी गोतीतनामी ।
कोटिकंदर्प दर्पघ्नसुंदरतनुं सहज विच
रतजगतवृषभगामी ।देवत्वमासि पवना
नलोत्वमासि विधुरविजलोत्धमासि उद्ध

रनधरनीधिराजं ॥ त्वमसिगांधर्वकुल कुशलनर्तनपरो त्वासि दिविराजनत राजराजं। देवजतविस्तारनी प्रलय भौभारनी लसतिवामांग गिरिराज कन्या ॥ कनकगिरि स्वेतगिरि सहित विधुघनताड़ित वदतइतिधरतहृदितेपि धन्या। देवत्वमसि ममतात पितु मातु दातासुहृदआसतव त्रास बदत दासदासी ॥ देहि गिरिजारमन भक्ति चरनाब्जकी श्यामसखे हृदयसरहंस वासी ॥ ४३६ ॥

रागिनी बंगला झप ताल ॥

सदां नौमि भूभार हर पाप हरताप

हर काम हर दाम धरदान वर्त्ती । ब्याल
धरमाल बरकाल हरमाल शशि मूल
ओंकार शिव परम नर्त्ती ॥ देव तस्कर
धीश गाधेय कर बंदितं उग्र सम रेखु
दमदाक्षधन्वी । कार्त्तवीर्य्यर्ज्जनार्चित
चरनपंकजंतेजविस्तरतीमुद्योतवंन्ही ॥
देववेदभवसप्तद्वीपाधिनायकप्रमुख बि·
ष्णुसनकादीनितमुजसगेयम ॥ देहिबर
मीशगिरिजासहित श्यामप्रतं श्यामसखे
मेमुखेनामध्येयम् ॥ ४३७

जोगिया रागिनी झपताल ॥

सदानौमि बिश्वेश्वरं बिश्वनाथं । संत

तगावत सदाबेदगाथं ॥ नागसज्जा सयंनाग कृत भूषणं नागमय मुकुट कृतनागहारं । देवसूत्रन बराग छबप्रगट जासोंभयो डामरू नादविद्या बिचारं ॥ शूल चर्मासि कर शैलशार्दूल धर मिडय दिगपाल नृकपाल धारं । देव मेरु बटछांह आसीन सह पार्वती वृखभगन सहित गनपति कुमारं ॥ पूरकरु काम बिश्राम हृदिकमल मह निवसु नित श्यामसखे उर बिहारं ॥ ४३८ ॥

सदां जैति जै जैतिजैति भूतनाथं संतत गावत सदां बेदगाथा ॥ भूतितन

भूतिकर भूतिभैरव स्वयं भाल विधु भ्राज भजभावसाथं। देव भाल दस-भूतिहित भाल अर्पित किएकरन सबकाम जतमनसि ईक्षा ॥ देवसरि गर्भ हरभागीरथ आसभर नौमि हर परशुधर स्वामि शिक्षा । देवसब तांहि बिनजोग जप कोटि तीरथ अटै रटै भटकै सबै जतन झूठो ॥ चहत जिमि स्वाति सब देव चातृक भए बिमुख जो देव तेहि हरिहु रोठो ॥ देव परेउभव उदधि के बीच बिश्राम नहिं तहां को मोरि अब

सुनै टेरो॥ श्याम सखे आस विश्वास पद रावरे त्राहि शशि नाथ यकशरण तेरो॥ ४३६॥

सदां नौमि शिव सांभवि सहित वेशम्। दिब्य बटछांह गल बांह बघ छाल पर लतगजख्याल शशि भाल देशम्॥ देव त्रिशतनव जोगिनी सौंजसं जोगिनी विकट भैरव छमुख श्रीगणेशम्॥ पर सुषटवागसर्वांग भस्माङ्गकृत मुण्डगरमाल अति सघन केशम्॥ देव छत्तीसो रागिनी सकल द्युति दामिनी परम रस गावती भाव भेशम्। बरद

सरश संसार आरा पहर जपत सखे श्याम गिरिजामहेशम् ॥ ४४० ॥

बंगाली रागिनी एकताली ताल ॥

सेवहु शिव शूल धरन शंकर अवि-नाशी चिन्तामनि भक्तहेतु संसृत भव पार सेतु प्रकृति पार बिश्वभार निवसत सोइ काशी ॥ खंडपरसु ईश भव्य थानु रुद्र सदा नव्य भजतियेन तेपि अज्ञ चिन्मय सुखराशी । विधि सुरेश औ गोविन्द सेवत चरणारविन्द सच्चिदा आनन्दकंद संतन उरबासी ॥ बाम भाग छबि अतिव हिमगिरि कन्या

सचिव सेवत जेहि रमा आदि चरन कमल दासी । दम्पति गिरिजा महेश दरश परश हर हमेश चाहत सोइ श्यामसखे चरन की षवाशी ॥ ४४१ ॥

टोडीके ख्याल धी० ॥

महादेवजी जानै उमापति का तेज । फैलि रही जग में सुयश सुजान मान दी । जो पूजै सखेश्याम धनी का सुघर होई शंकर का सोई ॥ ४४२ ॥

देश मलारी रागिनी धीमताल ।

कैसे हम जैहौं बटछांह । ऊपर

बरसै कारी बदरिया नीचे पिछिलत राह। बड़ी दूरि मेरु बट छहियां गनपति गोदी मांह। श्यामसखे हरमेरु चढ़ावत प्यारी धरि धरि बांह ॥ ४४३ ॥

योगी कैसे धीरज रहाय। बदरा घेरि परत पट बूंदन टपकि टपकि रंग जाय ॥ त्रिभुवन दानी आपु अमानी तृन घरहू नाहिं छाय। श्यामसखे गिरिजा सुनिबानी लियो बघछाल ओढ़ाय ॥ ४४४ ॥

देश रागिनी जलद तालठुमरी ॥

हमारे शिव चहुँ जुग दानी खड़े ॥

आपु फकीर बिराग उदासी त्रिभुवन फिकिरि भरो । सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता तुमसन कोउ न वरो ॥ श्यामसखे को किंकर जानो जो कुछ उचित करो ॥ ४४५ ॥

हमारेमन भावत है बहुरंगी । बैठे मेरु सिखर बट छाया संग गौरा अरधंगी ॥ गनपतिचुटुकी बजाइ नचावत गावति शारद संगी । श्यामसखे बसे नयन हमारे सुंदर भोलाभंगी ॥ ४४६ ॥

देश रागिनी जलदताल ठुमरी ॥

गोसांईरे धरि लीजै मोरी बहियाँ

तुम्हारे सँग जोगिनी होइ जाऊँ । गो-साँईरे सीतल पानी पिलैहौं उमँगि जिय बाघ छाल बिछाऊँ ॥ गोसाँईरे श्याम सखे बट छहियाँ डामरूलेके नाँचि नाँचि रिझाऊँ ॥ ४४७ ॥

लूम रागिनीताल हालिया ॥

हमारे दोउ ध्यान बसी भवानी शिवरे । महाराज गिरिराज बिराजित सुख आसन बिलसी ॥ पूरन जुगुल चन्द से राजित दरबर कुंदकसी । बय जंती बनमाल पदिकहै सुरसरि धार धसी ॥ जोगिनि अंस दिये चहुँ दिसि

ते तारा आदि लसी। श्यामसखे फल चारि लुटावत जब मुखदेत हसी ४४८॥

मैं बट छहियाँ कैसे अब जाऊँ। बीचहि सांझ भई अँधियारी चलत न पाउ चलाऊँ॥ भाँग चबाइ रहे बौराई सोइ रहै कहँ पाऊँ। श्यामसखे गनपति मोरे गोदी किमि गिरिराज सिधाऊँ॥ ४४९॥

मोरि धियमति कोउ भरमावै। बुढवा निसुदिन धुनी रमावै। गलियन गलियनफिरि २ झाँकैबरवसनैनलगावै छव छत्तीस राग औ रागिनि सिंगीमें

भल गावै । हाथ भसमके गोलापगहा हँसि २ बैल नचावै ॥ जंत्र मंत्र औ जादू टोना भोरीसे देखलावै । कहै गौरी सुनु सखी सहेली जो बुढ़वाको ध्यावै ॥ श्यामसखे नौ निद्धि पदारथ घर बैठे पहुँचावै ॥ ४५० ॥

शिवसकल कलारस रंगिया गंगिया सोहत है सिर भंगिया । राजत उमा सहित गनके संग हाथ भसमके गोला वैनतेज रिपुहार लपेटे तन बघवाके चोला॥ब्रह्मादिक सुर चवर डुरावै इन्द्र खड़े दरवानी ॥ श्यामसखे जेहि चित वत नेको सोऊ होत बड़दानी ४५१॥

इमनसुर जलद ताल ॥

बिलमायो भंगिया भोला अपनी सरन पद पांयन में। पगनेह बढ़ै न घटै कबहीं निसुबासरही अरुझायन में ॥ गहिहौं जस हारिल की लकड़ी तजिहौं नहिं कोटि कलायन में। मन श्यामसखे बसिहौं नितही तुम्हरे यश कीरति गायन में ॥ ४५२ ॥

चौमासा ताल जती रागिनी देशकेमलारी ॥

कौन बुझाइ कहै शिवशंकर रूठि रहे अपने मन में। कातिक मास गई उजियारी बिछुरिन शोच भई तन में॥

कातिक गनपति गोद हमारे कैसे अ-
केली रहों बन में। अगहन अरध अंग
रस छूटी अधिक अन्देश भई मनमें॥
छोड़िगयो बघछाल डमरुआलै न गयो
अपने संग में। पूसमास बन भरि गई
पाला चहुँदिशि छाइ रहे घन में॥ हम
ऐसी भोगिनि पिय बिनु योगिनि शिव
शिव रटन लगी मनमें। सुसुकि सुसुकि
सारी रैनि बिताई पिय बिनु माघ दहै
मन में। मिलि गये श्यामसखे मोरेस्वा
मी मन अभिलाष भई मन में ॥४५३॥

कलंगड़ा रागिनी त्योरा ताल ॥

करु मन गौरीशंकर ध्यान। धरत

ध्यान सुरेससुरजेहि लहत पदनिर्बान॥ सजल जल जिमि जटा झलकत मृदुल अंग तुखार। बामगिरिवर सुता बिलसति रूपकी भंडार। थकीं शारद खोजि उपमा दियो रसना हार॥ मदन निज सम लख्यो नाहीं भयो ताहित छार॥ दानि चहुँ जुग जानि जगमें बड़ो सूरउदार।शरन श्यामसखे शिवा संग बरद के असवार॥ ४५४॥

लावनी तालहोलिया॥

सांवली शिवपूजन जाती। धूप दीप नैवेद्य सँवारे आरतिकी बाती॥ किमो-

तिनमांगभरे पांती ॥ पीताम्बर सिरधरे चन्द्रिका नैन जोबन माती ॥ किंकिनि नूपुर झमकाती । चम्प माल गज चाल सलोनी छबि से अठिलाती ॥ मनो छबि पारबती आती । श्याम सखे शिव गौरी मनावत शीतल भई छाती ॥ ४५५ ॥

काफी रागिनी खिमटाताल ॥

कोई मेरे भंगिया को मनाइ लावो ॥ लै जावो भांग बेल की पाती तीता धतोर खिलाय लावो ॥ धरि पलान बघछाला खुरजी बूढ़ा सा बैल चढ़ाइ

लावो। श्याम सखे जो ऐसे न मानै गनपति बेटा देखाइ लावो ॥ ४५६ ॥

दिल्ली वाली भैरवी धीम ताल ॥

जो जग जश कीरति कछु कीजै तौ भंगिया से जाइ कहो। बिनु जोगिया के गाल बजाये कौन सुनै तप कोटि सहो ॥ बिनु जल फूल बिना बेल पाती कैसे हरि की घरनिलहो। बिनुबिश्वास बिना बंबोले बैठे माहि जिमि चंद गहो ॥ बिनु भँगिया सिर मौर चढ़ाये कैसे घर नव निद्धि चहौ। श्यामसखे बिनु शिव अवराधे बिनु गोरस ज्यौं बारिमहो ॥ ४५७ ॥

देशरागिनी जलद ताल ॥

छबि आजु बनी गिरिजा बरकी । गिरिजा संग खड़े बट छहियां गर पर कर कुच पर करकी ॥ इन्द्र बधू छबि देखि सिहानी काम बधू मन में डरकी ॥ श्यामसखे शशि भालआरसी देखि हँसी मुखमें हरकी ॥ ४५८ ॥

झँझौटी जलद ताल ॥

मुंड माला के धरइया मोहिं दे बखसीस । बखसीसो फरसा धरको प्रभु कीन्हो सरस महीस ॥ औरो भक्त निहाल कियो है भल पायो भुज वीस ।

श्यामसखे तेरो यश गावौं दीजै मोहिं अशीश ॥ ४५९ ॥

फल चारो के देवैया बर दीजे जो कही । आशुतोष तुम औढर दानी लावो बार नहीं ॥ तुम सम साहेब शूर सुरेश्वर नाहीं जगत कहीं । श्यामसखे अवलम्ब तेहारो कीजै बेगि सही ॥ ४६० ॥

बरवेरागिनी जलदताल ।

स्वामी शंकरसे जोहोई । स्वामी शं-भु शिवासम स्वामिनि मिलहि कृपाक-रिसोई ॥ मैनामातु तात तुहिनेश्वर

भ्रातुल गनपति जोई । श्यामसखे हम कहँ लगिबरनौ मेरेहू बहनोई ॥४६१॥

शिवाशिव तुमसमान नहिं कोई । करु-नारूप कृपाके मूरति दूजो ना जगहोई॥ साहेब सील उदारदया निधि रामरूप गुणसोई । श्यामसखे जन कृपाकरन को मतिराखो चितगोई ॥ ४६२ ॥

स्वामीशंकरकी सरनाई । सुरदुर्लभ गति देत दिवश निसि रीति सदा चलि आई॥भक्तिमुक्ति ऐस्वर्य मानमद जि-नकेहाथ रहाई। श्यामसखे नित आस सदा शिव मन बांछित फलपाई४६३॥

ठुमरी झँझौटी तालजती ॥

दैयामोरी बटिया भुलानीरे। ढूंढ़त महादेव बटछहियां कमरपिरानी रे॥ श्यामसखे बिरहिनि मन पूरन योगी बरदानीरे॥ ४६४॥

रागिनीमूलं जलदताल ॥

भोला से कोई जाइसुनावौरी। मेरी सौंह भौंह लटकायो सो समुझावौरी॥ कहँबटछांह मेरुवहकानन मोहिंदिखा-वौरी। श्यामसखेमोसे चूकपरीहै बेगि मनावौरी॥ ४६५॥

भोलासेमोरी प्रेम न छूटैरी। जबजब

जन्म होइयहजगमेंतबतबजूटैरी॥माता शिवा पिताजगदीश्वर नात ना टूटैरी। श्यामसखे शिवरानीकृपाते जमनाहिं लूटैरी ॥ ४६६ ॥

॥झैंझौटी सुरतालठुमरीहालिया॥

काशीबासकरौमनमे रोबिश्वेश्वरको ध्यानधरो। यह संसार सारहै भाईताके सरनन कसपरो॥करिअस्नान गंगजल निर्मल पाती अच्छत सीसधरो। गाल बजाइ रिझाइ प्रेमसे खालीघर कोफेरि भरो॥अन्नपूरना मातुभवानी पूरेमन की आसकरो। श्यामसखे शिवपूर दर

सनते चारि पदारथ देतफुरो ॥४६७॥
काशीनाथ,कृपाकरिहेरो मैंअतिदीन तुम्हारा। जरतरहेउं त्रैताप अगिनिमहं नाहिं कोई बंधुहमारा॥गहिकर बांह नाह गौरी के भवनिधि ते मोहितारा। मैं अतिमंद अभागी अघमैं कोई न पूछनहारा॥श्यामसखे जबतुम अपनायो पायो अभिमतसारा॥ ४६८ ॥

ठुमरीबरवे रागिनीजलदताल॥

सदा शिवहो परिहों तोरिपांव बरसत बूंद भिजावत चीर सदा शिवहो। बघछाला दे वोढ़ाय चारि मास बरिसावत

नीर सदा शिवहो ॥ तृनघरहु न छाय
श्यामसखे जिय हरहर पीरसदा शिव
हो देहु बरमन भाय ॥ ४६९ ॥

सदाशिवहो ढरि हो कबआय।भइहै
बिहाल हाल नहिं मोहिं सदा शिव हो
कसकरब उपाय । श्यामसखे हमजानैं
तोहिंसदा शिवहो अब लीजै अप-
नाय ॥ ४७० ॥

सोरठ रागिनी जलदताल ॥

हुआ जोगिया मतवालाआली । इत
उतलपटिझपटि तनडोलत बोलतब-
चन बिहाला॥दशाबिलोकिभूतगनना-

चत गावत दैकरतार। श्यामसखे शिव अलखनिरंजनलीलाहितसंसारा ४७१

जोगिया रागिनी रुद्रताल ११ एग्यारह ॥

भोलानाथ हमारे कबकरिहौ कर छांह। जोकरछांहदशाननपरकी सुमिरतहौं सोइ बांह॥ जोकर कमल सुमिरि परसाधर अजहूंरहत उछाह। तीनलोक की सकल संप्रदा दीन्हीं यक क्षन माहं॥ श्यामसखे सोई कर कमले मेरे निसुदिन चाह॥ ४७२॥

धनाश्री रागिनी ब्रह्मताल॥

कबढरिहौभोलानाथधनी।मेरेतोसंभु

चरन रजआसा दूजोनाहिं गनी ॥ सेवा आसत्रास उनहींकी निसुदिन ध्यान सनी श्यामसखे हरहेरहु सुखमें सरन गये अपनी ॥ ४७३ ॥

त्रिवन रागिनी इन्द्रताल १५ ॥

जो फल चारि चहो खाई । गौरी शंकर को सेवा करो भाई ॥ जो धन धान्य चहो आनंदा । भोला भैरो को दिल से करो अनंदा ॥ जो जग जस कारति कीजे । गन राजा के वपवास नाइ लीजे ॥ श्यामसखे नित नित कर जोरे । मेरे काशी के बासी बरद भोरे ॥ ४७४ ॥

खिमटा ताल झंझौटी ॥

सखीरे वरतर झूलन चलो जैये। वर तर झूले शिव सुंदरी श्यामा हमहूं हिं डोला गैये ॥ श्यामसखे गनपति लै गोदीं चारु चार फल खैये ॥ ४७५ ॥

धुरिया मलार धीम ताल ॥

आनंद शिव काली केलि करैं। गिरि वर सुता रमा ब्रह्मानी गिरि सुमेरु वट छांह तरे ॥ बजत मृदंग बेनु वर डमरू से सब राग भरे। श्यामसखे निरखत सुर बनिता मन वांछित की आस फरे ॥ ४७६ ॥

सुरबारहमासा के ताल तेवरा ॥

वरतर झूले गोरी सुंदर सावन तीजि हिंडोर । रति रस रहस सुनावै हो लक्ष्मी देति झिकोर ॥ रिमि झिमि बरसै बदरवारे चमकत चहुँ ओर । हँसि हँसि हर उर लावति हो बोलत मदन मरोर ॥ वारत गज मनि हीरा हो लै लै गनपति कोर । श्यामसखे श्यामा की झूलन वारति प्रान निहोर ॥ ४७७ ॥

दक्नादरागिनी सुरफाक ताल ॥

जोगिया बिसरि गयो मुंड माला । रंग राते अधिक बिष खाते नहिं देखौं ।

तेरी पीत पिताम्बर नहिं देखों बघ छाला ॥ बातिल बोलत डोलत आवें धावत लट पट चाला। श्यामसखे गिरिजा हँसि हेरत मगन भयो शशि भाला ॥ ४७८ ॥

गौरी शंकर गीत झँझोटि धीम ताल ॥

भज गौरीशं भज गौरीशं गौरीशं भज मूढ मते। स्वेत गिरिव शरीर प्रकाशं ॥ कोटिमनो भवतेज सुवासं। भवभय ग्रासं योग विलासं ॥ सीताराम अहर्निशि स्वासं। भज गौरीशं मूढम-ते ॥ गेयं गौरी पति गुणशीलं। पेयं

शंभु शिवारसलीलं ॥ ध्येयं तत्व रूप
मखिलेशं । नेयंदार्द मिदमूवदशेशम् ॥
भज गौरीशं मूढ़मते । यावन्मामद मा-
त्सर्य्यविकारं ॥ तावन्नाना दुःखमपारं ॥
नहिं सुत सुता धरणि धन धामं । स्थिर
गिरिराज सुता शिवनामं ॥ भजगौरीशं
मूढ़मते । यद्यपि सत्य मेव संसारं ॥ मुधा
विलोक्य मशेशमपारं । क्षण सुखमिति
हृदि विद्धि यहरुजा ॥ माकुरु माकुरुमा
कुरु मनुजा । भजगौरीशं मूढ़मते । कर्म
णिधर्मे कुरु आरूढं । संतजनादि वचन
मतिगूढं ॥ व्यूढं वेगमनंपुरस्तात । बुद्धि
महीपति मिच्छति ग्रस्ता ॥ भजगौरीशं

मूढ़मते। स्यम्प्रत मिहतनु जर्जरिजाते॥ दारा पुत्र सुता नहिंताते। भज भजनी यम मतो मुदारं॥ उमयासहसौंदर्य्यम-पारं। भज गौरीशं मूढ़मते॥ श्यामाशं-मुक्तपादिति गीतं। श्यामसखा गदितं सुपुनीतं॥ गायति पठति कंठ मिति एवम्। ते प्राप्नोति चतुः फल मेवम्॥ भज गौरीशं भज गौरीशं गौरीशं भज मूढ़मते॥ ४७६॥

शान्तिपद॥

झँझौटी ताल जलद॥

क्या देख फिरे मन भूलारे। त्रि-

गुण बीज रचना में गाफिल जग माया नभ फूलारे ॥ शुभ अरु अशुभ खम्भ दुइलागे निसुबासरहे झूलारे । अबहूं श्यामसखे चित चेतो करहु राम अनकूलारे ॥ ४८० ॥

क्यादेखि फिरे मतवालारे । ठगसी फांसी सूझत नाहीं सिरपर काल करालारे । पियत सदा बौरासामें तुम मोह निसा की प्यालारे । श्यामसखे जलदी अपनाले सियवर राम कृपाला रे ॥ ४८१ ॥

मोसम कोई नाहिं जग अपराधी ।

कामक्रोध मद रहत निरंतर निसुदिन भजन उपाधी ॥ चिन्ता घेरिलियो चहुंदिशिते मिटिगइ ज्ञान समाधी । श्यामसखे अबराम कृपा करु बाढ़िगइ ब्याधि असाधी ॥ ४८२ ॥

मोसम कोइनाहिं देखौं कूरा । मेरी कुमति बिलोकि कुटिलता लोकबेद कियो दूरा बिसरोरहत सदा याहितनते जमकी मारन हूरा । श्याम सखेकी त्रास मिटैगी करहिंकृपा गुरुपूरा ॥ ४८३ ॥

कैसे हरिपद नेहलगैहों । यद्यपि श्री गुरु संत सिखायो सोगुन काहि दे-

खैहों ॥ सुरदुर्लभ सुखजीवन थोरा कहंकहं मन चितदैहों । श्यामसखे हो-हिं एक अंदेसा नरतन फिरि नाहिं पैहों ॥ ४८४ ॥

हरिहों तब माया बल ऐसी । छनयक शोचकरत यह जनकी फिरिजैसी की तैसी ॥ परत्रिय रतिको अंतमरन सुनि आगिलगै घरजैसी । श्यामसखे वह स-मुझ्त्रथाहैबिनापूंछिकीभैंसी ॥ ४८५ ॥

सीतापति दाहिन रहत जाके दिव स निसिगौरी सिरधरे छांहवानिके कुमार हैं । कबिमद खंडन नरेश मद

हंडन सेगायन बरं कजता कोसूरज उदारहै॥ ध्यावत नरनारी ताकोदेत फलचारी सदा बर्त सी लुटावत जन अभिमत दातारहै। सीतलसरूप जैसे गंगाजल निर्मलसे शिवके सरूप श्यामसखाअवतारहैं॥ ४८६॥

झंझौटी॥

रे मन राम कीरटना लगाइ ले। बिगरी बहुत दिनन की अरुझी सत संगति सरुझाइ ले॥ फिरि नहिं ऐसो दांव मिलै गो बिगरी बात बनाइ ले। कर्म दारु दाहि ज्ञान अगिनि

करि जग मग जोति जगाइ ले॥ श्यामसखे भौपार जो चाहे हरि के गुन गन गाइले। ४८७॥

बतलावो लोगो राम डगरिया गई भूलि राम घाट को दरस कठिन है दृष्टि परै नाहिं खूलि। बरजत त्रिविधि जनित गुन बाहन रहत सदा प्रति कूल॥ श्यामसखे सैयां राम सिया वर रहत हृदय महँ भूलि॥ ४८८॥

झूलत ब्रह्म आनंद कंद। अगम अखिल अमोघ सुख जुत रहित जग दुख द्वंद॥ शुभ अशुभ खंभ

विशाल डांडी पटुलि प्रकृति पचीस । खट उर्मी वसुवत्तीस खेलौना लगे खग चौंतीस ॥ बंक नल पर पद्म आसन मध्य त्रिगुण त्रिकोण । तहां खिरकी अजब सुन्दर अमित सुख की होन ॥ तीन सखियाँ देति झोंका पांच राग सुनाय । नित्य लै सावन में झूलत दनुज मनुज महीश । नितहि श्यामसखे झुलावैं आपु झूलैं ईश । ४८९ ॥

झँझौटी सुर हालिया ताल ॥

ए साहेब तुम किया पसारा । तेरी कुदरत वार न पारा ॥ तूँही रेज

मजूर कुमारा । जोग जुगुति से महल सवांरा ॥ खिरकी तीनो दसो दुआरा । तहँ तहँ बैठा ले रखवारा ॥ सप्तनी सेनीबीच तलावा । गुल हस्तादी बाग लगावा ॥ ऊपर वीना बजे सितारा । विरला है कोइ सुन ने हारा ॥ मुतासिल उसके अजब बहारा । बिनु बारिश के गिरे फुहारा । उस फौ- हारे आपु नहावै । वहां फिरिस्ते जाने न पावै ॥ सुधि मुद्रा जो ध्यान लगावै । साचा सतगुरु शब्द लखावै ॥ श्याम सखे हमकहँ लगि गावै । तेरी उलझन तूं सरुझावै ॥४९० ॥

ऐसा हेवतरी गति न्यारी। कैसेवर
निसके मुखचारी॥ सीकर एक पिंड
किये रचिके। सांचा ढारि ढारि मन
पचिके॥ वे विचार और हमादी। कल
कांटा सबलगे अनादी। थैली चौसठि
बत्तीसनारी॥ रंग रंगके तीनिकिनारी।
पखुरी हस्त कमल बिचसोहै॥ बिरले
दरवेशी कोइ जोहै। श्यामसखे यह
अकथ कहानी॥ मैंथोरे मेंकहाबखानी।
वंक नाल जो भेदै कोई। आपे आप
निरंजन होई॥ ४६१॥

झँझोटी ताल कौआली॥

आनंद रूपमें भूलाहै। निसुवासर

सोइ ध्यान रहतुहै रामसिया छवि मगन मस्ताबिच सुरपति को तृनसम करि मानत सदाफिरत मनफूलाहै ॥ कबहींगावतसकल रागिनीरागतालबंधानत्रिवट गतिगेहबिसारीदेहबिसारी सोइपियाअनकूलाहै।श्यामसखेजगजीतिलियो तिनके नाहिं फिरि फिरि आवना जाना लगत नाहिं भवशूला है॥ ४६२ ॥

देश रागिनी त्योरा ॥

रे मन रामको पहिंचान। बिनु राम के पहिंचानते लगिहैं विविध जमवान॥

तेरे संग दस औ पांच परिजन दुइ स-
वारीजान। खेवाखारिचा एकनाहीं दूरि
सफ़र ठेकान ॥ गयो शिशुपन जुवावी
त्यों भयो जठर पुरान। सुमिरु श्याम
सखे सिया वरधा निपट निर्वान ४९३॥

रेमन काहेको परत भवकूप। राम
रसायन कल्प लता तजि झूठ सहत
जगधूप ॥ जहं सतसंग राम चरचाहै
तासों रहत नितचूप। श्यामसखे क्यों
पियत न भाई राम सुधारसरूप ४९४॥

देश रागिनी ॥

चलुसखी आपनी घरमाहीं। अ-

गम चलना दूरिहै री जहां सभसखि जाहिं ॥ मूलचक्र संभारि त्रियदलवंकें नाल निगाहि । बैठि सुखमन पदुम आसन अष्टदलकी छांह ॥ बहुरि चलिय सिय अटापर जोग धरि धरि बांह । बैठ श्यामसखे निरंतरजापिए जानकी नाह ॥ ४८५ ॥

देश चंचरीक ॥

पियको नगर सुघर अमर करहु सखी बसेरो । गगनमंडल अनहदबोले दीननटेरो ॥ भरब अमियनिज करवर पियब पतिहेरो । पीयत होइब पिया

सोहागिनि रहब महल चेरो ॥ जहँनाहिं कोउश्यामसखे ससुर भसुरमेरो ४९६॥

खमाइच रागिनी झपताल ॥

भजसि किन राम सुख धामनि काम रे। नाम बिश्वास करि सतत वसु जाम रे॥ नेम नव प्रेम परतीत निबही सदा आदि कवि आदि हनु-मान भय राम रे। बहुत पछताय ध्रुव पाय पदवी परम टेक प्रहलाद कछु लाग नाहिं दाम रे॥ समुझ मन बाव रे समुझ धर भावरे तुहूँ जप नाम पावो गे बिश्राम रे। स्वल्प करु विषय

नहिं अंत दुःख होइ गो लेइगो छीनि व्रत नियम गुन ग्राम रे। श्यामसखे शरण सियराम करुणा भवन बिना रघुनाथ कलि ठहरन ठामरे॥४९७॥

चंचरीक छंद॥

सीतापति रामचंद्र सरनहौंतिहारे। सुनिसुनि उर बिरद बांकजाने सबजग त नाक आयो यह जानि दानि बड़ो देनि हारे। थक्यो कोटि करि समाधि सकल जिमि असाधि व्याधि स्वारथ बिनु सुरनर मुनि कोई नहींन्यारे॥ झूठे सबदिन बिताइ तीरथ ब्रत धाइ धाइ कामधेनु तरु बिहाइ अकवन

तरुधारे॥ मेरे एक रामनाम नाहिंन मोहिं जक्त काम बिसरे मतिश्यामसखे रामप्रान प्यारे॥ ४९८॥

रागिनीबिलावलधीमताल॥

रामसिया वर रसिकन के हितमुक्ति करन को अवधबने। परमातम की रूपसिया जू छबि सिंगार न पारगने॥ धरधर अधर धरा धर धारी धर्मधुरंधर शेशजने। श्यामसखे बसबो यहमांगे अवध पुरी के कुंजघने॥ ४९९॥

बिलावल रागिनी जलदताल॥

रामकहैं आनंदमई। असमहोत

सभरहत त्रिविधि दुख भवनिधि उतर ननावनई॥तजतदेहशिव राम षड़ाक्षर काशिमें उपदेशदई। श्यामसखे मुख उचरत निसुदिन भव गढ़को दल.जीतिलई॥ ५०० ॥

रागिनी विलावल ॥

आया तसीलदार कैसाकरिहौं। बोयेउ न धान खेत नाहिं जोतेउ कवने छलबल तेलरिहौं॥ हाल बकाया जैसा तैसा साल साल लेखापरिहौं। श्यामसखे जमजाल फसानेअबहूं चेतु सुमिरु हरिहो॥ ५०१ ॥

हे सखि पनघटवा नाहिं जैहों । ओहि पनिघटवां दुइसै कोश ॥ चलत चलत सिर लागी जैहैं ओश । ओहि पनघटवां दशरखवार ॥ नाहिं घरबन नाहिं केलिये केवार । जो पनिघट के जाने भेद । नौदश आठ आपुकरवेद ॥ बिनुशशि सूर्य जोति उजियार । श्यामसखे जन लेहु विचार ॥ ५०२ ॥

गगन घरवां कबदेखवों तमासा । रतन सिंहासन अजब बनाई ॥ दश पांच सखियां सगुन गीत गाई । तम गुन रहित न जगत सहाती ॥ दिव्यगुन जोति बरै दिनराती ॥ बिधि शिव मुनि

गन जोरि कर लेखा ॥ उरधरा राम सिय नयनन देखा । सत चितरूप अखंडित वेशा ॥ श्यामसखे तहँ अवध नरेशा ॥ ५०३ ॥

ठुमरी जोगिया जलदताल ॥

श्यामबिनु ना रहिहै तनचाम । यह तन चाम दाम नाहिं उपजे आवै नाहिं काहूकाम ॥ जो तनपाइ भक्ति नहिं लागे वृथा जियनि धनधाम । श्याम-सखे मोहिं आठ याम है राम सिया रटनाम ॥ ५०४ ॥

ठुमरी यकहराताल खिमटा ॥

बालमु रे तोरि कैसी यह रीती ।

गौना कराये घर नाहिं आये आंखि देखै की प्रीती ॥ काहूसे हँसन बोलन काहू से कहीं नैन कहुंचिती । श्याम सखे सैयां धनितोरी बतियां सांची सैयां तोरि प्रीती ॥ ५०५ ॥

ठुमरी ॥

सैयां हमारा लगावै नई बाजी । पांसा पांच धरे दशगोटी दावँ भुलावत करत अकाजी ॥ अनहद बंकनाल धरिपे सबजों हारब तौ होइजाब हाजी । श्याम अबतो जीत मीतके हाथे श्याम सखे हम तोरे संग राजी ॥ ५०६ ॥

सैयां हमारो के पठावै जात सारी। पांच सखी मिलि गइ जात सारी ॥ सारी पीसत पीसत भइ भिनु सारी ॥ हथरा टूट मोट है मकरा अट पट कील न रहत संभारी। श्यामसखे मोहिं नैहरा न भावै पिय संगे ससुरा में खेलब धमारी ॥ ५०७ ॥

सैयां संगे ससुरा में रहब पियारी। नैहरा के पांचो यार भये बैरी ॥ जो भी रहा सो ननँद बिगारी। छोड़ि दि-यो संग की पचीसो सखियां पिया पिया लागी है रटन हमारी ॥ श्याम-

सखे हम भइ हैं सुहागिनी फिरि नाहिं पिसब नैहर जत सारी ॥ ५०८ ॥

चढ़ियो न जाय मोसे सैयां की अटारिया। दश औ पांच थान का लहँगा बीस पांच लागे मोतिन कीनारिया ॥ बड़ी दूर पिया केर अट-रिया। कसकि कसकि उठे कमर हम-रिया। श्यामसखे जिय हुलसि हुलसि रहे रस बस सैयांजी से जोरि हों मैं यरिया ॥ ५०९ ॥

गुदरिया रे बाबा जी मोहिं दीन्ही। या गुदरी में लाल लगो है जौहर ने

ठगि लीन्ही ॥ जिन्ह के राम चरण आसा सो गुदरी यह चीन्ही । चौंसठ थैली बंद इगारह बत्तिस धागा सीनी ॥ आठौ कली कमल दल लागे कोर तीनि रंग भीनी । श्यामसखे-सैयांके मन भाई ओढ़ि के भई दुल-हीनी ॥ ५१० ॥

अटरिया कैसे के चढ़ि जाउं । तीनि महल को लाल अटरिया सैयां सेज लजाउं ॥ पांच सखी मेरे बैर परी हैं पांचे देखि डेराउं । श्यामसखे मैं तो बारी सुहागिनि ठाढ़ी भई पछिताउं ॥ ५११ ॥

त्रिवन रागिनी ताल पचरा धुनिका ॥

चरखवा कातै हमारी बलाय । बीस तीस की चरखी लागी खंभा रही अलगाय ॥ हम नहीं कातब कारी चरखवा बारी जौवन बलखाय । चन्द्र मुखी होइ लक्ष्मी कातिनि काली बीरा उठाय ॥ उलटा होइ के ब्रह्मा कातिनि शंकर कीन्ह सहाय । ब्याह भए पर गौना करावै सैयां से नैना लगाय ॥ श्यामसखे तब हमहूं कातब जब मोरी गांठ जुराय ॥ ५१२ ॥

चरखवा चाले नाहीं हमार । चले

ना चले डोलायें ना डोले खोले ना बोले विचार ॥ बारी ननँदिया टोना लगाके बैठी गावै मल्लार । गगन मन्दिर से आई सोहागिनि जहां फुली फुलवार । श्यामसखे अपने बालमुको पूजों नि-हारि निहारि ॥ ५१३ ॥

भैरवी रागिनी खिमटाताल ॥

सुधि आइगई सैयां सपनवांरे । बौरी सी फिरौं अँगनवांरे । दिन अँधिआर राति उजिआरी देवरा बोलावै भवनवांरे ॥ श्यामसखे रहे गगन मंदिर में काहे को कियो गवनवांरे ॥ ५१४ ॥

भैरवी ॥

मैंतोरेसंग राजी ननदोइया। सुनिये राजकुमार रसीले होगइ मोरि तोरि बाजी ॥ मोरे तोरे लगन लगीहै सांवल काकरिहै पतिपाजी। श्यामसखे सैयां बातबनीहैछोड़ि सकलजगलाजी ५१५

मेरी नैहर भईहै सपनवां। तीनि चारि मिलि भएहैं कहरिया एके रहिहै गोहनवां ॥ ससुरपिया नहीं बोलि पठावत हटकत ननँदी कहनवां। श्यामसखे नैहरा घरछूटल इहां नाहिं कोउ अपनवां ॥ ५१६ ॥

चलुसखि प्रागनि मज्जन कीन्हा। त्रिकुटी सरवर बहत त्रिवेनी पांच पचीस छोड़ि संगदीन्हा॥बिनु करसिर पगु नयन श्रवन मुख पियब अमीर सोहावन बीना। श्यामसखे सखी होब सोहागिनि करब रहस्य रस रहब नवीना॥ ५१७॥

बिनुजल बिनुथल बिनुकर भाई। सहित मूलतरु देहु लगाई। जो तियतन ते बाहर करि तरु बीछि बीछि पल्लव ते झहराई॥ कांचे कांच कली भल तोरब बकला एको रहन न पाई। तर करि ऊंच मूलकरि ऊपर साखा प्रति

बेलधराई ॥ श्यामसखेयह अलख बबुर को जुग जुग बीते करत सिंचाई ५१८॥

दीपकी रागिनी हलियाताल ॥

मोरि बिछिया हेरानी ससुरैया खेतवा। फुलवा लोढ़ै गैली मैं बाबाके बगैचवा राम गोंडवा लागीना मोरी बि०॥ सैयांके बगैचवा में घनिबबुरैया राम कटवाली गाना मोरी बि० । कौने रे जतनवा में चोलियां सिओली राम टोनवांलागी ना मोरी बि०॥ श्यामसखे कैसे चलौं पैयांरे पिरैलगीं रामबतियां लागी ना मोरी बिछियां हेरानी ससुरैयां खेतवां ॥ ५१९ ॥

मोरीझुलनी हेरानी जात सारिया घर-वां । सातपांच मिलिचलीं अमर मडैया रामभिकवालागीं नामोरी भुलनी । मैंतोबारी भोरी मोरी अलप जवानी रामछतियां लागी नामोरी भुलनी । श्यामसखे सैयां संगरतियां बितौलीं राम घघरांलागी नामोरी भुलनी हेरानी जात सारिया घरवां ॥ ५२० ॥

देशरागिनी ॥

सीताराम कहत मुखमनते सुखते सनेह बहु सम्पति पावै । जियसों प्रेम नेम जबआवै ॥ कामक्रोध मदलोभ

दूरिकरि हरिचरनन चितलावै। श्यामसखे मनगहत चहत नहिंएकौ फंद छोड़ावै ॥ ५२१ ॥

आसावरी बिलावल जलद ताल ॥

सीता राम बिसारि के जग चाहत कल्याना। बिषयाशक्त जहाज में निसुदिन लपटाना॥ कृपा पवन नहीं देखिए करु आर भुलाना। करम तु-खानित माजि रहे पुनि मोर परवाना॥ देखत पेखतनीक है फिरि अंतम-लाना। कली करनी भल सार है नाहिं बचन प्रमाना॥ श्यामसखे क्या कहि सके हम हूँ नाहिं जाना ॥ ५२२॥

पीलूजलदताल ॥

सुन्दर आजु घड़ीरे । गोरीगौना बनिहै चतुरंग चुड़ासारी सरहजको दसलरीरे ॥ तीनकहार पेटार परोसि-नि समाधिन को बिसरीरे । श्यामसखे कजरौटा कसौटी मोतिन से मांग भरीरे ॥ ५२३ ॥

घर सौंपे बहुरिया नैहर नीकरही रे । खेलत फिरत रहीगलियन में सोसब बात गईरे ॥ छुटिगये श्यामसखे मोरे गोइयां एकअंदेशायहीरे ॥ ५२४ ॥

जतीताल बिहाग ॥

हे हरि कबधौं चरन मन लागि जैहैं।

श्यामसखे जमत्राश देखावत कब उर भवभै भागि जैहैं ॥ ५२५ ॥

पद चरन चिन्ह ठुमरी झँझौटी जलदताल ॥

रामचरन संतन सुखदायक करिले ध्यान संभारी। जो पदरेख शेख श्रुति गावैं ब्रह्मा ध्यान लगावैंरी॥ बालमीक सुक पवन तनय नित निज उर मांह बसावैं। अजहूं शिव उरधारी॥ स्वास्तिक अष्ट कोनरथ सुरतरु अम्बर बरउर्द्ध रेखा। हल मूसल अहि गोपद घटमाहि जव षटकोन विशेषा। लक्ष्मी आदि कुमारी॥ ध्वजा त्रिवल त्रैकोन

मीन धनुगदा विंदुपविराजै । कमल जीव दरतून बांसुरी बीना अनहद बाजै । सरयू सकति संभारी ॥ सुधा कुंडशशि छीन पूरविधुहंस चंद्रिका सोहै । विंजन दंड जंबु फलमाला मुकुट क्षत्र मनिमोहै ॥ सिंहासन रतनारी । पुरुष चक्र अरुचौर पताका अंकुश ललित प्रकाशा । श्यामसखे जो गावत ध्यावत परतनहीं भवफांसा ॥ ५२६ ॥

दंडकअहीरी बिलावल झपताल ॥

जगजीवनं जैति गुणप्रयंम् । शीव सर्वेश्वरं देव ब्रह्मेश्वरं जोगजोगेश्वरं

बेदगेयम् ॥ देव जदपि रतिभारती स्वक्ष बिरजु मदनगिरि सदन सिंगार मथिस्वकर रेखा। तपि गिरिजाधरं तूलनाहिं तवसदृश किंतुछीराब्धि तन-यापिलेखा देवकोटि परमेष्ठि समसृजत कोटिन बिष्णु सदृश पालन करन धरन धरता॥ कोटिकाली सदृश करन संहार बलकोट रतिनाथ समबपुसु धरता। देवसत्य शिर बदन भूचरन कच्छप शिराशि अंड रोमावली दैवके शंभु ॥ चंद्र सूर्य्याग्नि त्रैनेत्र त्रिगुना-त्मकं नौमिहर ब्रह्म बैराट वेशम्। देव बिलशउद्वाह भूषणन बसन शिवासह

धाम हिमिभूप मंडप सुगानं ॥ मनहुँ अमरावती तुरीयवपु सहित विधुतड़ित घन गिरिशगिरि शोभमानं । देव सची वागेश्वरी उदधि तनया तथा परसपर हास दृगखेल नेयम् ॥ श्यामसखा सदा शिवपार्वती वदनरह गौरीशंकर सदा ध्यान धेयम् ॥ ५२७ ॥

जोगिया रागिनी जलदताल ॥

आदि सनातन दिनमनिनाथा । सुर समूह सोहत तव साथा ॥ रथ आरूढ़ सप्तसित सुंदर । क्रीट मुकुट सुन्दर सुखमाकर ॥ त्रिगुणहि त्रिगुण सहित

सदाके । खेदन छेदन राहु निसाके ॥ बिन दिनमनि अज्ञान हरेको । श्याम सखेसम आस करेको ॥ ५२८ ॥

ताल तेवरा सुरशंकर ॥

भजु दीनबंधुदयाल दिनकर तेज पुंज दिवाकरं । अज्ञानघनमन त्रिमिर त्राशक शंख चक्र गदाधरं ॥ सुरअसुर सेवत संकटनि रुज दाता अज तनुं । अभिलाष श्यामसखे मनसि बसि करहु पूरन फल घनं ॥ ५२९ ॥

परजताल जलद ॥

रटत कसनाहीं रघुरैयारे । रघुवर

लक्ष्मी भरत शत्रुहन सुंदर चारो भैयारे ॥ जनकनंदिनी को सुमिरन करो और अंजनी जैयारे। श्यामसखे यह बात अनूठी जो तुम यह चित लैयारे ॥ ५३० ॥

हमारे प्रभु औगुन कोटि बिसारिहैं। कोटिन अधम सिंधुइव गोपद तरिगये तरिते तरिहैं ॥ दशनासिका कनीय कपट मुनि नर अद आदिक अरिहैं। किये तूलनिज समसब भूलेसा विशेषि मन परिहैं ॥ निरवधि कलुष निलज्ज लोल पीतनरुह प्रति प्रति भरिहैं। सो विसमितामित समाहितहेरहु नूपुरजिमि

पग करिहैं॥ पांडव जेठ भ्रात पितु चहुँ जुग हरि दृग सुतडर डरिहैं। श्यामसखं विश्वास अधिक उर ढरनि आपनी ढरिहैं ॥ ५३१ ॥

हमारे प्रभु औगुण उर न धरो। तौ विधि वर्ष कोटि यह पावर उबरत नहीं उबारे॥ प्रतिमां दश अपमान महा किये तूल नाशिका डारे। तनक न सुरति करी सुर स्वामी भव निधि पार उतारे॥ पादप मूल आप जन ऊपर अतिसै हर्षहियारे। समर कठोर हृदय अति कोमल देखेउं प्रभु अस नारे॥ सुकृत सरूप बीर तुम बां-

के हम खल अघ सरदारे । जौं अघ सहित लड़ै प्रभु तुम से हम जीतैं तुम हारे ॥ अब तो युद्ध लगी प्रभु तुम से बिगरै बनै विचारे । श्यामसखे विश्वास बसी है बांकी विरद तेहारे ॥ ५३२ ॥

गौरी जलद ताल ॥

अवधकी पटतर कौन करै । कारण गिरिजा हर मुख हेरत गोपुर ध्यान धरे ॥ नित वैकुंठ लिए जल ठाढ़े सुर पुर चौंर ढरे । अवध पुरी की अजिर सिंचाई पय निधि करि डगरे ॥ श्यामसखे ते जीव महा जड़ जे हरि पुर बिसरे ॥ ५३३ ॥

ख्याल परज के ताल धीमं ॥

हरत दुख द्वंद करत श्रवने। त्रिविधि ताप भव दाप महा घन हरि कीरति पवने ॥ अधम अपावन मंद मलिन मति अजामील जमने । सकृत उचारत गयो परम पद महिमा भइ अवने ॥ नाम सुधा कर राखि हृदयमहँ सुमिरत सिर नवने । श्यामसखे रघुनाथ कथा सुनि को को नाहिं गवने ॥ ५३४ ॥

राग मारू ॥

भज मन श्यामसखे हित कारी । जाके तन करुना रस छाजे दीन दीनता हारी ॥ दानी दयाल पतित दायक हैं

कीरति जग उजियारी । सिया राम पद कमल निरंतर मन अलि करि जिन्ह वारी ॥ सीताराम सुजश नित गावत नव प्रबंध करि प्यारी । रामचन्द्र सरणागत आयों राखहु लाज हमारी ॥ ५३५ ॥

खिमटा ॥

देखिजनिभूलो सुमिरि भगवनवां । पहिलेमीठा होत विषय मनपाछे खार लगत सुखछनवां ॥ सुत बितनेह गेहरसमातेसूझैनःहींमगनपारिजनवां । श्यामसखे तब याद परेगी कूटैगो पाकःरि जमघन वां ॥ ५३६ ॥

सोरठरागिनी झपताल॥

दौरे मनक्यों भटकै दम्मदम्म। धगजीवन कौ मानत हम्महम्म॥ सुतबितगेहनेह रसमाते त्रास न करत कठिन जम्मजम्म। बचिहै तब भवनागिनि केडर जब निज विषै करहि कम्मकम्म॥ श्यामसखे भवपार उतरिहौ जब जपिहै सियपति रम्म रम्म॥ ५३७॥

हमीर रागिनी झपताल।

कबहूं सिय स्वामिनी मोरी सुधि करोगे। जौन सुधि अग्र अलि तुलसी हरिया किये महल कीट हलपै परम सुख भरहुगे॥ कृपारूप रामचरण

मीरा किये और जे रसिक भये बहुरि बिस्तरहुगे । पांव धरि भाव भरि नेह करि गेह बिच श्यामसखे बिसरि जाइ सोइ ढरहुगे॥ ५३८ ॥

जगतपालन पातु रघुबीरस्वामी। निर्गुनानी हौ छेम धामी सहज समशील सरदार समरथ सुखद त्राहि सीते शत्रु तिबिदित नासी। कंजदल लोचन भक्त भय मोचन केशव क्लेश तम तरनि भासा॥ शांति सिंगार वतसल्य करुणादि रस प्रगट किये रसिक हित जग बिलासा। रामसिय नाम अति अमल अमृतोपय जपत तन अमर ए कान

पीरा। शुद्ध शशि कोटि लावण्य आन-
न्द घन अचल कृतमनशि पश्यंति
धीरा। अलख वाद को क्या लखै
मूढ़मन बावरे रखत नाहिं सगुन छबि
भेदराखी । धरे अविवेक वकवाद
सवसन करत फिरत भ्रमजाल कहि
कल्पीसाखी बालपन ख्याल तरुनाई
रसहाल में जठर जर्जर अब ताहिनाथ
पालौतौ विरद तिहारौ है। श्यामसखे
अरज करत गरज है तिहारे पद ताहि
नाथ सुनौ जौन बिनती हमारीहै ५३६॥

सोरठ रागिनी के ठुमरीताल हालिया ॥

क्योंरे मन हरि हेरत ना। अपने

१८७६।

चितको केस फेरतना ॥ जिन्ह दीन्ही यह निर्मल काया आठजाम जठरेतन ना। ताहि बिसारि बलापन भूले विषय गोठको घेरतना। घेरत माया के रस कामिनि संतनको पग घेरतना ॥ श्याम सखे तोहिं देत सिखावन राम नाम रस टेरतना ॥ ५४० ॥

भैरवीरागिनी खिमटा ताल ॥

सैयाँ भेजिदियो डोलि कहरिया रे। अपनी बोलाये नगरियारे ॥ सात पांच नौ खिरकी लगी हैं दुइ यकडोलै बयरिया रे। श्यामसखे लै गरलपटावै अपना कोई घरहरियारे ॥ ५४१ ॥